संकेत
संकेत से से बनी
एक कामेडी फ़िल्म
की कहानी
–ओम कुमार

ebook

–ओम कुमार

Om Kumar
S-2/19, 1st Floor,
Old Mahavir Nagar,
New Delhi-110018
M. 98111 66943

Rakesh Arora
S-2/19, 1st Floor,
Old Mahavir Nagar,
New Delhi-110018
M. 97111 06857

समर्पणः मेरे माता जी व पिता जी-

श्री बांके लाल फोटोग्राफर एवं श्रीमती पुष्पा देवी (फ़िरोज़पुर, पंजाब)
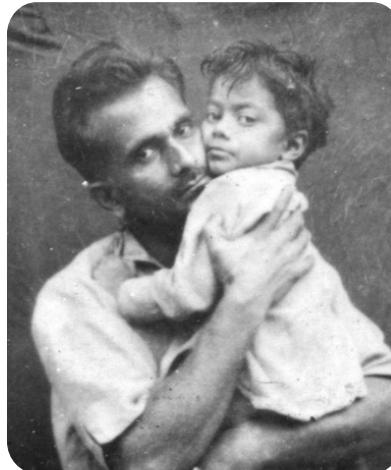
माता पिता के वात्सल्य को समर्पित!

-ओम कुमार
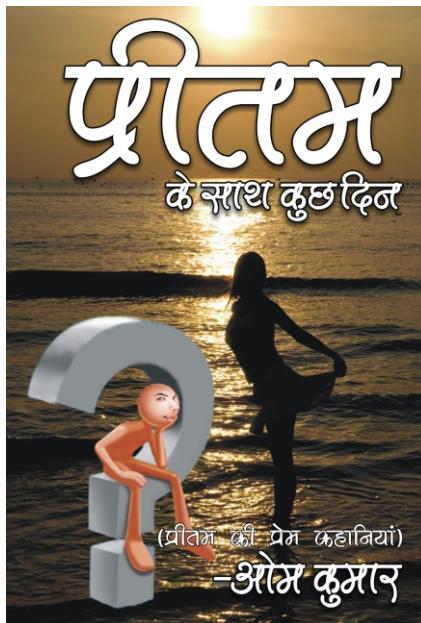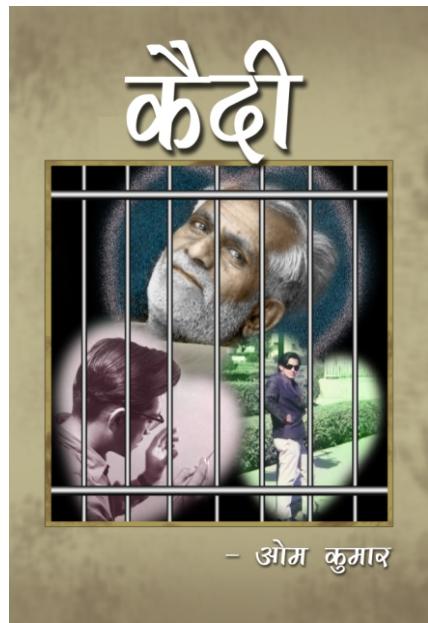
कहते हैं-
प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है!

प्यार हो जाए या किसी कारण वश किया जाए, या करना पड़ जाए, आपस की बातें सार्वजनिक नहीं की जा सकतीं, इस लिए संचार व्यवस्था में संकेतों का विशेष स्थान रहता है!

प्यार के संकेत अति सूक्षम प्रकृति के होते हैं, ज़्यादा बातें तो आंखों आंखों में ही हो जाती हैं, यदि दोनों पक्ष (प्रेमी प्रेमिका अथवा वादी प्रतिवादी) आमने सामने न हों और आंखों का मिलना सम्भव न हो तो संकेत और भी सूक्षम हो जाते हैं।

ऐसे ही कुछ संकेत जवानी के दिनों में दोस्तों ने प्यार करने के प्रयास में प्रयोग किए थे, उनके प्यार के किस्से और वह संकेत याद आए तो हंसी आती है, उन किस्सों को एक लड़ी में पिरो लिया तो यह हास्य कथा बन गई!

यह कहानी मैंने में इस उद्देष्य से लिखी है कि मौका मिला तो इस कहानी की फिल्म बनाने का प्रयत्न करूंगा।

-ओम कुमार

पात्र परिचय

ओके- (फ़ोटोग्राफर) एक ज़िम्मेवार लड़का
बी एल- ओके का पिता
पुष्पा देवी- ओके की माता
दीपक- ओके का दोस्त, जिसे लड़की पटाने की चुनौती दी
शिखा- दीपक का सैक्स एडवैंचर
गुड़िया- पटाने के लिए चुनी गई लड़की
रामसरूप- दीपक का पिता
सीता- दीपक की माता
दीपी- दीपक की छोटी बहन
कुलदीप- ओके का दोस्त, झक्की पत्रकार
अमर- ओके का दोस्त, अगरबत्ती उत्पादक का बेटा
सुहास- ओके का दोस्त, (बिल्लौरी) कर्नल बनने की तमन्ना
विक्टर- ओके का दोस्त, शाहरुख खान का फैन
जगदीप- ओके का दोस्त, सीधा सादा, हलवाई का बेटा
काका- ओके का दोस्त, (चाइनीज) शरारती लड़का
रवि- ओके का दोस्त, (वुडन फेस) पीजी स्टूडैंट
विमला- रवि की प्रेमिका
रमेश- गुड़िया का बाप
सुरेश- गुड़िया का भाई
रामसरूप- दीपक के पापा
सीता- दीपक की ममी
दीपी- दीपक की बहन
तनेजा- बेकरी वाला
गुलाटी- होटल वाला (एडवाइज़र)
वीना- पकौड़े खाने वाली लड़की
खुराना- एक प्राइवेट स्कूल चलाने वाला अध्यापक

नारी' पुरुष के लिए प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ उपहार है।
इस 'उपहार' का सम्मान करना पुरुष का कर्तव्य है।

सम्मान से प्रेम उत्पन्न होता है।
– एक तथ्य!

लड़कियों को छेंड़ने से आप उनके प्यार के नहीं, नफ़रत के पात्र बनते हैं, उनका प्यार पाना है तो उनका सम्मान करो!
– प्रियंका चोपड़ा

प्रेम सम्मान से उत्पन्न होता है, स्वंय को इतना सम्माननीय बनाओ कि दूसरों को बरबस ही तुम से प्यार हो जाए!
– ओम कुमार

संकेत

20.7.12, शुक्रवार 11 बजे

शाहरुख खान के स्टाइल को कापी करने वाला, खुद को उसका डुप्लीकेट कापी समझने वाला दुबला पतला, जींस और टी शर्ट पहने, विक्टर, शाहरुख खान की किसी फिल्म का गाना गुमगुनाता हुआ अपने आप में मग्न घर से निकला और इस नशीली कल्पना में खोया हुआ कि उसके जलवे बाज़ार में हर लड़की पर रोंमांटिक जादुई असर डाल रहे हैं, शाहरुख खान के स्टाइल में चलता हुआ नंद लाल हलवाई की दुकान पर पहुंचा और अपने बाल सहलाते हुए उसे आर्डर दिया

– एक गिलास लस्सी, मक्खन मलाई मार के....

और खड़ा हो के बाज़ार में आती जाती लड़कियों को प्रभावित करने के लिए शाहरुख खान के पोज़ बनाने लगा।

उससे पहले वहां एक ऊंचे कद का देहाती सरदार खड़ा अपने आर्डर का इंतज़ार कर रहा था, वह विक्टर को अजीब अजीब पोज़ बनाते देख कर बड़ा हैरान हुआ, और पंजाबी में उससे पूछने लगा

– ओए! तैनूं की होया है? कोई तकलीफ़ है?

विक्टर ने अपनी ही हवा में खोए हुए जवाब दिया।

विक्टर– यह मेरा स्टाइल है, सरदार जी....

सरदार– ऐह केहड़ा स्टाइल है? की है? इंज लगदा है, तैनूं मिर्गी पैण लगी है!

विक्टर– ओए, सरदार जी, यह मॉड स्टाइल है, आप को समझ नहीं आएगा!

विक्टर ने उसी हवा में उड़ते हुए जवाब दिया। एक लड़की गुज़रती दिखाई दी, विक्टर ने उसको दिखाने के लिए एक पोज़ और बनाया। सरदार ने उसे देखा तो कहने लगा

सरदार– भूतनी दे कांगड़ी! कुड़ी पर टशन चला रिया है!

विक्टर– ओए सरदार जी... आप गाली क्यों दे रहे हो?

विक्टर ने एतराज़ किया!

सरदार– भैन्सचोर....!, कुड़ियों को अपनी पैंसल वरगियां टंगां हिला हिला के क्यों दिखा रिहा है?, बेशर्म कांगड़ी?, भैन्सचोर....!

विक्टर– ओए सरदार जी, आप गाली क्यों दे रहे हो?

सरदार– ओए ओए क्या कर रिहा है, भैन्सचोर....!

सरदार को गुस्सा आने लगा। वह थोड़ा आगे बढ़ा...

विक्टर– ओए सरदार जी, आप गाली क्यों दे रहे हो?

विक्टर ने पीछे हटते हुए नाराज़गी दिखाई! सरदार को और गुस्सा चढ़ गया, वह थोड़ा और आगे आया

सरदार– ओए किस को बोल रिहा है? तेरी भैंस की टांग, इक पड़ गई तां सारे टशन निकल जाणगे! भैन्सचोर....!

विक्टर– ओए सरदार जी, मैं ने आप को क्या कहा है?

विक्टर और पीछे खिसका! सरदार गुस्से में हाथ उठा कर आगे बढ़ा

सरदार– फिर ओए कह रहा है! तेरी भैन्स दी टांग, भैन्सचोर! क्या ओए ओए कर रिहा है, भैन्सचोर! बात करने की तमीज़ नहीं है, भैन्सचोर, कांगड़ी, सुक्कड़, सिंगल पसली का ढांचा! भैन्स चोर....

विक्टर घबरा के और पीछे खिसका

विक्टर– ओए सरदार जी, गाली क्यों दे रहे हो?''

सरदार– तेरी भैंस दी टांग...

विक्टर– ओए सरदार जी...

सरदार– तेरी भैंस दी घास में बांस

विक्टर– ओए सरदार जी...

सरदार– तेरी भैंस की नाक में डंडा, भैन्सचोर!

विक्टर डर गया, ऐसे लगा जैसे वह भागने की सोच रहा हो, उसने इधर उधर देखा फिर दोनों हाथ ज़मीन पर रख कर चौपाया बन गया और कुत्ते की तरह मुंह उठा कर सरदार पर भौंका

– भौं भौं, भौं भौं...

सरदार– तेरी भैंस दी टांग

विक्टर भौंका

– भौं भौं, भौं भौं...
सरदार– तेरी मां की.....
विक्टर– भौं भौं, भौं भौं...
सरदार– तेरी भैन की.....
विक्टर– भौं भौं, भौं भौं...
सरदार– तेरी मां दी.....
विक्टर– भौं भौं, भौं भौं...

सरदार उसे गाली देता और विक्टर कुत्ते की तरह उस पर भौंक देता, थोड़ी देर यही होता रहा, भीड़ इकट्ठी हो गई, सब यह तमाशा देख देख कर हंसने लगे, सरदार की हालत पतली होने लगी, अंत में सरदार हार गया और – भैंस चोर...., गल करो तां कुत्ते तरां भौंकदा है, कुत्तें दा पुत्तर... भैंस चोर ....

गालियां देता हुआ वहां से चला गया, हलवाई हाथ में गिलास लिए पीछे से उसे आवाज़ें देता रहा

– सरदारजी, आपजी का दूध.....
सरदार– तेरे दुध की भैसं दी..... , अपणा दुध आप पी लै, भैसंचोर....!

विक्टर उस पर कुत्ते की तरह भौंकता रहा, सरदार कुढ़ता, गालियां बकता हुआ चला गया, उसके जाने के बाद विक्टर कपड़े झाड़ कर खड़ा हुआ और चौड़ा कर कहने लगा

– विक्टर से पंगा लेना मज़ाक नहीं है, विक्टर बड़ी कुत्ती चीज़ है! कुत्ते ने बब्बर शेर भगा दिया! बब्बर शेर चला था विक्टर से टकराने...! (फिर हलवाई से) लाओ दो मेरी लस्सी!

और विक्टर भीड़ के सामने चौड़ा हो कर एक विजेता की तरह लस्सी पीते हुए अपनी जीत का जशन मनाने लगा! सब लोग हंसते हुए एक एक करके चले गए।

कुलदीप अपने हाथ में मोबाइल लिए यह सब देख रहा था, कुलदीप एक झक्की युवक था जिसके दिमाग़ पर पत्रकार बनने का भूत सवार था, वह एक अख़बार छापने की फ़िराक में था, और अपने अख़बार के

लिए सनसनी खे़ज़ ख़बरें और फ़ोटो ढूंडता रहता था, जहां मौका मिलता अपने मोबाइल से फ़ोटो शूट करता रहता था, उसने विक्टर और सरदार के झगड़े की कई शॉट लिए!

विक्टर ने लस्सी खत्म की और अपने दोस्त 'ओके' के पास 'ओके स्टूडियो' पर आया। कुलदीप भी उसके साथ साथ ओके की दुकान पर आ गया, ओके उस वक्त किसी गाहक को उसकी फोटो के प्रिंट दिखा रहा था, विक्टर ने अपनी ही धुन में खोए हुए ओके के सामने से एक प्रिंट उठाया देखते ही और बिना सोचे बोला

– ओए, यह भैन्सचोर....! अभी मरा नहीं?

ओके ने उसे टोका

– ओए! क्या बकवास कर रहा है बे! देख भाई साहब तेरे पास खड़े हैं!

विक्टर घबरा गया

– अरे भाई साहब! माफ़ करना, सॉरी, सॉरी, सॉरी... ! मैं तो मज़ाक कर रहा था, सॉरी... (और उससे हाथ मिलाने लगा) याद है, जब ओके आप की फोटो शूट करने आया था, मैं भी इसके साथ आप के पास आया था, नमस्ते... मैं अभी आया...

कहते कहते विक्टर वहां से खिसक गया! ओके ने गाहक से माफ़ी मांगी– सॉरी भाई साहब, मेरा दोस्त कभी कभी अजीब अजीब हरकतें करने लगता है। वह एक्चुअली मुझसे मज़ाक कर रहा था, उसकी तरफ़ से मैं माफ़ी मांगता हूं!

गाहक अपना काम ले के गया। ओके डस्टर ले कर शीशे साफ़ करने लगा। उनके जाने के कुलदीप ओके से कहने लगा

– अभी अभी एक सनसनी खे़ज़ खबर की लाइव कवरेज की है,

और उसने ओके को विक्टर और सरदार के झगड़े की शूट की हुई फोटो दिखाई, ओके विक्टर को कुत्ता बना देख कर हैरान हुआ, उसने पूछा – इसे क्या हुआ?

कुलदीप ने उसे पूरा किस्सा सुनाया और ओके को अपना कार्ड दिया

– मैं वीकली न्यूज़ पेपर पब्लिकेशन शुरु कर रहा हूं, 'सिटी न्यूज़', अपनी दुकान का एड मेरे न्यूज़ पेपर में ज़रूर दीजिएगा।

ओके– आप शुरु कीजिए, हम आपके साथ हैं!

कुलदीप– प्राइस सिर्फ दस रुपए पर मंथ! दस रुपए दीजिए मैं हर शनिवार आपको पेपर दे जाया करूंगा।

ओके– आप खुद आएंगे?

कुलदीप– खुद ही आना पड़ेगा, रत्न टाटा की तरह सिंगल मैन शो हूं, खुद ही सारे काम करता हूं। न्यूज़ कलैक्शन, रिपोर्टिंग, एडिटिंग, प्रिंटिगं, डिस्ट्रीब्यूशन, सर्कुलेशन सब खुद ही करता हूं! इससे बड़ा फायदा है, सब से दोस्ती हो जाती है और कोई फालतू खर्चा भी नहीं होता। जो कमाया, सब अपना!

ओके– तो यह लीजिए दस रुपए, अखबार के लिए नहीं, आपकी दोस्ती के लिए! अब शनिवार को मुलाकात होगी?

कुलदीप– श्योर! न्यूज़ पेपर के साथ!

ओके– अब चाय पी के जाना! (और ओके ने उसके लिए चाय का आर्डर दिया) आप पहले क्या काम करते थे?

कुलदीप– बच्चे पढ़ाता था!

ओके– कहां 'बच्चे पढ़ाना' और कहां 'पत्रकारी'?

कुलदीप– बच्चे पढ़ाने में बातें बनानी पड़ती हैं, मैं ने अनुभव किया मैं बातें बना सकता हूं तो सोचा इस प्रतिभा का प्रयोग 'पत्रकारी' में करूं!

ओके– बातें बनाने की कला उपयोग राजनीति में किया जाता है, 'पत्रकारी' में क्या उपयोग है?

कुलदीप– 'पत्रकारी' में न्यूज़ बनानी होती है, और न्यूज़ बनाना एक कला है।

ओके– मतलब, झूठ बोलना? झूठी न्यूज़?

कुलदीप– नहीं, न झूठ बोलना, न झूठी न्यूज़! वास्तविकता के वर्णन को ऐसेशब्दों में पिरोना जिनसे एक नीरस घटना

का वर्णन एक मनोरंजक सूचना बन जाए!

ओके– आपने ध्यानाकर्षण करवा दिया है, अब आपकी न्यूज़ बनाने की कला देखते हैं,

कुलदीप उठ कर चला गया। ओके अपने कम्पयूटर पर काम करने लगा!

'ओके' पूरा नाम ओंकार! एक ग़रीब पुराने ज़माने के फ़ोटोग्राफ़र का इकलोता बेटा, सिर्फ़ पांचवी क्लास तक पढ़ने के बाद ग़रीबी ने स्कूल छुड़वा दिया, दुकान पर पिता के साथ बैठने लगा, पढ़ने का शौक था सो प्राइवेट कोचिंग से मिडल स्टैंडर्ड तक पढ़ लिया! अठारह की उमर होने पर अपने लिए एक अलग दुकान बना ली! दो दुकानें हो जाने से घर की आर्थिक स्थिति भी कुछ अच्छी हो गई!

ओके ने कहानियां पढ़ते हुए इंग्लिश पढ़ने लिखने और बोलने की प्रैक्टिस की, और खुद को कालिज स्टॅडैंट्स के साथ बैठने लायक बना लिया! कई स्टूडैंट्स के साथ उसकी दोस्ती हो गई, और दुकादार होने के कारण रोज़ का मिलना जुलना हो गया! सब के साथ घुलमिल जाने की प्रकृति होने के कारण ओके सारे मित्र–मंडली का फ़ेवरिट बन गया! मित्र–मंडली में होने वाली हर एक्टिविटी का केंद्र ओके का 'ओके स्टूडियो' बन गया! रोज़ अपराहन तीन बजे ओके स्टूडियो पर मित्र–मंडली की मीटिंग होने का नियम बन गया! रविवार की छुट्टी, स्टूडियो की भी और मीटिंग की भी!

शनिवार 11 बजे कुलदीप ओके स्टूडियो पर आया, और विज़िटर सीट पर बैठ कर अपने हाथ में पकड़े अख़बार में कुछ पढ़ने लगा, उसी वक्त ओके की मित्र–मंडली का एक मेंम्बर 'सुहास' आया उसने आव देख न ताव बिना कुलदीप को देखे ओके को अपना अनुभव सुनाने लगा

– कल सुबह मेरा हाथ एक लड़की के हाथ से छू गया, उसके बाद कल सारा दिन नशे में गुज़रा!

ओके– सिर्फ छूने से नशा हो गया?

सुहास– सब को होता है, सुंदर लड़की नज़र आ जाए तो 'एक घंटा अच्छा गुज़र जाता है', उससे आंख मिल जाए तो

'तीन घंटे अच्छे गुज़र जाते हैं', हाथ से हाथ छू जाए तो 'सारा दिन अच्छा गुज़रता है।', बात हो जाए तो 'एक सप्ताह अच्छा गुज़र जाता है।', किस मिल जाए तो 'महीना भर मज़ा आता रहेगा।' इससे आगे की कल्पना नहीं कर सकता, क्यों कि इससे आगे कुछ होने की कोई संभावना ही नज़र नहीं आती!

ओके– और कोई काम है?

सुहास– नहीं!

ओके– इतनी सी बात थी तो मीटिंग में बता देते!

सुहास– इधर से गुज़र रहा था!

और वह चला गया! ओके कुलदीप की ओर आकर्शित हुआ, तभी एक लड़का चाय देने आया, ओके ने उसे एक और चाय लाने का इशारा, किया और अपना कप कुलदीप को ऑफर कर दिया और उससे बात करने लगा

ओके– न्यूज़ पेपर कब शुरु हो रहा है?

कुलदीप– कल शाम को पहली इशू देने आउंगा।

ओके– आप को न्यूज़ पेपर शुरु करने का ख़्याल क्यों आया?

कुलदीप– ओके जी, हर आदमी मूल रूप से 'पत्रकार' होता है! या कहें 'चुग़ल ख़ोर' होता है!

ओके– वह कैसे?

कुलदीप– आदमी की नेचर है, दूसरों की बुराइयां ढूंडना, और उसकी चर्चा करना, वह भी पीठ पीछे! और अपने अंदर पैदा हुई बातें दूसरों को बताना! क्योंकि किसी के पेट बात पचती नहीं!

ओके– यह श्राप तो किसी ने औरतों को दिया था।

कुलदीप– लेकिन यह वरदान तो सभी को मिला है। सभी सुबह उठ कर अख़बार इसी लिए तो पढ़ते हैं! किसने मर्डर किया? किसने चोरी की? उसने क्या किया? बगैरह वगैरह! सभी दुनिया में हुई बुराइयां ढूंडते हैं, ताकि सारा दिन दूसरों से चर्चा कर सकें! अख़बार छापने वाले तो

पत्रकार और चुग़लखोर होते ही हैं, पढ़ने वाले भी पत्रकार और चुग़लखोर होते हैं, हम चुग़लखोर हैं, सब पत्रकार हैं!

ओके- आपका मतलब है, मैं भी 'चुग़ल खोर' हूं?

कुलदीप- अच्छा सम्बोधन प्रयोग करें तो 'पत्रकार', सच बोलें तो 'चुग़ल ख़ोर', लेकिन सच्चाई लाल मिर्च का दूसरा नाम है! आप आत्म विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे आप भी हैं!

ओके- मैं चुग़ल खोर नहीं हूं, मैं इधर की बात उधर नहीं करता।

कुलदीप- इम्पॉसिबल!

ओके- कैसे?

कुलदीप- आप ने मुझे अपना दोस्त बनाया है यह बात आप छिपाएंगे या दोस्तों को बताएंगे!

ओके- छिपाएंगे क्यों? ज़रूर बताएंगे!

कुलदीप- मेरे सामने भी बताएंगे और पीठ पीछे भी! आप 'पत्रकार' भी हैं और चुग़लखोर भी!

ओके- आप ने तो कुछ का कुछ बना दिया!

कुलदीप- अच्छे सम्बोधन में यह 'अच्छे पत्रकार' की पहचान है! और लाल मिर्च की कैटेगरी में 'बुरी चुग़ल खोरी' है!

ओके- ओ माई गॉड! यह तो रैपुटेशन ख़राब होने का ख़तरा पैदा हो गया!

कुलदीप- क्यों?

ओके- 'चुग़लख़ोर' कहलाएं या 'पत्रकार', दोनों बदनाम होते हैं!

कुलदीप- 'पत्रकार' कैसे बदनाम होते हैं?

ओके- कहते हैं, वह 'पत्रकार' क्या जो जेल न गया हो!

कुलदीप- वह तो है, मामला लाल मिर्ची लगाने वाले सच का है, किसी को लाल मिर्ची लगेगी तो वह भी कुछ करेगा! बड़े बड़े नेताओं को भी जेल जाना पड़ता है।

ओके- कौन से नेताओं की बात कर रहे हैं आप?

कुलदीप- आजकल के विधायक वगैरह...

ओके– इसका मतलब है आप भी वहीं तक पहुंचने का रास्ता बना रहे हैं!

कुलदीप– फॉर द टाइम बीइंग पब्लिक सर्विस शुरु कर रहा हूं, और कुछ नहीं। अब चलता हूं! थैंक्यू फ़ार टी!

ओके– बॉय!

मित्र–मंडली के एक और मेम्बर अमर ने बाज़ार से गुज़रते हुए ओके को कुलदीप से बातें करते देखा तो अंदर आ गया, और कुलदीप बॉय का इशारा करता हुआ गया!

अमर– कौन है यह?

ओके– नई इन्ट्रोडक्शन, 'कुलदीप'! खिसका हुआ इंटलैक्चुअल है, अखबार निकालने की सोच रहा है।

अमर– मित्र–मंडली का नया मेंबर?

ओके– शायद बन जाए, निठल्लों में इन्टलैक्चुअल! कानों में अंधा!

अमर– अबे उल्टा बोल रहा है। अंधों में काना होता है!

ओके– इंटलैक्चुअल तुम से ज़्यादा पागल होते हैं!

अमर– तुम पागल, तुम्हारे दोस्त पागल...

ओके– एग्रीड! अब जाओ मैं ने काम करना है!

वह गया।

मंगलवार 10 बजे सुबह ओके दुकान की सफाई करने के बाद धूप जला रहा था, उसका एक और दोस्त 'दीपक' (सामान्य कद का, मुस्कराते चेहरे वाला सफ़ाई पसंद और कम बोलने वाला सुंदर युवक) दुकान पर आया,

दीपक थोड़े दिन पहले किसी छोटी जगह से पढ़ने के लिए यहां आया और किसी के पास पेईगं गैस्ट बन गया! एक फोटो बनवाने ओके के पास आया और उस के साथ दोस्ती हो गई। ओके और दीपक में एक बात समान थी दोनों को छोटी उमर में ही ऐनक लग गया था दोनों को आधा अंधा कहा जा सकता था, दोनों को दस फुट दूर से किसी को पहचानने में मुश्किल होती थी, दोनों के ऐनक की पावर समान थी,

लेकिन दोनों में एक फ़र्क था, ओके को हर समय ऐनक पहन के रखने की आदत थी और दीपक अपना ऐनक जेब में रखता था, वह ऐनक पहन कर अपनी खूबसूरती कम करना नहीं चाहता था! उसे जब भी दूर से कुछ देखने की ज़रूरत होती थी, जेब से ऐनक निकाल कर एक आंख से लगा कर देख कर ऐनक वापिस जेब में रख लेता!

दीपक ने और आते ही ओके का ऐनक मांगी

– अपनी ऐनक देना! जल्दी!

ओके ने अपनी ऐनक उतार कर उसे दी, और दीपक दरवाज़ें में जा कर ऐनक के एक शीशे को अपनी आंख से लगा के बाज़ार में किसी को देखा, ऐनक जेब में रखी और एक हथेली फैला कर किसी को दिखाई, बंद की, फिर खोली, दिखाई और हाथ जेब में डाल कर मुस्कराता हुआ दुकान के अंदर आया, ऐनक वापिस किया और

दीपक– हैलो, क्या हाल चाल हैं? अभी आए हो?

ओके– हाल चाल ठीक ठाक है। यह किस्म की इशारे बाज़ी हो रही थी? किसी को इशारा कर रहे थे?

दीपक– हां! कर तो रहा था! अगर उसने समझ लिया तो! कल मेरी स्पैक्ट्स का एक ग्लास टूट गया था, रिपेयर के लिए दे रखी है, वही लेने जा रहा था।

ओके– क्या चक्कर है?

दीपक– अभी नहीं बता सकता! चक्कर चला, तो ज़रूर बताउंगा!

ओके– अभी क्यों नहीं बताते? जासूसों वाली कोई सीक्रेट सर्विस है क्या?

दीपक– जासूसों वाली नहीं! प्ले-बॉय वाली सीक्रेट सर्विस!

ओके– लड़की फंसा रहे हो? (हाथों के वही इशारे करके दिखाते हुए) ऐसे करके! ऐसे तो गोगिया पाशा जादू किया करता है!

दीपक– जादू ही करने की ट्राई कर रहा हूं! अगर हो गया तो एक शाम की टी पार्टी मेरी तरफ़ से! मेरे ममी पापा की फोटो बन गई?

ओके- हां, ले जाओ!

और उसने दीपक की फोटो निकाल के दी,

दीपक- इसे भी उसी तरह के टेबल फ्रेम में लगा दो।

ओके ने दीपक का पोर्टरेट और ममी डैडी की फोटो दो फ्रेमों में लगा कर दीं! दीपक ने पैसे दिए और चला गया। ओके कम्पयूटर पर काम करने लगा।

बुधवार 3 बजे कुलदीप अखबारों का बंडल बग़ल में दबाए ओके स्टूडियो पर आया, एक अखबार ओके के सामने रख के कहने लगा

- हैलो ओके! मेरा पहला इशू आ गया!

ओके- कोंग्रैटस! आज देखते हैं कैसी न्यूज बनाते हो?

कुलदीप- फ्रंट पेज पर देखो!

ओके- एक अर्जेंट पीपी देना है, बना के पढ़ूंगा।

कुलदीप- अभी पढ़ के बताओ, कैसी लगी? मैंने इशू सर्कुलेट करना है।

अखबार के पहले पेज पर पांच कालम की हैड लाइन के साथ दो कालम की न्यूज़ थी

''शहर में आज तक का सब से बड़ा धमाका''

देश के जाने माने पत्रकार अपने कुल के दीप 'कुलदीप' ने आपके शहर के उद्वार के लिए विश्व-प्रसिद्ध अखबार 'सिटी न्यूज़' शुरु किया है, देश के सभी सम्माननीय व्यक्तियों ने अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त की हैं। 'कुलदीप' ग्रुप के सभी सदस्य उनको धन्यवाद करते हैं। 'कुलदीप ग्रुप' के सभी सदस्यों ने तन मन धन से देश सेवा का संकल्प लिया है।''

एक न्यूज़ चार कालम की हैड लाइन, एक कालम की न्यूज़ नज़र आई

''भीड़ भरे बाज़ार में दिन-दहाड़े बाप ने बेटी की सलवार उतारी''

दोपहर का समय, भीड़ से भरे बाज़ार में बेबस लड़की बिलख बिलख कर रो रही थी, उसके रोने की दिल

दहला देने वाली दर्द नाक आवाज़ बाज़ार में हर बच्चे, बूढ़े, मर्द, औरत का दिल दहला रही थी! और उसका बाप अपनी बेटी का हाथ पकड़ कर खींचता हुआ लिए जा रहा था, लड़की ने दूसरे हाथ से अपनी सलवार कस के पकड़ रखी थी। दिल हिला देने वाला यह दृश्य सेंकड़ों की भीड़ मूक दर्शक बन कर देखती रही, लड़की दर्द भरी आवाज़ में रोती रही। बहुत देर बाद बाप ने बेटी का हाथ सलवार से झटक कर हटाया और उसकी सलवार खोलने की कोशिश की, सलवार खोलने में असफ़ल होने पर उसने झटके से सलवार की रस्सी तोड़ कर सलवार खोल दी, लड़की अपनी सलवार को दोनों हाथों से पकड़े नुक्कड़ में दीवार की तरफ़ मुंह करके बैठ गई, उसे पेशाब करना था! लड़की की उमर दो साल है।

ओके पढ़ कर हैरान हुआ, पेपर रखते हुए अविश्वास से कुलदीप को देखा, कुलदीप के चेहरे ऐसा लग लग रहा था जैसे ऐवरैस्ट विजय की है! - क्यों? है ना न्यूज़ मेकिंग!

ओके- मेकिंग क्या? यह तो ब्रेकिंग है! आप को तो किसी टीवी चैनल का ऐडिटर होना चाहिए!

कुलदीप- वह भी इसी तरह बढ़ा चढ़ा कर ही बोलते हैं ना!

ओके- आप ठीक कहते है। अब मैं काम कर लूं?

कुलदीप- आपको पसंद आई?

ओके- ऐसी चीज़ हर गधे को पसंद आएगी!

कुलदीप- गधे को क्यों?

ओके- क्योंकि मैं खुद एक गधा हूं!

कुलदीप- (हंसते हुए) आप का तारीफ़ करने का अंदाज़ बड़ा मज़ेदार है, मैं चलता हूं, मैंने इशू सर्कुलेट करना है।

उसके जाने के बाद ओके ज़ोर से अखबार अपने माथे पर मार के चिल्लाया- ओके! गधे के डुप्लीकेट! दस रुपए भी नष्ट किए और एक और मेंटल को अपने मत्थे मढ़ लिया!

बुधवार 3 बजे ओके स्टूडियो पर मित्र-मंडली इकट्ठी हुई, चाय के साथ बैठक में कुलदीप और उसका अखबार चर्चा का विषय रहा, मज़ाक उड़ा, एक विचार उठा कि उसे मित्र-मंडली में शामिल कर लिया जाए तो एंटर्टेनमैंट का पर्मानैंट सोर्स मिल जाएगा, लेकिन वोटिंग इसके पक्ष में नहीं हुई।

वीरवार 3 बजे सुबह दुकान खोलते ही दीपक आ गया,

दीपक- जादू सक्सैस फुल हो गया, काम बन गया! अंदर चलो सारा किस्सा सुनाता हूं!

ओके- दो मिनट ठहरो, यार! इतनी जल्दी क्या है? अभी सफ़ाई करनी है, धूप बत्ती तो करनी है!

दीपक- बाद में कर लेना यार! तुम्हें किस्सा बता के मुझे एक और काम भी करना है।

ओके- ठहरो मैं धूप जला लूं, सफ़ाई बाद में कर लूंगा!

ओके धूप जला के फ़ारिग हुआ और दोनों बात करने बैठ गए, दीपक को कहानी सुनाने की बहुत जल्दी पड़ी हुई थी, वह शुरु को गया! - परसों मैं अपनी मौसी को मिलने गया था, उसके पड़ोस के घर में मुझे यह लड़की नज़र आ गई....

दोनों की आंखें मिलीं तो दोनों को लगा कि कुछ हो गया है।
मौसी ने दोनों की आंखें पढ़ लीं और दीपक को बताया

- यह पड़ोसन की भतीजी है, अपनी मौसी से मिलने आई है!

दीपक और लड़की की आंखें दो तीन दफ़ा मिलीं। किसी ने लड़की को अंदर बुलाया तो अंदर वह अंदर जाते वक्त मुड़ के दीपक को देखते हुए अंदर गई!

दीपक- कल मैं तुम्हारी दुकान पर आ रहा था तो वह मुझे सामने से आती नज़र आगई, तो मैं ने यहां इशारे से उसे मिलने का टाईम दिया था।

ओके- तूने तो उसे दो थप्पड़ दिखाए थे!

दीपक- तुम ठहरे दुकानदार, और अभी तुम्हारा किसी से अफ़ेयर

नहीं हुआ! तुम ने अभी तक किसी लड़की को आंख तक नहीं मारी, तुम्हें हाथ दिखाता तो तू दो थप्पड़ ही समझता! रोमैंटिक इशारे समझने की क्षमता लड़कियों को वरदान में मिलती है।

ओके– उसे तेरा इशारा समझ आ गया?

दीपक– हां! मैंने उसे दस बजे का टाइम दिया था, वह दस बजे बाहर खड़ी मेरा वेट कर रही थी।

ओके– नहीं हो सकता! तू ने तो उसे दूर से ही देखा था! बात तो की ही नहीं, इशारा कैसे समझ लिया? तू झूठ बोल रहा है!

दीपक– यार तुम फीमेल के बारे में कुछ नहीं जानते! वह मेल के माइंड से निकलने वाले सिगनल को मोबाइल की तरह डिटेक्ट कर लेती हैं।

ओके– यार तू अपने को आइंस्टाइन समझता है!

दीपक– मेरी बात का यकीन नहीं तो आज एक्स्पैरिमैंट कर के देख लो! किसी भी आती जाती लड़की को जो तुम्हें अच्छी लगे, छिप कर पांच सैकंड लगातार देखते रहना, उसे सैंस हो जाएगी, कि कोई उसमें इंट्रैस्टिड है, वह ज़रूर मुड़ कर देखेगी कि कौन उसे देख रहा है!

ओके– जा यार! लड़की की खोपड़ी में ट्रांसमीटर होता है?

दीपक– हर खोपड़ी में ट्रांसमीटर लगा होता है! यही ट्रांसमीटर हमें दूसरों के प्यार और नफरत का अहसास करवाता है।

ओके– वह और बात है! लड़के और लड़की में सैक्स एट्रैक्शन होती है।

दीपक– मार गोली ना यार! तुम्हें नहीं यकीन तो न सही, बात सुननी है या मैं जाउं?

ओके– अच्छा, अच्छा, ठीक है, बता फिर क्या हुआ? तू कह रहा था, जब तू गया वह तेरा वेट कर रही थी?

दीपक– हां, मुझे देख कर

उसने घर के पिछवाड़े की तरफ आने का इशारा किया, मैं घूम कर

घर के पिछले दरवाज़े पर पहुंचा,
उसने दाएं बाएं देखा और दीपक को अंदर खींच कर दरवाज़ा बंद किया, दोनों के शरीर टकराते ही पता नहीं क्या हुआ, दोनों आउट ऑफ कंट्रोल हो गए, दोनों एक दूसरे की बाहों में लिपट गए और किस्सिंग शुरु हो गई, दोनों बेसुध हो कर एक दूसरे में खो गए और आधा घंटा खोए रहे और सब कुछ हो गया!

ओके- तुम तो मुझे पागल समझते हो! ऐसे भी कभी होता है? अंजान लड़की, न जान न पहचान, आपस में कोई बात नहीं हुई, और सैक्स शुरु हो जाए!

दीपक- जो हुआ है वही बता रहा हूं!

ओके- कैसे हो सकता है? मेरा दिल किसी लड़की के साथ सैक्स करने का हो और मैं उसे पकड़ कर शुरु हो जाऊं, और वह बिना कुछ कहे आराम से साथ लग जाए? ऐसे तो कोई कुतिया भी नहीं कर सकती! ऐसे नहीं हो सकता, तुम झूठ बोलते हो!

दीपक- जब तुम्हारे साथ ऐसी स्थिति बनेगी तो तुम्हारे साथ भी ऐसे ही होगा, कहानियों में पढ़ा था, यह तूफ़ान ऐसा होता है। मुझे भी यकीन नहीं हुआ था, लेकिन कल हो गया!

ओके- मुझे यकीन नहीं होता! कोई भी यकीन नहीं करेगा!

दीपक- जिस दिन तेरी बारी आएगी, तब यकीन आएगा। मैं ने भी यह सब सोचा नहीं था, मैं तो उससे मिलने गया था, उसके शरीर के साथ शरीर टकराया, अकेले थे, अंधेरा था अचानक ही हो गया, कुछ सोच ही नहीं मिला!

ओके- क्या नाम है उसका?

दीपक- नाम पूछने का मौका ही नहीं मिला! कोई बात नहीं कर सका, याद आया, जब हम बवंडर में उड़ रहे थे, तूफ़ान अभी थमा नहीं था, हम दोनों आपस में खोए हुए थे, उसकी मौसी की आवाज़ आई थी शायद *शिखा* कह के बुलाया था, वह जल्दी जल्दी अपने कपड़े समेटने लगी,

मैं ने भी कपड़े समेटे और बाहर निकल आया!

ओके- यह असम्भव है! तू मुझे मनगढ़ंत कहानी सुना रहा है! मुझे बेवकूफ़ बना रहा है! चल भाग यहां से... मैंने काम करना है, शाम को बात करेंगे।

दीपक- तेरी मर्ज़ी, ना यकीन कर! तुम जानना चाहते थे, इसलिए बताने आ गया।

ओके- शाम को आओगे?

दीपक- टाइम मिला तो!

दीपक चला गया।

शुक्रवार 3 बजे ओके ने शाम की बैठक में मित्र-मंडली को दीपक का एडवैंचर सुनाया, तो सब में बहस का विषय बन गया, किसी को दीपक की कहानी पर यकीन नहीं हुआ सब का विश्वास था कि दीपक शेख़ी मार रहा है, बहस चली, मित्र-मंडली के सब से हैंडसम लड़के अमर ने बुरा सा मुंह बनाते हुए डिक्लेयर किया

- बकवास कर रहा है!

शाहरुख ख़ान का डुप्लीकेट विक्टर चौड़ा हो कर अपनी छाती ठोकते हुए कहने लगा

- यह तो विक्टर जैसे स्मार्ट पर्सनैलिटी वाले लड़के के साथ भी कभी नहीं हुआ! विक्टर को देखते ही लड़कियां हिप्नोटाइज़ हो जाती हैं, फिर भी ऐसा कभी नहीं होता! वह हम पर इम्प्रैशन जमाने के लिए लम्बी लम्बी छोड़ रहा है!

अपने आप को होने वाला आर्मी कैप्टन पोज़ करने वाला सुहास कहने लगा - वह हमें अपना ड्रीम सीक्वैंस सुना कर बेवकूफ़ बना रहा है। हमारी पर्सनैलिटी देखो, एक दफ़ा देखने से किसी लड़की का दिल नहीं भरता, बार बार देखती हैं! फिर भी किसी ने हमें इस तरह अंदर खींच कर किस नहीं किया! बहुत लम्बी छोड़ रहा है।

सीधा सादा जगदीप अपनी भड़ास निकालने लगा

– मैंने अपनी ऐड़ वोटी का ज़ोर लगा लिया, सारी टिल लगा ली, किसी लड़की से बात करनी तक नसीब नहीं हुई! थोड़े दिन पहले किसी ने बताया था बस्ती की एक 'मौसी' पैसे ले कर लड़कियों से इंट्रोडक्शन करवा देती है, महीने भर से उसकी मिन्नतें कर रहा हूं, जब पूछता हूं, आश्वासन मिल जाता है! पक्की बात है, दीपक हम सब को पागल बना रहा है।मित्र-मंडली में सब से अलग

विचार धारा वाला शरारती लड़का काका तो पागल हो गया

– यह आदमी समाज में झूठी अफ़वाहें फैला रहा है। यह सभ्य सभ्रांत महिलाओं, नहीं लड़कियों का अपमान कर रहा है। इसको चौक में बांध कर पत्थर मारने चाहिए! (गाने लगा) यह झूठा है वोट इसे मत देना..

अमर कद में सब से ऊंचा था उसने काका की गुद्दी में झांपड़ मारा,

अमर– ओए मेंटल, तेरे बाप का इलैक्शन हो रहा है!

काका– भैंस चोर....!, कमीना, हमारी पर्सनैलिटी का मज़ाक उड़ा रहा है, हम यहां कुड़ियों को आंखें मारते मारते बूढ़े हो गए, पता नहीं कितनी दफ़ा जूतों की पिटाई से बचने के लिए हंडर्ड मीटर दौड़ लगानी पड़ी है, और यह मच्छर खुद को 'हू-हैफनर' एक्सपोज़ कर रहा है!

सुहास– शहर की कई लड़कियां लड़कों की ड्रीम गर्ल्ज़ हैं, साले को चैलेंज कर दो, कोई एक फंसा के दिखाए! हम भी देखें तो यह कितना बड़ा प्ले-बॉय है, अपने आप को 'हू-हैफ़नर' समझता है या लार्ड बायरन? साला उचक्का!

काका– शर्त लगा लो, जूतियां खाएगा!

अमर– वीडियो बना के मीडिया पर डाल देंगे!

सुहास– यार, दोस्त है अपना, उल्टी बात मत करो! उसके साथ शर्त लगाते हैं, हारना तो उसने है ही, पैनल्टी भुगतेगा।

ओके– आई ऐग्री...

रवि (वुडन फ़ेस) बिना कुछ बोले कभी इसे कभी उसे देखता रहा।

बाकी सब ने भी ऐग्री किया! तभी चाय आ गई, सब पीने लगे, कुछ देर सब खामोश रहे जैसे किसी गंभीर समस्या पर विचार कर रहे हों! एकाएक काका अपना कप लेके दरवाज़े में जा खड़ा हुआ

ओके- ओए, अंदर आके बैठो! दुकान पर खड़े हो कर लड़कियां देखना मना है,

काका अंदर आया

- मुझे मालूम है यार, मैं लड़कियां नहीं देख रहा हूं! मैं चीप आदमी नहीं हूं!

अमर- मान लिया तुम चीप नहीं हो! लेकिन कौन कहता है? तू आदमी है!

काका- बकवास न कर! मैं सोच रहा हूं दीपक के लिए कौन सी लड़की सूट करेगी?

सुहास- वही तो मैं भी सोच रहा हूं!

काका- बकवास न कर! बिल्ले! सोचने लायक अक्ल है?

जगदीप- यार लड़ो मत! उसके लिए लड़की ढूंडो!

ओके- हां यार, किच किच मत करो, सीरियस्ली सोचो...

विक्टर- यार, कोई भी दिखा दो, हम से कोई नहीं फंसती उससे क्या फंसेगी?

अमर- ऐसी होनी चाहिए, जो सब की ड्रीम गर्ल हो!

तभी दो बहनें आती दिखाई दीं!

सुहास- इन के बारे में क्या ख़्याल है?

विक्टर- यह दोनों तो पहले ही पता नहीं किस किस से आंख-मटक्का करती फिरती हैं, पता ही नहीं लगेगा फंसी भी है कि नहीं!

अमर- यार बात सुनो, यह मैटर गहराई से सोचने वाला है! शाम को बाज़ार का टूर करने निकलेंगे तो देख देख कर डिस्कस कर लेंगे, एक लिस्ट बना लेते हैं, कल यहां बैठ कर वोटिंग कर लेंगे।

काका- अभी से शुरु हो जाते हैं,चलें?

ओके- भई मैं तो आठ बजे से पहले दुकान छोड़ कर नहीं जा

सकता।

सुहास– हम एक चक्कर लगा कर आठ बजे तक यहां आ जाएंगे, उसके बाद तुम्हारे साथ दूसरा चक्कर लगा लेंगे।

ओके– आई ऐग्री.., मैं ठीक आठ बजे पैक अप कर के तुम्हारी वेट करूंगा!

टोली लड़कियां देखने चल पड़ी! बाज़ार में चलते हुए कोई लड़की दिखाई देती तो आपस में बहस शुरु हो जाती

– क्यों भई, यह चलेगी?

– मोटी है..

– आसानी से फंस जाएगी...

दो तीन लड़कियां देखने के बाद किसी ने सुझाव दिया

– यार सभी को हम जानते हैं, हमें लिस्ट बनानी चाहिए!

– काके तुम लिस्ट बनाओ।

– क्यों? मैं क्यों? मैं ने ठेका ले रखा है?

– नहीं यार, तुम्हारे अलावा सभी को लिखने पढ़ने से एलर्जी है!

– काके की हैंड राइटिंग कौन पढ़ेगा? काका खुद तो अपना लिखा पढ़ नहीं सकता!

– जगदीप की हैंड राइटिंग अच्छी है।

जगदीप– मैं लड़कियां देखूंगा या लिखूंगा?

– तुम ठहरे हलवाई! तुम्हें क्या पता, अच्छी और बुरी लड़की में क्या फ़र्क होता है?

जगदीप– कूट कूट के तूम्बा बना दूंगा! हलवाई को क्यों नहीं पता, ओए?

विक्टर– बाकी हलवाइयों को पहचान होगी, तुम्हें तो चाय की अच्छाई बुराई में फ़र्क नहीं दिखाई देता, लड़की को क्या पहचानोगे!

जगदीप– चाय और लड़की का आपस में क्या सम्बंध है?

विक्टर– चाय और लड़की दोनों की पहचान अच्छे टेस्ट वालों को ही होती है। मज़दूर को ढाबे की चाय और जैंटरी को

फ़ाइव स्टार होटल की चाय अच्छी लगती है! मज़दूर मिस इंडिया की तरफ़ नहीं देख सकता और इंडस्ट्रियलिस्ट किसी मज़दूर लड़की को नहीं देख सकता! हुई ना चाय और लड़की एक बराबर!

जगदीप– एक लड़की तो फंसाई नहीं जाती और बना फिरता है, लड़कियों का एक्सपर्ट! कार्टून सीरियल का हीरो!

काका– लड़ाई बंद करो, यार जगदीप, लिस्ट तुम बना लो, मैं लड़कियां देखने में तुम्हारी हैल्प करूंगा!

लिस्ट बनने लगी, लड़कों को सारे शहर की लड़कियों के नाम पते याद थे, उन्होंने कई लड़कियों को देखा, आपस में सलाह की और लिस्ट में लिख लिया। बाज़ार का चक्कर लगा के टीम ओके के स्टूडियो पर आई, ओके को लेके सभी फिर से बाज़ार में लड़कियां देखने चल पड़े। ओके ने लिस्ट देखी और अपनी याद से कुछ लड़कियों के नाम पते बताए, सभी ने उनके बारे में अपने विचार दिए, ओके ने अपनी पसंद की एक लड़की 'गुड़िया' के बारे में बात की, सांवली, मझोले कद और गठीले बदन वाली गुड़िया के नाम से सारे शहर के लड़कों की लार टपकने लगती थी, वह थी ही बहुत सैक्सी! उसके बदन की बनावट लड़कों की नींद हराम करने के लिए काफ़ी थी!

उसका नाम आते ही सभी ने उसके नाम का समर्थन कर दिया। सभी को मालूम था, वह नीम वाली गली में रहती थी, चेलेंज के लिए उसका नाम सर्वसम्मति से पास होगा! वापिसी में ओके ने बताया

– मैं सुबह दीपक को फ़ोन करके पूछूंगा, वह कब आएगा!

शनिवार 11 बजे ओके ने दीपक को फ़ोन किया

ओके– ओके बोल रहा हूं!

दीपक– कैसे याद किया?

ओके– तम्हारे एडवैंचर ने दिमाग़ खराब कर दिया है!

दीपक– इस एडवैंचर ने मेरा भी दिमाग़ हिला दिया है!

ओके– स्टडी डिस्टर्ब हो गई?

दीपक– दो दिन डिस्टर्ब रहा हूं, अब कंट्रोल कर लिया!

ओके- शाम को आ जाओ...

दीपक- मैं भी आने की सोच रहा हूं, पागलों के कलब्ब में थोड़ी देर बिता कर माइंड रिलैक्स हो जाएगा।

ओके- तीन बजे?

दीपक- ओके!

शनिवार 3 बजे मित्र-मंडली के सभी मैंम्बर 'ओके स्टूडियो' पर वक्त से पहले इकट्ठे हो गए, दीपक आया तो सब ने उसे सारी कहानी फिर से सुनाने का आग्रह किया

विक्टर- दीपक, हमें ओके ने तुम्हारी रीसैंटं सैक्स सक्सैस स्टोरी सुनाई, तुम हमें बहुत कन्विंस करने की कोशिश कर रहे हो कि तुम सैक्स स्पैशिलस्ट हो! हम तुम्हारा नाम लार्ड बायरन रखें, बोरिस स्पास्की रखें या तुम्हें हु-हैफ़्नर कह के बुलाएं?

काका- लेकिन हमें यकीन नहीं होता!

विक्टर- क्योंकि इतनी जल्दी सिर्फ़ गोगिया पाशा ही किसी को सिड्यूस कर सकता है। गिली, गिली, गिली और लड़की हिप्नोटाइज़्ड हो गई, फिर उसके साथ जो चाहे कर लो!

दीपक बुरा मान गया, वह ओके से कहने लगा

- ओके, मैं ने तुम्हें एक अच्छा दोस्त समझ कर अपनी प्राइवेसी ओपन कर दी, और तुम ने सारे शहर में ढिंडोरा पीट दिया।

सुहास ने दीपक को शांत करने का प्रयास किया

- दीपू, हम सब लंगोटिए हैं, एक पूल में सब नंगे हैं! सब की प्राईवेसी कॉमन हैं, कोई किसी से कुछ नहीं छिपाता, सब दोस्त हैं...

दीपक- दोस्त हो तो इस इस टूथपिक-लैग जैंटलमैन को समझाओ कि अपने से सुपीरियर का मज़ाक उड़ाने की बजाय उससे कुछ सीखने की कोशिश करे! टांगे हिला

हिला के दिखाने से लड़कियां पटतीं नहीं, मज़ाक उड़ाती हैं।

विक्टर– तुम मेरी टांगों का मज़ाक क्यों उड़ा रहे हो?

दीपक– रियैलिटी मज़ाक लगती है? जो मैंने ओके को बताया है, वह भी रियैल्टी है! तुम समझते हो टांगें हिला के लड़की को दिखाओगे तो वह फंस फंसेगी? फंसेगी नहीं हंसेगी और अपनी सहेलियों को तुम्हारी हरकतों की कहानी सुना के हंसेगी और हंसाएगी!

अमर– विक्टर, सॉरी बोलो! तुम ने दोस्त को पिंच किया है।

विक्टर– सॉरी दीपक, आई एम वैरी सॉरी! मेरी इन्टैन्शन मज़ाक उड़ाने की नहीं थी! हमें तुम्हारी स्टोरी इम्पासिबल लगती है।

दीपक– क्योंकि तुम लोग लड़कियों रिझाने की बजाय उनको छेड़ कर चिढ़ाते हो, भरे बाज़ार में सब को सुना कर उन का मज़ाक उड़ा कर समझते हो, वह इससे वह खुश होती हैं? इससे तुम उनके मन में अपने लिए नफ़रत पैदा करते हो! प्यार नहीं!

काका– यार, हम उनकी इन्सल्ट नहीं करते, हम तो सिर्फ़ अपना एंटर्टेनमैंट करते हैं।

दीपक– वाह वाह, क्या बात है? काके, हम सब आपस में तुम्हें 'चाऊमीन' कहके बुलाते हैं तुम्हें बुरा नहीं लगता, अगर भरे बाज़ार में मैं तुम्हें ऊंची आवाज़ में चिल्लाउं 'ओए चाऊमीन, लड़कियां देखने आए हो', तो तुम्हें कैसा लगेगा?

काका– मैं ईटं मार के सिर फोड़ दूंगा!

दीपक– और उन लड़कियों की ग्रेटनैस देख! तुम्हारी हर बकवास को सुन कर तुम्हें माफ़ कर देती हैं, पता है क्यों?

काका– बताओ!

दीपक– तुम्हारी बकवास से लड़की समझ जाती हैं कि तुम उस में इंट्रैस्टिटउड हो, वह खामोश रह कर तुम्हारी बेवकूफ़ियां

माफ़ कर देती हैं, इस उम्मीद में कि तुम लोग खुद अपनी ग़ल्ती का अहसास कर लोगे और अगली बार कोई अच्छी बात करोगे! लेकिन तुम लोग अपनी ग़ल्ती का अहसास ही नहीं करते, सुधरने का तो सवाल ही नहीं उठता! खुद सोचो, सड़क पर इन्सल्ट करने वाले से कोई प्यार कर सकता है?

काका और विक्टर को बग़लें झांकने लगे!

ओके— यार तुम लोग किस चिख चिख में फंस गए? पहले दीपक की बात को ध्यान से सुनो, और फ़ार्मूला समझो जिंदगी में कुछ करना है कि नहीं, या इसी तरह सूंघते रहना है!

अमर— (शत्रुघ्न सिन्हा के स्टाइल में) खामोश, सब लोग ध्यान से दीपक की बात सुनो! कोई बीच में नहीं बोलेगा! सुनो और समझो!

तभी चाय आ गई, सब ने अपने कप उठाए और

दीपक ने पूरा इन्सीडैंट बताना शुरु किया, सब आंखें फाड़े सुनते रहे। बात ख़त्म हुई, सब हैरान उसे देखते रह गए।

सुहास— इस इंसीडैंट से यह साबित नहीं होता कि तुम ने लड़की फंसाई, इस में तो सब कुछ अचानक हो गया, तुम ने क्या तोप चलाई?

दीपक— यह सच है, मैं ने एक्चुअली कोई तोप नहीं चलाई, सब कुछ अचानक से हुआ है।

जगदीप— इसने एक इशारा किया और सब कुछ हो गया, मैं ने सारी तिगड़में लडा़ लीं, कुछ नहीं हुआ!

ओके— सैक्स तक पहुंचने के लिए दो स्टैप पार करने होते हैं, इंट्रोडक्शन और दोस्ती, उसके बाद सैक्स हो सकता है, ऐग्री करते हो?

जगदीप— हां!

ओके— दीपक ने भी यही किया, सीक्वैंस वही है, सिर्फ़ सैक्स अचानक हुआ! दीपक, यह घोंचू तुम्हारे इन्सीडैंट से कुछ

सीखने समझने की बजाय बकवास बाज़ी करके अपना ही नुक्सान कर रहे हैं!

दुकान पर एक गाहक आया, ओके उसे अटैंड करने गया, सभी खामोश बैठे उसका इंतज़ार करते रहे, ओके वापिस आया, तो अमर ने उससे पूछा - ओके! अब बताओ क्या करना है?

ओके- दीपक, हम चाहते हैं कि तुम हमें एक लड़की पटा के दिखाओ!

दीपक- क्यों? मुझे क्या पड़ी है? मैं यहां पढ़ने के लिए आया हूं, फ़ाल्तू के ड्रामों में उलझने के लिए नहीं!

ओके- पहली बात, कहानी पर यकीन नहीं होता! दूसरी बात, अगर तुम ने कर दिखाया तो हम सब को कुछ सीखने को मिलेगा, बात लड़की पटाने जितनी हल्की नहीं है, कुछ और भी है!

दीपक- (हंसते हुए) इनके लिए नहीं!

चाय वाला बर्तन लेके गया। उसके जाने के बाद

ओके- दीपक, हम ने तुम्हारे लिए एक बहुत सैक्सी लड़की चूज़ की हैं, 'गुड़िया'! उसके साथ रोमांस करना तुम्हारे लिए रियैलिटी में बहुत रोमैंटिक एक्सपीरियैंस होगा, वह शहर के हर लडके की ड्रीम गर्ल है! वह इस शहर की सैक्सिएस्ट लड़की है! तुम इसे हमारी कोचिंग समझो और उस को पटाओ, और हमें ट्रिक समझाओ!

दीपक- किसी लड़की को पटाने के लिए अपने दिल में उसके लिए डिज़ायर पैदा होना ज़रूरी है! अगर उसे देख कर मेरे अंदर की बत्ती जल गई तो सक्सैस श्योर है!

सुहास- अगर यह पसंद नहीं आई तो दूसरी ढूंड देंगे, क्यों भई, (सब से) कोई प्राब्लम तो नहीं?

सब ने एक दूसरे का मुंह देखा फिर

ओके- हां, ठीक है, देख लो, नहीं पसंद आएगी तो दूसरी ढूंड देंगे। हमारी मित्र-मंडली के पास शहर की हर लड़की का रिज़्यूमे है!

दीपक- ठीक है, एक बार देख के बताउंगा, मैं पटा सकता हूं या नहीं! दूसरी बात, मैं सैक्स तक पहुंचने की गारंटी नहीं करूंगा! हम अमेरिका में नहीं हैं! इस दफ़ा तो अचानक हो गया, अदरवाइज़ लड़की से फ्रैंडशिप होना ही बहुत बड़ी बात है!

काका- फ्रैंडशिप हो गई तो वह कौन सा मुश्किल है?

दीपक- ठीक कहते हो, तब तो सैक्स मयुचुअल इंट्रैस्ट का मैटर है।

सब ने एक दूसरे का मुंह देखा फिर

ओके- ठीक बात है, सैक्स की बात छोड़ो, इंट्रोडक्शन और दोस्ती तक करके दिखा दो!

दीपक- एग्रीड!

काका- शर्त लगाते हो, तुम नहीं कर सकते!

दीपक- लगाओ शर्त!

ओके- ओके! अगर तुम सक्सैसफ़ुल हुए तो हम सब तुम्हें छे फिल्में दिखाऐंगे, अगर नहीं फंसा सके तो तुम हमें छे फ़िल्में दिखाओगे!'

दीपक- सॉरी! मुझे शर्त मंज़ूर नहीं! मैं फिल्में देखने में इंट्रैस्टिड नहीं! जीत गया तो तुम मुझे छे फ़िल्में देखने का अमाउंट नकद दे देना! हार गया तो एक फ़िल्म दिखाउंगा। मैं यहां पढ़ने आया हूं, लिमिटिड पाकेट मनी मिलती है, ओके? वैसे मैं हारने वाला नहीं, लड़की पसंद आ जाए सही! अब लड़की दिखाओ!

ओके- कौन दिखाएगा?

अमर- तुम ने पसंद की है, तुम दिखाओ!

ओके- ओके विद मी, मैं दुकान पैक अप करके तुम्हारे साथ चलूंगा।

सुहास- तुम अकेले क्यों जाओगे? सभी चलेंगे!

ओके- ओके विद मी, दैट इज़ ए बैटर आइडिया!

अमर- खामोश! अंग्रेज़ के फोटोस्टैट!

काका- तेरे अंग्रेज़ की भैंस की टांग!

शनिवार 8.30 बजे सुबह ओके ने दुकान पैकअप की और मित्र-मंडली चल पड़ी, नीम वाली गली की एंटरी पर पहुंच कर ओके ने दीपक से पूछा

- यह गली देखी है?

दीपक- नहीं, इधर आने की कभी ज़रूरत नहीं पड़ी!

ओके रुक गया और अनांउंस किया

ओके- मैं शापकीपर हूं, मैं अपनी शाप की रैपुटेशन का रिस्क नहीं ले सकता, हो सकता है वह मुझे जानती हो, मैं नहीं चाहता वह मुझे दीपक के साथ देखे! मैं यहीं रुकता हूं!

विक्टर- मुझे शहर की हर लड़की जानती है, मेरी रैपुटेशन का सवाल है। मैं भी यहीं रुकता हूं।

दीपक- ज़्यादा अच्छा है, तुम्हारे साथ उसने मुझे देख लिया, तो मेरा मिशन अभी फ़ेल हो जाएगा! तुम तो मुझ से दो किलोमीटर दूर ही रहना!

काका- मैंने उसे कई दफ़ा छेड़ा है, मैं दूसरी गली में जा रहा हूं!

सुहास- मुझे कोई खतरा नहीं, मैं साथ चलता हूं, बताओ कौन सा घर दिखाना है?

ओके- तुम भी उस दिन सब के साथ ही थे, तुमने उसका घर नहीं देखा?

सुहास- मैं ने ध्यान नहीं दिया, मैं उस वक्त कुछ और सोच रहा था।

अमर- मेरा साथ जाना भी ठीक नहीं है, मेरा घर इसी गली में आगे जा कर है।

दीपक- यार, मेरी ओपीनियन तो ले लो! यह मेरा मिशन है!

अमर- बताओ, बताओ...

दीपक- जगदीप! तुम्हें उसका घर याद है?

जगदीप- याद है!

दीपक- ओके, बाकी सब खिसको, मैं जगदीप को साथ लेके

जा रहा हूं। तुम लोग यहीं हमारी वेट करो।

ओके- बाकी सब को छोड़ के जगदीप ही क्यों?

दीपक- हमारे यह चार यार शहर में 'लफंडर' कहलाते होंगे, शरीफ़ लड़कियां 'लफ़ंडरों' से सौ फुट दूर ही रहती हैं। तुम दुकानदार हो, रिज़र्व रहते हो, जगदीप शक्ल से घोंचू नज़र आता है, इस पर कोई शक कर ही नहीं सकता! इस लिए इस वक्त मेरे लिए सब से फिट यही है।

जगदीप- मैं तुम्हें घोंचू नज़र आता हूं?

दीपक- मैं ने तुम्हें घोंचू नहीं कहा, इन घोंचुओं को समझाने के लिए घोंचू शब्द का प्रयोग किया था। तुम तो शक्ल से घोंचू हो, एक्चुअल घोंचू यह लोग हैं!

कहते हुए उसने जगदीप की पीठ थपथपाई!

दोनों गुड़िया का घर देखने के लिए चले,

दीपक- दूर से बताना, बोल के! हाथ से इशारा मत करना!

घर से थोड़ी दूर पहले रुक कर जगदीप ने बताया

- खम्बे से दो मकान पहले पीले रंग का मकान है, घर के आगे छोटा सा आंगन है, लकड़ी का गेट लगा है।

दीपक- उसके गेट के सामने पैर पर चोट लगने की एक्टिंग करके ज़मीन पर बैठ जाना, मैं दो मिनट वहां रुकना चाहता हूं, शायद नज़र आ जाए!

जगदीप गेट के आगे ज़मीन पर बैठ गया और पैर सहलाने लगा, दीपक उसके पास खड़ा हो कर घर का अवलोकन करने लगा, घर की एक खिड़की में लाइट जल रही थी, दो तीन मिनट वहां रुकने के बाद दीपक ने उसे कहा

- मेरे कंधें पर हाथ रख के मेरा सहारा ले कर लंगड़ाते हुए चलो।

जगदीप लंगड़ाता हुआ उसके कंधे का सहारा ले कर चल पड़ा और दोनों गली के दूसरे छोर से होते गए दूसरी गली (पिपली गली) का चक्कर लगा के वापिस आ कर अपने ग्रुप से आ मिले।

विक्टर ने दीपक से पूछा

- गुड़िया नज़र आई? कैसी लगी?

दीपक- कोई नज़र नहीं आया! टीवी की आवाज़ के इलावा और कोई आवाज़ भी सुनाई नहीं दी।

अमर- क्या लगता है? कुछ कर लोगे?

दीपक- तुम बताओ, तुम्हारा क्या ख्याल है?

विक्टर- तुम शर्त हार जाओगे! तुम क्या कहते हो, अमर?

अमर- फिफटी फिफटी!

जगदीप- मैं कुछ नहीं कह सकता!

काका- फिफटी फिफटी! सुहास तुम्हारा क्या ख्याल है?

सुहास ने दीपक से पूछा

- तुम ने कभी गुड़िया को देखा है?

दीपक- मैं पहले कभी इस गली में नहीं आया! कभी ज़रूरत नहीं पड़ी!

सुहास- मेरा ख्याल है, गुड़िया को देखने के बाद दीपक बैक आउट कर जाएगा।

दीपक- क्यों?

सुहास- शहर का हर लड़का गुड़िया पर लाइन मारता है, लेकिन वह अभी तक किसी के काबू में नहीं आई!

दीपक- यारो, आपस में शर्त लगा लो, एक टाइम फैक्टर फिक्स कर लो! और उस टाइम फैक्टर को एंजॉय करो! मैं इसे जीत या हार के लिए नहीं, एक एक्सपैरीमैंट की तरह एंजॉय करूंगा। और लाइफ़ टाइम के लिए एक एक्सपीरियैंस गेन करूंगा।

ओके- एक महीने का टाइम कॉफी है?

दीपक- काफी है! मैं यहां पढ़ने के लिए आया हूं, खेल कूद में ज़्यादा टाइम वेस्ट करना अफोर्ड नहीं कर सकता!

ओके- तुम्हारे लिए यह खेल कूद है?

दीपक- तुम्हारे लिए भी तो यह खेल कूद ही है! क्या तुम़ अपना बिज़नैस छोड़ कर इश्कबाजी करोगे?

ओके– नहीं, मैं पागल नहीं हूं!

चलते चलते दीपक ने सब को रुकने के लिए इशारा किया

दीपक– एक मिनट रुको! मेरी बात सुनो!

सभी उसकी बात सुनने लगे

दीपक– पता नहीं मैंने इस लड़की को कभी देखा भी है कि नहीं, इसकी जितनी भी डीटेल तुम सब को मालूम है, मुझे अपडेट करो!

– गुड़िया निक नेम है, पूरा नाम मंजीत जायसवाल है!

– कद पांच फुट सवा तीन इंच है!

– एम डी हाई स्कूल में पढ़ती है!

– सैकंड इयर में है!

– पढ़ाई में अच्छी है!

– 'बहू भी सास बनेगी' और 'इंडियन सिंगर' इसके फेवरिट हैं!

दीपक– पेरैंटस और रिलेटिव्ज़ के वेयर अबाउट्स?

– दो तीन साल पहले इसकी मदर की डैथ हो गई है, फ़ादर कहीं नौकरी करता है! एक भाई है!

– दो साल बड़ा है!

– बाप गुस्सैल और झगड़ालू है और लोग उससे बात करने से कतराते हैं!

– उसका बाप बहुत स्ट्रिक्ट है, गुड़िया को मोबाइल यूज़ करने की पर्मीशन नहीं है।

दीपक– घर से कब निकलती है? कहां कहां जाती है? कोई रिश्तेदार? सहेली, दोस्ती....?

– कालिज के अलावा जब भी निकलती है, घंटे भर से ज़्यादा घर से बाहर नहीं रहती, किसी सहेली के घर नहीं जाती!

– पिछले साल एक सहेली के साथ बाज़ार में जाती दिखाई दी थी!

– तीसरे चौथे दिन छोटी मोटी शापिंग के लिए बाज़ार जाती

है।

दीपक– मुझे इसकी शक्ल देखने के लिए उसके घर के बाहर धरना देना पड़ेगा?

काका– मेरे मोबाइल के एक शॉट में इसकी तस्वीर होगी।

और उसने बाज़ार का एक शॉट दिखाया जिस में दूर एक कोने में गुड़िया दिखाई दे रही थी।

दीपक– कोई ऐसी दुकान, जहां वह अक्सर जाती हो?

– पिपली गली में 'तनेजा बेकरी' और चावला जैनेरल स्टोर! दूसरे तीसरे दिन बिस्कुट ब्रैड लेने जाती है। टाइम आलमोस्ट फ़िक्स्ड है, तीन से साढ़े तीन बजे!

– उसका फेवरिट बिस्कुट है, तनेजा का बना हुआ 'ब्राउन कुकी'!

दीपक– तुम लोगों ने तो जेम्ज़् बोंड से भी ज़्यादा जासूसी कर रखी है। इसी तरह का डाटा शहर का सारी लड़कियों का अवेलेबल होगा?

सब एक दूसरे का मुंह ताकने लगे! अमर ने समझाया

– गुड़िया इस शहर की सब से हॉट लड़की मानी जाती है। किसी को आंख उठा कर नहीं देखती, इसलिए ज़्यादा टॉक अबाउट है।

बातें करते करते सब एक ढाबे तक आ गए,

दीपक– ओके, फ्रैंड्ज़्, मैं तो यहां खाना खा के अपने कमरे पर जाउंगा, ऐनी बॉडी विश टू जॉयन?

– नो! थैंक्स!

और सब हाथ मिला के वहां से विदा हुए।

रविवार 11 बजे ओके ने दीपक को फ़ोन किया

दीपक– हैलो ओके, आर यू ओके?

ओके– ओके इज़् ओके! हॉउ इज़् दीपक?

दीपक– दीपक इज़् आलसो ओके!

ओके– दीपक, मैं सोच रहा था हम थोड़ा टाइम साथ गुज़ारें,

लंच भी इकट्ठे कर लेंगे। क्या ख़्याल है?

दीपक– अच्छा ख़्याल है, दुकान तो बंद होगी!

ओके– वीकली ऑफ़ है।

दीपक– कहां मिलोगे?

ओके– मैं अशोक लाइब्रेरी पर हूं, आ जाओ!

दीपक– दस मिनट में आ रहा हूं!

थोड़ी देर में दीपक अशोक लाइब्रेरी पर आ गया, अशोक लाइब्रेरी पुरानी किताबों को किराए पर देने वाली एक दुकान थी, दोनों ने पढ़ने के लिए किताबें लीं और

ओके– मेरा कॉफ़ी पीने का मूड है, चलें?

दीपक– गुड, मैं भी यही सोच रहा था।

दोनों नरूला रैस्टोरैंट पर काफ़ी पीने बैठ गए। दीपक ने ओके को ध्यान से देखते हुए पूछा

– लड़की फंसाने के फंडे में तुम क्यों इंट्रैस्टिड हो? यह काम तो बिगड़े हुए लफ़ंडर, कॉमन लड़कों का है!

ओके– ठीक कहतें हो! सभी लफ़ंडर हैं!

दीपक– तुम शॉपकीपर हो, बिज़नैसमैन हो! और मेरी जजमैंट में तुम इन लफंडरों जैसे नहीं हो!

ओके– मेरे टेस्ट, मेरे शौक उन जैसे नहीं हैं,

दीपक– फिर उनसे दोस्ती केसे? दोस्ती तो अपने टेस्ट के लोगों में होती है।

ओके– अपने टेस्ट के दोस्त कहां से लाऊं? जैसे मिले हैं, वैसों से ही काम चलाना पड़ता है।

दीपक– तुम्हारे शौक क्या हैं?

ओके– लिटरेचर पढ़ना, कहानियां लिखना, शायरी, माउथ–आर्गन बजाना, पेंटिंग...

दीपक– और तुम्हारे दोस्त, लड़कियां देखना, उन पर कमेंट करना, इधर उधर ताक झांक करके टाइम पास करने वाले लड़के, जिन्हें हम 'वेहले' या 'नल्ले' कहते हैं!

ओके– यार मुझे भी तों टाइम पास करना है।

दीपक— मैंने पूछा था, लड़की फंसाने के फंडे में तुम क्यों इंट्रैस्टिड हो?

ओके— मुझे इसमें कोई इंट्रैस्ट नहीं, जिज्ञासा है! तुम्हारे और शिखा के बीच में जो हुआ, मेरे लिए आउट ऑफ़ द वल्ड वाली बात है। सैक्स को बीच में न लाया जाए तो भी दूसरों को अट्रैक्ट करने की तुम्हारी स्पैशियैलिटी या कला को समझना चाहता हूं।

दीपक— बड़ी छोटी सी बात है, रिलैक्स्ड और सिंपल रहता हूं, अपना ऐटीच्यूड ईज़ी टू टॉक, ईज़ी गोइंग रखता हूं, सब से आंख मिला के मुस्कराता हूं, और कुछ नहीं।

ओके— तुम बहुत जल्दी हिलमिल जाते हो! फ्रैंडली हो, यह चीज़ तो गॉड गिफ़्ट होता है!

दीपक— टैलीपैथी को फ़ैक्ट समझते हो या फ़ेक?

ओके— इतनी सटल चीज़ को फ़ैक्ट तो समझा ही नहीं जा सकता! कभी कोई प्रूफ़ भी नहीं मिला!

दीपक— मैं टैलीपैथी यूज़ करने की प्रैक्टिस करता हूं, तुम्हें भी तरीका बताता हूं, प्रूफ़ भी मिलने लगेंगे!

ओके अविश्वास से उसे देखने लगा, दीपक ने बताया

— मैं सब से आंख मिलाता हूं, उसे स्माइल देता हूं, नोट स्माइल देता हूं, और मन ही मन उसे 'हैलो' कहता हूं और इन्वीटेशन देता हूं, 'मुझ से बात करो', इतने से ही उनके एटीच्यूड में साफ़्टनैस आ जाती है, कोई कोई तो बातें करना शुरु हो जाता है, क्यों?

ओके— तुम्हारा मतलब है, उसे तुम्हारा इन्वीटेशन मिल जाता है!

दीपक— टैलीपैथी कोई भाषा नहीं, यह मैगनैट वेव, या रेडियो फीक्वैंसी की तरह इफ़ैक्ट करने वाली कोई वेव है, फ़ीलिंग ट्रांसमिट करती है! तुम्हारे अंदर दूसरे के लिए उठने वाली भावना दूसरे के अंदर भी इग्नाइट होती है!

ओके— मैं भी ट्राई करके देखूंगा! आंख मिला के उससे कहूं मेरे दोस्त बन जाओ!

दीपक– मेंटल कम्यूनिकेशन से पहले विज़ुअल इफ़ैक्ट क्रियेट करना है, पहले आंख मिला के कांटैक्ट बनाओ, एक इन्वाइटिंग स्माइल से कन्फ़र्म करो, फिर मेंटल इन्वीटेशन ट्रांसमिट करो! फिर देखो!

ओके का फोन बजा

ओके– हां ममी...

ममी– कहां हो बेटा? रोटी बन गई है!

ओके– दीपक से मिलने आया था, अभी आ रहा हूं!

ममी– उसे भी ले आ!

दीपक– ममी हैं? रोटी के लिए कह रही हैं!

ओके– हां, तुम्हें भी बुला रही हैं!

दीपक– उन्हें कहो, मैं उन्हें तकलीफ़ नहीं देना चाहता! फिर कभी आ जाउंगा।

ममी– उसे कहो, मैंने सुन लिया है, और मुझे बुरा लगा है!

ओके– ममी ने सुन लिया है, नाराज़ हो रही हैं!

दीपक फ़ोन के पास आके बोला

दीपक– आई एम सॉरी ममी! मैं आ रहा हूं... सारी मांए एक जैसी होती हैं, चलो आज तुम्हारी मां के हाथ का खाना खाते हैं!

ओके– ममी, हम दस मिनट में आ जाएंगे!

कह के फोन बंद किया और नरूला से निकल कर दोनों बाज़ार में टहलते हुए घर की ओर चले...

ओके– मेरी नेचर कुछ इंट्रोवर्ट किस्म की है, दोस्त नहीं बना सकता! यही छे लड़कों का सर्कल है, जिन में से तीन साथ पढ़े हैं, दो दुकान पर काम करवाने आए थे, अमर के साथ बचपन में खेला हूं! मैंने सोचा अगर तुम गुड़िया से जान पहचान बना सके तो शायद मैं भी जान पहचान बनाने और दोस्त बनाने का तरीका समझ सकूं!

दीपक– पता नहीं मैं भी सक्सैस्फ़ुल होता हूं या नहीं!

ओके– डाउटफ़ुल हो?

दीपक– ओके, वह लड़की मेरे इंतज़ार में आंखे बिछाए बैठी तो नहीं मिलेगी! फिर कोई कोई नॉन टैलीपैथिक हार्ड नट भी होता है!

ओके– जो भी बात हो, मुझे बताना ज़रूर!

दीपक– ओके, तुम थोड़े से इंट्रोवर्ट हो, इस चीज़ को फ़ाइट आउट करना ज़्यादा मुश्किल नहीं है।

ओके– नेचर बदलना आसान नहीं होता!

दीपक– आदत तो बदली जा सकती है ना! आदत पड़ जाए तो नेचर बन जाती है।

ओके– क्या मतलब? यह मेरी कोई आदत खराब है?

दीपक– एक हिंट देता हूं, ध्यान देना!

ओके– बताओ...

दीपक– तुम्हें याद है जब मैं पहली दफ़ा तुम्हारी दुकान पर आया था।

ओके– याद है, कोई ख़ास बात नहीं हुई थी।

दीपक– हुई थी! तुम ने नोटिस नहीं की!

ओके– क्या हुआ था?

दीपक– तुम ने मानीटर से आंखें हटा कर आंखों में क्वैश्चन मार्क लेके मेरी तरफ़ देखा था, और मैं ने स्माइल किया था!

ओके– याद है। इसमें क्या ख़राबी है?

दीपक– जब कि स्माइल तुम्हें करना चाहिए था! तुम्हारा स्माइल करना ज़्यादा ज़रूरी था, मेरा नहीं! दोस्तों की ज़रूरत है तो सब को स्माइल दो, स्माइल को वापिस स्माइल मिलती है। स्माइल दोस्ती का इन्वीटेशन है और वापिस आने वाली स्माइल इन्वीटेशन को एक्सैप्ट करना होता है! एक और बात, तुम ने देखा होगा, हंसमुख दुकानदार की दुकान ज़्यादा चलती है।

दोनों ने ओके के घर पहुंच कर लंच किया, ओके ने दीपक से कहा

– मैं में लैब से कुछ प्रिंट बनवाने हैं, मेरे साथ चलोगे?

दीपक– नहीं, तुम अपना काम करो, मैं स्टडी करूंगा।

सोमवार 3 बजे दीपक गुड़िया की गली में उसके घर को बिना देखे गुज़र गया और 'तनेजा बेकरी' पर पहुंचा, गुड़िया की पसन्द के बिस्कुट लेकर रख लिए और केक खाता हुआ वहां पड़ा अख़बार पढ़ने लगा, पंद्रह मिनट बैठने के बाद उठा और गली का चक्कर लगा कर वापिस बेकरी पर आया कुछ और लेकर खाने के बाद अपने कमरे पर चला गया। इस तरह उसने आधा घंटा गुड़िया का इंतज़ार किया।

मंगलवार 3 बजे दीपक को एक ग़रीब बच्चा भीख मांगता मिला, वह उसे 'तनेजा बेकरी' पर ले गया और ब्रैड बिस्कुट ले कर दिए, और पहले की तरह केक, बिस्कुट लेकर खाने लगा। गुड़िया अंदर आई, उसके हाथ में एक भारी बैग था, उसने दुकानदार से बिस्कुट लिए, दीपक ने उससे कहा

– आप, जो बिस्कुट खाती हैं, बहुत टैस्टी हैं।

कहते हुए उसे अपना सारा सम्मोहन डाल कर स्माइल दी, सुन कर वह थोड़ी सी मुस्करा दी।

दीपक ने दुकानदार की तरफ़ इशारा करते हुए उससे फिर कहा

– मैंने इनसे पूछा इतने टेस्टी बिस्कुट और कौन खाता है, तो इन्होंने बताया "एक प्यारी सी गुड़िया खाती है" इनकी बात पूरी होते ही एक लाइव गुड़िया आ गई।,

कहते कहते दीपक ने अपने हाथ के बिस्कुट गुड़िया को आफ़र किए, उसने मुस्करा कर कहा

– मैं ने ले लिए हैं।

दीपक ने भरपूर मुस्कराहट के साथ जवाब दिया

– बांट कर खाने से बिस्कुट ज़्यादा टेस्टी हो जाते हैं!

गुड़िया की मुस्कराहट बढ़ गई और उसने एक बिस्कुट ले लिया!

दीपक कहता रहा

– आज मेरा लक्की डे है, पहले इतने टेस्टी बिस्कुट मिले, फिर इन बिस्कुटों को खाने वाली गुड़िया मिली!,

गुड़िया ने हंसते हुए पूछा

– मेरा नाम तुम्हें अंकल ने बताया?

दीपक– नहीं, मैं ने नहीं पूछा!

गुड़िया– तो तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?

दीपक– मैंने आप का नाम कब लिया?

गुड़िया– गुड़िया मेरा निक नेम है,

दीपक– थैंक्स! दीपक, मेरा नाम दीपक है, फगवाड़ा से यहां पढ़ने आया हूं। डीएस, फ़स्ट इयर!

कहते हुए दीपक ने कुकीज़ आफ़र कीं, गुड़िया ने मुस्करा के एक ले ली गुड़िया– मेरा पीछा करते हो?

दीपक– जी नहीं, (अपनी बैस्ट स्माइल देते हुए) मैं निकम्मा लफ़ंडर नहीं हूं! पढ़ने के लिए आप के शहर में आया हूं। आपके शहर को गंदा करने के लिए नहीं आया!

गुड़िया– यहां कैसे? मेरे पीछे आए हो?

दीपक– (हंसते हुए) मैं तो आप से पहले ही यहां खड़ा आप की पसंद के बिस्कुट खा रहा था,

गुड़िया ने दुकादार से कुछ और चीजें लीं, पेमैंट की और दीपक से पूछा

– यहां किसी रिश्तेदार के पास रहते हो?

दीपक– नहीं, पीजी हूं!

गुड़िया अपना बैग उठा कर चलने लगी, दीपक उसके हाथ से बैग लेते हुए – अलाऊ मी प्लीज़! बैग भारी है, दस किलो आटा, दो चार किलो दालें, इसे मैं ले चलता हूं।

गुड़िया– मेरा घर देखना है?

दीपक– अगर आप नीम वाली गली में रहती हो, तो आपका घर मेरे घर के रास्ते में है, मैं ने दो तीन दिन पहले आपको वहां देखा था!

गुड़िया ने जवाब नहीं दिया, दोनों चलते हुए नीम वाली गली में पहुंचे, गुड़िया के घर से कुछ पहले गुड़िया ने उसे कहा

– अब तुम जाओ, कोई देख लेगा।

दीपक ने बैग उसे सौंपा और उसे बाय बाय करते हुए कहने लगा

दीपक– आप से मिल कर बहुत अच्छा लगा, यू आर ए प्लैजैंट

पर्सन! मैं कल फिर आपको देखने के लिए इस दुकान पर आऊंगा, मेरा लक फ़ेवर करेगा तो आपको फिर से देखने का चांस मिल जाएगा! थैंक्यू फ़ार द पलैज़ेंट टाइम!

गुड़िया नहीं में दाएं बाएं सिर हिला कर मुस्कराती हुई चली गई। दीपक उसे जाते हुए देखता रहा, गुड़िया ने घर तक पहुंचने तक कई दफा मुड़ कर उसे देखा।

मंगलवार 3 बजे विक्टर सड़क पर चलते हुए दीपक के शिखा को किए हाथ के इशारे याद कर रहा था, करते करते ज़्यादा ही खो गया और हथेली को सामने करके खोलने बंद करने लगा, एक लड़की उसे देखा, विक्टर ख़्यालों में खोया हुआ इशारे करता रहा, लड़की ने समझा विक्टर उसे इशारे कर रहा है, वह उसकी तरफ चल पड़ी, विक्टर उसी तरह लगा रहा

– रात को दस बजे मिलने आना,
रात को दस बजे मिलने आना...

लड़की ने अपना जूता उतारा और कहने लगी

– क्या कहा? रात को दस बजे मिलने आऊं? क्यों?

और उसे मारने को तैयार हुई, ख़तरा देख के विक्टर को होश आया, और वह उसे हथेलियां दिखाते और चिल्लाते हुए वहां से भाग गया!

विक्टर– मैंने कुछ नहीं कहा! मैंने कुछ नहीं कहा!

बुधवार 3 बजे अगले दिन दीपक बेकरी में जान बूझ कर पांच मिनट लेट पहुंचा, गुड़िया वहां खड़ी मिली, दुकानदार ने उसे देखते ही गुड़िया से कहा

– लो वह आ गया!

गुड़िया दीपक को देखते ही मुस्कराई, दीपक ने उसे 'हैलो' किया, गुड़िया ने भी 'हैलो' किया। दीपक ने खुल कर मुस्कराते हुए धीमी आवाज़ में कहा

– कल से ज़्यादा खूबसूरत लग रही हो!

डॉल— मैं मेक-अप नहीं करती!

दीपक— आपको ज़रूरत भी नहीं है!

इसके बाद कुछ देर चुप रहा, उसकी आखों में देखता और इधर उधर देखने लगता, वह भी एक सैकंड मुझे देखती और दाएं बाएं देखने लगती! दीपक ने पूछा

— आपने कुछ लेना है?

गुड़िया— नहीं!

दीपक— दुकान पर ऐसे खड़े रहना अच्छा नहीं लगता! बोलो क्या लूं?

गुड़िया— अपने लिए कुछ लेलो, मुझे कुछ नहीं चाहिए।

दीपक ने दुकानदार से कहा

— दो पैकेट ब्राउन कुकीज़ दे दीजिए! दो छोटे केक भी दे दीजिए खा लेते हैं, दो कोक खोल के दे दीजिए।

दीपक ने उसे केक और कोक दिए और दुकान के कार्नर में चलने का इशारा किया। दीपक ने पूछा

— कहां पढ़ती हो?

गुड़िया— एलएस! फस्ट ईयर!

— क्लास फैलो!

दोनों हंसने लगे!

दीपक— हमेशा ऐसे ही हंसती हो?

गुड़िया— क्यों?

— अच्छी लगती हो! हंसती रहा करो!

गुड़िया— ऐसे हंसती रहूंगी तो लोग पागल कहेंगे।

दीपक— लोग खुद पागल हैं! हम अपने हंसने पर रिस्ट्रिक्शन क्यों लगाऐं? हंसती रहो!

केक, कोक खत्म हुए,

दीपक— यह तो खत्म हो गए, अब क्या करें?

गुड़िया— भूख लगी है? कुछ और खाना है?

दीपक— कुछ तो लेना पड़ेगा, दुकान पर खाली तो नहीं बैठ सकते!

गुड़िया- दो केक और लेलो!

दो केक और लिए,

दीपक- सलोअली खाना!

गुड़िया- मैं यहां ज़्यादा देर नहीं रुक सकती, किसी ने देख लिया तो पता नहीं क्या हो!

दीपक- कहीं चल के बैठ सकते हैं?

गुड़िया- मैं कभी के घर से बाहर नहीं जाती!

दीपक- तुम्हारा मतलब है तुम्हारे घर चलें?

गुड़िया- मैं ने यह तो नही कहा! मेरा मतलब है, घर से बाहर नहीं जा सकती! कोई देख ले तो?

दीपक- और मैं तुम्हारे घर आ नहीं सकता! तुम मेरे घर नहीं आ सकतीं!

गुड़िया- क्यों?

दीपक- पीजी हूं, लड़कियों की एंटरी बैन है!

गुड़िया- बिल्कुल नहीं?

दीपक- नहीं! पहली शर्त यही थी! न घर के न घाट के!

गुड़िया- नहीं! न घर के न बाहर के!

दीपक- तो क्या हम कहीं बैठ कर थोड़ी देर आपस में बात नहीं कर सकते? हम दोनों एक ही क्लास के स्टूडैंट्स हैं, हमारे सब्जैक्ट्स कामन हैं! हम कहीं साथ बैठ के पढ़ सकते हैं?

गुड़िया- कल अपने नोट्स ले आना, अंकल से थोड़ी देर यहां बैठने की पर्मीशन ले लेंगे! अब मैं चलती हूं, कल मिलेंगे!

और वह चली गई।

वीरवार 11 बजे विक्टर ने पान वाले के पास आ कर आर्डर दिया

- एक मीठा पान, सुपर स्पैशल खुशबू के साथ..., ऐसा खुशबूदार पान बनाओ, शहर की सारी लड़कियां मेरी सांसों की महक लेने को बेताब हो कर चली आएं...

(और गुनगुनाने लगा) पान खाएं सईया हमार, सांवली सूरतिया, होंठ लाल लाल...,

तभी चार पांच लड़कों ने उसे घेर लिया, और कहने लगे

पांचों— यही है... , यही है...! पकड़ो...! मारो.!

एक ने गाली दी

— कुत्ता!

दूसरे ने विक्टर को धक्का मारा,
तीसरे ने मुक्का मारा,
चौथे ने थप्पड़ मारा,
पांचवें ने ठोकर मारी!

पहले ने अनाउंस किया

— रात को दस बजे जिसे बुला रहे थे! वह दस बजे तुम्हारा हाल पूछने आएगी, तब तक हम तुम्हारी डेंटिंग पेंटिंग कर देते है।!

और फिर से गाली, धक्का, मुक्का, थप्पड़, ठोकर का सीक्वैसं शुरु हो गया। बीच में घिरे विक्टर ने पहले चार पांच मिनट में अपने हाथ फिल्मी स्टाइल में चलाए, जब स्थिति काबू से बाहर हो गई तो ज़ोर से एक लम्बी चीख़ मारी और कुछ सैकंड तक लहराता रहा फिर एक लम्बी 'आह' भरी, आंखें फाड़ लीं और सड़क पर मुंह खोल कर हाथ फैला कर लेट गया!

पांचों लड़के डर गए, समझ बैठे, विक्टर मर गया है! सब ने बारी बारी एक दूसरे का मुंह देखा, हैरान परेशान बोला

एक— विक्टर मर गया!
दूसरा— पुलिस आएगी!
तीसरा— सब को ले जाएगी!
चौथा— सब को पीटेगी!
पांचवां— सब जेल जाएंगे!
एक— भागो!
दूसरा— भागो!
तीसरा— भागो!

चौथा– भागो!

पांचवां– भागो!

उसके बाद एक एक करके सभी अलग अलग दिशा में भाग गए!

उनके जाने के बाद भीड़ इकट्ठी हो गई, कुलदीप पत्रकार आया और मोबाइल से सब के डायॅलाग रिकार्ड करने लगा

एक– अब इसका क्या करें?

दूसरा– इसकी हैल्प करनी चाहिए!

तीसरा– पुलिस परेशान करेगी!

चौथा– हम पर इल्ज़ाम लगेगा!

पांचवां– इसे यहीं पड़ा रहने दो!

एक एक करके सारे अलग अलग दिशाओं में चले गए!

कुलदीप पत्रकार ने मोबाइल से विक्टर की फोटो खेंची।

विक्टर ने आंखें झपकीं, इधर उधर देखा, उठ कर खड़ा हुआ, कपड़े झाड़े, पानवाले के आइने में अपना चेहरा देखा, बालों में कंघी की और वापिस शाहरुख खान के स्टाइल में आ कर कहने लगा

– देखा, अकेले ने सब को भगा दिया! चले थे हम से पंगा लेने! जानते नहीं? हम हैं डान, हमें पकड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है! हम हैं विक्टर खान! लाओ, कहां है हमारा पान!!

कुलदीप ने उसकी एक और फोटो खेंची और दौड़ता हुआ चला गया।

वीरवार 3 बजे दूसरे दिन गुड़िया कुछ नोट बुक्स लेकर बेकरी पर आई, और उसने दुकानदार से बात की

– अंकल, मुझे अपने क्लास फ़ैलो से कुछ नोट्स लेने हैं, मैं उसके साथ थोड़ी देर यहां बैठ सकती हूं?

तनेजा– हां हां, बैठो बेटा, बैठो, कोई बात नहीं!

थोड़ी देर बाद दीपक बेकरी पर पहुंचा,

दोनों ने केक, कोक लिए और बेकरी की बैंच पर नोट बुक सामने लेके बैठे रहे, कुछ लिखते एक दूसरे को दिखाते, केक और कोक शेयर करते हुए धीमी आवाज़ में बातें करते रहे।

दीपक- मेरे साथ फ़िल्म देखने चलोगी?

गुड़िया ने शरारत की, पूछने लगी

- अंधेरे में किस करोगे?

दीपक- आपके शहर को गंदा करने के लिए नहीं आया! मैं चीप ऐसा नहीं हूं!

गुड़िया- इसमें चीप होने वाली क्या बात है? लोग कहते हैं, आज कल किस्सिंग हग्गिंग आम बात है।

दीपक- होगी!

गुड़िया- कहते हैं, हग्गिंग किस्सिंग प्यार दिखाने का तरीका है!

दीपक- मुझे दिखावे में इंट्रैस्ट नहीं है!

गुड़िया- मुझसे प्यार करते हो?

दीपक- शायद! श्योर नहीं हूं! लेकिन हग्गिंग किस्सिंग में इनवाल्व हो कर अपनी लाइफ़ को डर्टी पिक्चर नहीं बनाना चाहता! दो दिन पहले तुम से मिला हूं! जो फ़ीलिंग्ज़ मिली हैं, उन्हें मैला नहीं करना चाहता!

गुड़िया- फ़िल्म देखते वक्त तो आपस में ज़्यादा बात भी नहीं कर सकते!

दीपक- दो तीन घंटे पास बैठने का बहाना है! फ़िल्म देखने का आइडिया ही बेकार है, लोग लड़की के बारे में उल्टी सीधी करते हैं। मैं तो ऐसे ही तुम्हें छेड़ रहा था।

गुड़िया- लड़कियों को छेड़ते हुए शर्म नहीं आती?

दीपक- आती है, इसीलिए तो नहीं छेड़ता! मैं छेड़ सकता भी नहीं! क्यों कि आंखें कमज़ोर हैं, दस फुट से ज़्यादा डिस्टैंस से तो मैं किसी को पहचान भी नहीं सकता!

गुड़िया- मुझे दूर से देखा होता तो क्या करते?

दीपक- दूर से तुम्हें देखा होता तो पता ही नहीं चलता गुड़िया इतनी खूबसूरत गुड़िया है!

गुड़िया- कभी किसी को आंख भी नहीं मारी!

दीपक- आंखें तो दिखाई ही नहीं देतीं, किसी से आंख मिले तो उसे आंख मारूं!

कहते हुए उसने आंख मारी! गुड़िया मुस्करा दी

गुड़िया- आंखें कमज़ोर हैं, इसीलिए किसी को नहीं छेड़ते?

दीपक- छेड़ बैठता तो इतनी खूबसूरत गुड़िया के इतनी पास बैठना नसीब न होता! हो सकता है, गुड़िया मुझे अपनी चप्पल से मारने लग जाती!

गुड़िया ने चपलता से कहा

गुड़िया- चप्पल से तो नहीं, किसी और चीज़ से मारूंगी!

कहते हुए दीपक ने उसकी आंखों में देखा...

गुड़िया- मुझे प्यार करते हो?

दीपक- प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है! मेरी आंखों में देख के बताओ, हुआ है या नहीं?

गुड़िया- पता नहीं!

दीपक- मुझे भी पता नहीं! लेकिन इतनी जल्दी फ्रैंडशिप की लिमिट से आगे सोचना ठीक नहीं होगा!

इस बात से गुड़िया के दिल में दीपक के लिए बनी जगह और बड़ी हो गई!

शुक्रवार 11 बजे कुलदीप रिपोर्टर हाथ में अखबारों का पुलिंदा लिए 'ओके स्टूडियो' में आ कर ओके को एक कापी दी। तस्वीर छपी थी, विक्टर सड़क पर आंखें फाड़े लेटा है। हैडलाइन थी

भरे बाज़ार में पीट कर हत्या, किसी ने नहीं बचाया

आज दोपहर में शहर के मशहूर डुप्लीकेट एक्टर, जिन्हें सभी शाहरुख खान का डुप्लीकेट मानते हैं, को अज्ञात बदमाशों ने पीट पीट कर मार डाला, हज़ारों की भीड़ में लोग मूक दर्शक बने देखते रहे, विक्टर घंटो सड़क पर तड़पता रहा, कोई सहायता करने आगे नहीं आया!

अगली खबर में तस्वीर छपी थी-

विक्टर पानवाले के आइने में अपने बाल बना रहा है, हैडलाइन थी

महान एक्टर ज़िंदा है या भूत है?

आज दोपहर जिस महान एक्टर को अज्ञात बदमाशों ने

पीट पीट कर मार डाला था और उसे मरा समझ कर छोड़ गए थे, वह घंटों सड़क पर मुर्दा पड़े रहने के बाद हज़ारों लोगों की भीड़ के सामने उठ कर खड़े हो गए और पान खा कर गाना गाते हुए कहीं चले गए। वह पूरी तरह स्वस्थ हैं, लेकिन कहां गए हैं, पता नहीं चल पाया! यह खबर छपने तक उनकी कोई सूचना नहीं मिली है। हम उनसे सम्पर्क करने का प्रयत्न कर रहे हैं, हम उनका इंटरव्यू आप तक पहुंचाने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं!

कुलदीप ओके को अपनी प्रतिभा से प्रभावित करने का प्रयत्न करते हुए बोला — देखा मैं ने कितनी बढ़िया न्यूज़ बनाई है!

शुक्रवार 3 बजे तीसरे दिन भी दीपक और गुड़िया लिखने पढ़ने का बहाना करते हुए नोट बुक में आड़ी तिरछी लकीरें मार कर दूसरे को दिखाते रहे। दुकानदार या आने वाले गाहक आते उन्हें देखते तो दोनों पढ़ने की एक्टिंग करने लग जाते। बातें करते हुए दीपक ने गुड़िया के घर का स्कैच बना के उसे दिखाया,

गुड़िया— दीवार पर एक ईंट रखी है!

दीपक ने ईटं बनाई। गुड़िया ने नोटिस किया गाहक उन्हें देख रहे है, उसने मुझे अपनी नोटबुक दी और कहा

— मेरी नोटबुक लो, लोग देख रहे हैं। कुछ लिखने लग जाओ, (हंसते हुए) अपने कमरे का एडरैस लिख दो!

दीपक ने बनाते हुए समझाया

— यहां हमारा ज़्यादा मिलना ठीक नहीं, बेकरी तुम्हारे घर के पास है, आज नहीं कल बात फैल जाएगी, लोग मेरा नाम तुम्हारे साथ लगा देंगे! तुम और तुम्हारा परिवार बदनाम हो सकता है! मैं तो मेल हूं, आउट साइडर हूं, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा, तुम्हारी लाइफ़ इफ़ैक्टिड हो सकती है। और मेरी कॉनशैंस मुझे यह अलाऊ नहीं करती! अपना नम्बर बताओ.. हम फ़ोन से

बात कर लिया करेंगे!

गुड़िया- मोबाइल रखना मुझे एलाऊड नहीं है।

दीपक- यह तो मुश्किल हो गई। अब क्या करें?

गुड़िया- तुम तो लड़कियां फंसाने में एक्सपर्ट हो, कोई तरीका निकालो!

उसके मुंह से यह सुनना दीपक को बहुत पिंच हुआ, उसे लगा वह एक गिरा हुआ इन्सान हूं। उसने नोटिस कर लिया, कहने लगी

- मज़ाक कर रही हूं, एक्सपर्ट हो तभी तो मुझे इतनी आसानी से फंसा लिया!

दीपक ने खुद को और ज़्यादा गिल्टी कान्शैंस महसूस किया। वह कोई जवाब नहीं दे सका, उसने नोटबुक वापिस करके और भर्राई आवाज़ में फुसफुसाया

- मैं कल से नहीं आउंगा।

गुड़िया ने शायद मेरे दिल पर हुई चोट को महसूस कर लिया और कहने लगी - दीपक, मैंने दो दिन से तुम्हें हंसते नहीं देखा, तुम्हें हंसाने के लिए मज़ाक कर रही थी, तुम्हें बुरा लग गया माफ़ कर दो, प्लीज़! आई एम सॉरी!

कहते कहते उसकी आवाज़ भर्रा गई, दीपक ने उसकी आंखों में देखा, कन्सर्न दिखाई दिया तो उसके चेहरे पर मन के अंदर से उठती हुई मुस्कराहट आ गई, गुड़िया के होंटों ने भी मन में फूल खिलने का संदेश दिया। मुस्कराते हुए कहने लगी

- मान लो, तुम लड़कियां फंसाने में एक्सपर्ट हो, मुझे जो फंसा लिया है! मिलने का तरीका तुम ही निकालो!

कहते हुए उठ खड़ी हुई।

दीपक- निकालना ही पड़ेगा, तुम भी कोशिश करो, तुम भी तो लड़का फंसाने में एक्सपर्ट हो, मुझे फंसा लिया!

दोनों बेकरी से बाहर चले, गुड़िया ने चलते चलते पूछा

- नाराज़ तो नहीं?

दीपक- नहीं!

गुड़िया- कल आओगे न!

दीपक- न आउं तो?

गुड़िया घबरा के रुक गई!

दीपक- अरे मज़ाक कर रहा हूं। अपनी कसम, आऊंगा!

गुड़िया ने धमकी भरे स्वर में कहा

- नहीं आओगे, तो मैं तुम्हारे कमरे पर आ जाऊंगी!

दीपक- अरे नहीं, भूल कर भी मत आना, कमरे से निकलवा दोगी, पीजी बायज़ के कमरों पर लड़कियों की एंटरी एलाउड नहीं है!

गुड़िया आश्वस्त हो कर मुस्कराती हुई गई!

शुक्रवार 11बजे 'ओके स्टूडियो' पर सुहास आया

- क्या हाल है?

ओके- तुम सुनाओ, क्या नई ताज़ी है?

सुहास- कल हमारे साथ बड़ा तमाशा हो गया!

ओके- क्या हुआ?

सुहास- शाम को मैं और चीनी (काका) दीपक का फ़ार्मूला डिस्कस करते हुए कम्यूनिटी पार्क जा रहे थे, थाने की दीवार के पास पहुंचते ही लाईट चली गई, काका, पागल भूतनी का, चीनी, लाईट बंद होते ही ज़ोर से चिल्लाया

- 'पकड़ लो, जाने न पाए', इसकी हूक खत्म होने से पहले ही पीछे से किसी बूढ़ी औरत की चिल्लाई

- ''इधर आ तुझे बताउं...'',

काका डर गया और

- 'बचाओ, बचाओ', चीखता हुआ पूरी स्पीड से पता नहीं किधर भाग गया, मुझे भी समझ ही नहीं आया, क्या हुआ है, मैं भी घबरा के भागने लगा, अंधेरे में किसी से टकरा गया उसने इतनी ज़ोर से चांटा मारा, चाइनीज़ सैटेलाइट तक नज़र आ गए। (तभी रवि आ गया) अभी तक कान में ट्रेन के इंजन की सीटी बज रही है।

ओके सुन कर हंसते हुए लोट पोट हो गया।

सुहास- मेरी मां बहन हो गई, और तू भैसं चोर, हंस रहा है!
ने भी आग में घी डाल दिया
- किसी सोहणी मुटियार के हाथ से थप्पड़ खा के आ रहे हो? शावा शावा, जवाना शावा शावा...
सुहास- मां के पकौड़े, तेरी तो भैसं का अंडा....
कहते कहते सुहास उसे मारने को दौड़ा, अमर और काका आ रहे थे, रवि हंसते हुए भाग कर अमर के पीछे छिपने का उपक्रम करने लगा।
ओके- (हंसते हुए) इसे स्टूडियो में बंद करके पीटो!
अमर- अरे अरे क्या हो गया?
ओके- यह कल शाम का इन्सीडैंट बता रहा था, चाइनीज़ ने अंधेरे से डर के हूक मार दी और (हंसते हुए) इस चाइनीज़ को पड़ने वाला थप्पड़ बिलौरी को पड़ गया!
रवि- बाकी आके सुनुंगा! मेरे पापा आज मुझे लेने आए हुए हैं, मैं उनके थोड़े दिन के लिए घर जा रहा हूं!

शनिवार 3 बजे दीपक 'तनेजा बेकरी' पर गुड़िया से मिलने गया, तनेजा से आंख मिली तो दीपक ने उसकी आंखों में एतराज़ की झलक मिली, तो दीपक उससे कहने लगा
- अंकल, मैं कुछ दिनों के लिए घर जा रहा हूं, आपका धन्यवाद करने आया हूं!
तनेजा- कोई बात नहीं बेटा! कहां है तुम्हारा घर?
दीपक- फगवाड़ा!
तनेजा- यहां पढ़ने आए हो?
दीपक- जी हां अंकल!
और गुड़िया से कहने लगा
- अब थोड़े दिन बाद ही तुम से मिल सकूंगा!
दीपक ने कोक और केक लिया और दुकान के कार्नर में बैठ गए!
गुड़िया- कब आओगे?
दीपक- झूठ बोला है, कहीं नहीं जा रहा! अंकल को हमारे यहां बैठने पर आब्जैक्शन होनी शुरु हो गई है, मैंने उनकी

आंखों में पढ़ लिया है! हम कहीं और मिल नहीं सकते!

गुड़िया– तुम आंखें पढ़ लेते हो?

दीपक– तुम भी तो पढ़ लेती हो!

गुड़िया– तुम्हें कैसे मालूम?

दीपक– तुम्हारी आंखों में पढ़ा है!

गुड़िया– मेरे घर आ सकते हो?

दीपक– पेरैंट्स को क्या बताओगी?

गुड़िया– हम एक ही क्लास के स्टूडैंट हैं, स्टूडैंट साथ बैठ कर पढ़ सकते हैं! पापा, भाई दिन में घर नहीं होते, दोनों नौकरी पर चले जाते हैं। मैं सारा दिन अकेली होती हूं! तुम बताओ, मेरे घर आने में कोई प्राब्लम तो नहीं?

दीपक– प्राब्लम मेरी नहीं, तुम्हारी है! तुम एक रिस्पैक्टेबल लड़की हो! तुम्हारा घर है, परिवार है, प्रैस्टिज है!

गुड़िया– हमारी दोस्ती में कोई गंदगी नहीं, हमें फ़िकर करने की कोई ज़रूरत नहीं है!

दीपक– साफ़ आदमी को ही गंदगी से परहेज़ करने की ज़रूरत होती है! गंदे आदमी को गंदगी से घबराने की ज़रूरत नहीं होती!

दीपक– सिचुएशन हैंडल कर सकती हो?

गुड़िया– मैं पापा का मूड देख के पर्मीशन ले लूंगी! तुम्हें तो कोई प्राब्लम नहीं? तुम बताओ, तुम मेरे घर आ सकते हो?

दीपक– मुझे कोई प्राब्लम नहीं! आ सकता हूं! लेकिन लड़के लड़की की दोस्ती को बदनाम करने वाले लोग बातें करनी शुरु कर देंगे!

गुड़िया– मुझे लोगों से क्या लेना है? मुझे सिर्फ़ पापा की फ़िकर है! उन्हें मैं समझा लूंगी!

दीपक– मुझे भरोसा है, तुम समझा लोगी..

गुड़िया ने दीपक को बताया

– तुम्हें याद है, मेरी दीवार पर एक ईंट पड़ी थी?

दीपक बात को मज़ाक में ले गया

– कोई उठा के ले गया?

गुड़िया भी मज़ाक के मूड में आ गई

– नहीं, अभी तो वहीं पड़ी है। तुम्हें चाहिए तो ले जाओ!

दीपक– ईंट तुम ही रखो, मुझे देना है तो मुझ से पूछो, क्या चाहिए?

गुड़िया– क्या चाहिए?

दीपक– एक गुड़िया चाहिए, जिसे हर रोज़ सुबह, दोपहर, शाम को देख सकूं, जो तुम्हारी तरह मुस्कराती हो।

गुड़िया– वह गुड़िया तो अभी पढ़ रही है! बहुत वेट करनी पड़ेगी!

दीपक– वेट ही तो कर रहा हूं, और कोई चारा नहीं है।

गुड़िया– मैं सारा दिन घर में अकेली होती हूं, तुम घर आ सकते हो। हम दीवार पर रखी ईंट यूज़ कर सकते हैं!

दीपक– एक ईंट पर दोनों बैठ जाएंगे?

गुड़िया– मज़ाक मत करो, मैं ने आपस में कम्युनिकेट करने की एक स्कीम सोची है!

दीपक उठा और तनेजा से दो कोल्ड ड्रिंक और ले आया, एक सिप लेके बोला – अब बताओ क्या कह रही थी?

गुड़िया– हम दीवार पर रखी ईंटं को मेसेज की तरह यूज़ कर सकते हैं।

दीपक– कैसे?

गुड़िया– वह ईंट हमेशा वहीं पड़ी रहती है, मैं उसकी पोज़ीशन बदल कर तुम्हें मैसेज दे सकती हूं, जैसे लेटी हुई ईंट का मैसेजः 'पापा घर में हैं', करवट में हो तोः 'बेकरी पर मिलो', दीवार के पैरलल लेटी ईंटं का मतलबः 'अकेली हूं आ जाओ', कैसा आइडिया है?

दीपक को ईंटं का आईडिया पसंद आया, वह दो मिनट सोच कर हंसते हुए बोला – यार तुम ने नए 'मोर्स कोड' की इन्वैन्शन कर डाली! 'गुड़िया कोड' बन गया!

गुड़िया– मज़ाक मत करो!

दीपक- मज़ाक नहीं कर रहा, फ़ार्मूला चल सकता है!

गुड़िया- अभी ट्राई करें?

दीपक- ज़रूर!

गुड़िया- मैं घर चलती हूं, दीवार के पैरलल लेटी ईटं: 'आ जाओ', ओके? दस मिनट बाद आ जाना!

दोनों बेकरी से बाहर आए गुड़िया अपने घर गई और दीपक दस मिनट बाद घूम फिर कर उसके घर आया दीवार के पैरलल लेटी ईट देखी तो इधर उधर देख कर गेट खटखटाया, गुड़िया ने कमरे का दरवाज़ा खोल कर उसे अंदर बुला कर दरवाज़ा बंद कर के पूछा

- संकेत ठीक है?

दीपक- संकेत तो ठीक है, लेकिन खटखटाया तो सामने के मकान से कोई बाहर आ गया! खुला मिल जाता तो चुपके से अंदर आ जाता! खटखटाने की बजाय सीटी बजाना ज़्यादा सूट करेगा!

गुड़िया- तुम ने 'चमेली की शादी' देखी है?

दीपक- हां, पिछले दिनों टीवी पर आई थी!

गुड़िया- उसमें एक लड़का लड़की को मैसेज देने के लिए चूड़ी वाला बन के आता था!

दीपक- मैं भी चूड़ी वाला बन के आया करूंगा, अंदर आके तुम्हें चूड़ियां पहनाया करूंगा!

गुड़िया- मैं चूड़ियां नहीं पहनती! तुम्हें कोई और लड़की ढूंडनी पड़ेगी!

दीपक- इतना बेवकूफ़ नहीं हूं! इतनी स्वीट लड़की को छोड़ कर गलियों में चिल्लाता फिरूं, 'चूड़ी वाला आया', गुड़िया की बजाय बुढ़िया पल्ले पड़ गई तो?

गुड़िया- चूड़ी वाला बन के आओगे तो मैं अंदर नहीं आने दूंगी!

दीपक- आजकल गोलगप्पे चलते हैं! 'चटपटे करारे गोलगप्पे, सोहनी कुड़ियों के लिए फ्री गोल गप्पे'!

गुड़िया हंसने लगी

दीपक- मैं बचपन में मोर की आवाज़ निकाला करता था,

सुनाऊं? (मोर की आवाज़ निकाली)

गुड़िया हंस हंस कर लोट पोट हो गई! फिर कहने लगी

– यह आवाज़ अच्छी है! फिर से निकालना..

दीपक– 'मोर की आवाज़ निकाली'

थोड़ी देर हंसने के बाद गुड़िया ने कहा

– यहां आके बोलने लगे हो! वहां तो फुस फुस करते रहते थे।

दीपक– वहां अंकल के सामने यह सब करता तो वह दुकान से बाहर कर भगा देते!

गुड़िया उसे अपना घर दिखाने लगी, पुराना मकान चार कमरों का घर, एक ड्राइंग रूम या बैठक, एक पिता का, एक भाई का, एक गुड़िया का, बाथरूम, टायलैट और आंगन में हैंड पंप लगा हुआ दिखाने के बाद किचन में लेके गई

गुड़िया– कैसा लगा हमारा घर?

दीपक– हमारा घर भी ऐसा ही है।

गुड़िया– कौन कौन है तुम्हारे घर में?

दीपक– डैडी, ममी, छोटी बहन और मैं!

गुड़िया– हम भी चार थे, मां, पापा, बड़ा भाई और मैं! मां दो साल पहले चली गई! तुम कुछ खाओगे?

दीपक– क्या खिलाओगी?

गुड़िया– आलू मटर की सब्ज़ी है, रोटी दो मिनट में बना देती हूं!

और उसके जवाब का इंतज़ार किए बिना गैस ऑन कर ली, फ्रिज में से सामान निकाला और फुर्ती से उसके लिए खाने की थाली बना के उसे दी – उधर बैठ के खाओ मैं ताज़ा चपाती बना के लाती हूं।

दीपक– तुम अपने लिए भी बना लो, इकट्ठे बैठ कर खाएंगे।

गुड़िया– मैं लंच करने के बाद बेकरी पर गई थी।

दीपक– मेरे लिए बनाने की क्या ज़रूरत थी?

गुड़िया– मेरा दिल किया, बना लिया! तुम तो बिना कुछ खाए बेकरी पर आते हो ना!

दीपक– तुम ने कैसे गैस्स किया?

गुड़िया– पता नहीं!

दीपक– मैं यहां तुम्हारे पास खड़े होकर खाउंगा।

और उसने अपनी प्लेट वहीं शैल्फ़ पर रख ली, गुड़िया ने तीन चपातियां बनाई तो दीपक ने कहा

– इतनी काफ़ी हैं, मैं दो खाउंगा, एक तुम्हें खानी पड़ेगी।

और दोनों वहीं खड़े एक प्लेट में खाने लगे।

दीपक– सब्ज़ी टेस्टी है, तुम ने बनाई?

गुड़िया– मैं ही तो बनाती हूं, और कौन बनाएगा?

दीपक– लगता है, अच्छी वाइफ़ बनोगी!

गुड़िया– बनाओगे?

दीपक– बनाना तो चाहता हूं, स्टडी पूरी करने के बाद अगर बना सका तो तुम्हें अपनी वाइफ़ ज़रूर बनाउंगा! तुम मेरी बैस्ट फ्रैंड हो!

गुड़िया– मुझ से एक प्रामिस करो! तुम कभी मेरे साथ बदतमीज़ी नहीं करोगे! नो हग्गिंग, नो किस्सिंग, नो टचिंग! मुझे बिल्कुल पसंद नहीं!

दीपक– शादी के बाद भी नहीं!

गुड़िया– यह सब शादी के बाद का धर्म है, उससे पहले नहीं!

दीपक– मेरा वायदा है! नो हग्गिंग नो किस्सिंग, नो टचिंग! मैंने पहले ही कहा है, मैं इस दोस्ती की लिमिट से कभी बाहर नहीं जाउंगा! दैट इज़ ए प्रामिस!

दोनों खाना खत्म करके ड्राइंगरूम में आए,

दीपक– गुड़िया, कॉफ़ी बना सकती हो?

उसकी बात पूरी होने से पहले ही गुड़िया उठ खड़ी हुई,

गुड़िया– मैं सोच ही रही थी तुम बोल पड़े, दो मिनट में लाई!

थोड़ी देर में वह दो कप कॉफी ले आई! दोनों शाम तक हल्की फुल्की बातें करते हुए टीवी देखते रहे! शाम का धुंधल्का फैलने लगा, गुड़िया ने गली ख़ाली देख कर दीपक को जाने के लिए कहा, तो दीपक सीरियस हो कर कहने लगा

दीपक– गुड़िया, मैं तुम्हें एक सच्चाई बताना चाहता हूं!

गुड़िया- बताओ!

दीपक- मेरी शादी हो गई है!

गुड़िया एक दम से सन्न रह गई! बोल नहीं सकी, उसे देखती रह गई.. दीपक ने उसकी आंखों में देखा और उसकी तरफ़ थोड़ा सा झुक के कहने लगा - आज ही हुई है! और आज मैं ने उसके हाथ का बना खाना खाया और उसके साथ बैठ कर गर्मा गर्म काफ़ी हाथ में लेके टीवी देखा! उसके हाथों में जादू है, टेस्ट बनाने का, और आंखों में जादू है दीवाना बनाने का!

गुड़िया- (चमकती आंखों और स्माइल से) अपनी वाइफ़ से कब मिलवाओगे?

दीपक- स्टडी पूरी होने के बाद! तब तक बाय बाय वाइफ़!

रविवार 8 बजे दीपक अपनी लैंडलेडी के पास ब्रेकफ़ास्ट करने गया, लैंडलेडी ने पूछा

- तुम्हारी पढ़ाई ठीक चल रही है?

दीपक- हां, आंटी, चल तो रही है! एक लड़की की वजह थोड़ा डिस्टर्ब होने लगा हूं!

लैंडलेडी- प्यार करने लगा है?

दीपक- पता नहीं! हर वक्त उसी की याद आती रहती है!

लैंडलेडी- कौन है?

दीपक- स्टूडैंट है, क्लास फ़ैलो है!

लैंडलेडी- सुंदर है?

दीपक- सांवली है, पर सुंदर है!

लैंडलेडी- शादी करने की सोच रहा है?

दीपक- स्टडी पूरी करने से पहले तो सोच ही नहीं सकता!

लैंडलेडी- मुझसे कब मिलवाओगे?

दीपक- आपने मुझ से प्रामिस लिया है, यहां किसी लड़की को नहीं लाउंगा!

लैंडलेडी- अब मैं कह रही हूं न! कब लाएगा?

दीपक- उससे पूछ कर बताउंगा!---------------------

वीरवार 11 बजे दीपक 'ओके स्टूडियो' पर आया,

दीपक- ओके, कोई कैमरा दो, कुछ फोटो शूट करनी हैं!

ओके- मुझे बताओ, मैं कर देता हूं!

दीपक- प्राइवेसी मैटर है! मुझे खुद ही करनी पड़ेंगी!

ओके- मोबाइल से काम नहीं बनता?

दीपक- तुम्हें तो पता है, मैं कैमरे वाला मोबाइल नहीं रखता, मैंने पढ़ाई करनी है, मैं फालतू की खेल कूद में नहीं पड़ता!

ओके- तो ऐसे कर, अपना मोबाइल मुझे देदो, मैं अपना सिम तुम्हारे मोबाइल में लगा के अपने पास रख लेता हूं, तुम मेरा मोबाइल ले जाओ! चला लोगे?

दीपक- हां हां, चला लूंगा, मोबाइल कम्प्यूटर सब चला लेता हूं! पढ़ाई करनी है, इसलिए एंड्रायड नहीं लेता!

दीपक ओके का मोबाइल लेके चला गया।

शुक्रवार 11 बजे दीपक ने ओके को फ़ोन किया

- ओके, शाम को अपने सारे दोस्तों को तुम्हारे मोबाइल से की हुई अपनी फ़ोटोग्राफ़ी दिखाने आउंगा!

ओके- वह तो रोज़ आते हैं, फिर भी मैं उन्हें बता देता हूं!

दीपक- ओके, शाम को मिलते हैं!

शुक्रवार 3 बजे सबसे पहले अमर आया, सभी ने हंसते हुए हाथ मिलाए, अमर ने रवि से पूछा-इतने दिन ममी के हाथ के परांठे खाए?

रवि- हां यार, ममी के परांठों की बात ही कुछ और है! (सुहास से) उस दिन क्या हुआ था?

सुहास- इस पिद्दी चाइनीज़ से पूछो, इसे क्या मिर्ची लगी थी, लाइट जाते ही साला इतनी ज़ोर से चीखा, हंगामा हो गया!

अमर- काके, बताओ क्या हुआ था?

काका- यार हम आपस में दीपक की स्टेटमैंट पर चर्चा करते हुए जा रहे थे, अचानक स्ट्रीट लाइट बंद हो गई, मैं ने ऐसे

ही हूक मार दी- *"पकड़ लो, जाने न पाए!"* , पीछे से कोई देहाती औरत चिल्लाई- *"इधर आ तुझे बताउं..."*, मुझे लगा वह मुझे मारेगी! मैं वहां से भागा, अंधेरे में एक मोटे से टकरा के गिरा वह मुझे मारने को आ रहा था, तभी बिल्ला उससे टकरा गया, मोटे ने बिल्ले को हाथ टिका दिया! मैं दौड़ गया, नहीं तो वह मेरी भी हजामत कर देता! इस भाग दौड़ में मेरी नई पैंट पीछे से फट गई।

सभी जी भर के हंसे! सब ने रवि को दीपक के सैक्स एडवैंचर से लेकर दीपक को दी गई चुनौती तक की घटनाओं की जानकारी दी...

रवि- यार, मैं ने इतना बड़ा ईवैंट मिस कर दिया!

ओके- सुबह दीपक का फोन आया था, सारे दोस्तों को बुलाने के लिए कह रहा था, वह सब को अपनी कोई शूटिंग दिखाना चाहता है।

रवि- उसके पास स्मार्ट फ़ोन नहीं है।

ओके- शूटिंग के लिए कल मेरा फ़ोन ले गया था।

जगदीप और विक्टर भी आ गए,

- अरे रवि, कब आए?

रवि- कल रात को आया हूं, क्या हाल है?

विक्टर- तुम लोगों ने रवि को लेटैस्ट अपडेट दिया?

दीपक आया, उसने मोबाईल में शूट की हुई कई फोटो दिखाए, इन फोटो में 'गुड़िया' मेज़ पर कुहनी टिकाए अपनी गाल पर हाथ रखे बैठी थी और ओके की बनी दीपक की फोटो उसके पास मेज़ पर रखी नज़र आ रही थी। दीपक शर्त जीत गया था! उसने गुड़िया के साथ दोस्ती कर ली थी। सभी हैरान हो गए!

दीपक ने ओके को उठने का इशारा किया और दुकान से बाहर आ कर उसे कहने लगा

- यह तस्वीरें इस लड़की की लाइफ़ डिस्ट्रॉय कर सकती हैं, मैं यह रिस्क नहीं ले सकता! मैं कल इन तस्वीरों को डिलीट कर के तुम्हारा मोबाइल दूंगा, ठीक है?

ओके- कोई बात नहीं! इट्स ऑलराइट विद मी!

चाय वाला चाय लेकर आया, और दोनों वापिस अंदर आए, सब लोग अपने अपने कप ले कर बैठ गए

सुहास- सारे शहर के लड़के डॉल की एक झलक के लिए घटों बाज़ार में टहलते रहते हैं, लेकिन उससे बात तक नहीं कर सकते। तुमने यह कैसे कर लिया?

दीपक- पहले तो मैं तुम सब को थैंक्स करता हूं, तुम लोगों ने मुझे एक बहुत ही स्वीट गर्लफ्रैंड गिफ़्ट की है! दूसरी बात है, गर्लफ्रैंड गिफ़्ट की है! एक रिस्पैक्टेबल लड़की है, और अब मेरी गर्लफ्रैंड है, और उसकी रिस्पैक्ट में किसी को भी कोई ग़ल्त रिमार्क करने की पर्मीशन नहीं दूंगा! तीसरी बात, हमारी बकवास से उस लड़की की लाईफ़ स्पायॅल हो सकती है! उसके बारे में जो बातें होंगी यहीं तक लिमिटिड रखनी होंगी, कोई भी किसी और से इस कहानी के किसी भी पार्ट का ज़िकर तक नहीं करेगा, क्योंकि यह एक डीसैंट लड़की की इज़्ज़त का सवाल है! यू ऑल हैव टू प्रामिस मी!

ओके- मैं तुम से हंडरड पर्सैंट एग्री करता हूं! आई प्रामिस बाई गॉड!

अमर- आई प्रामिस आलसो!

सुहास- आई प्रामिस आलसो!

जगदीप- आई प्रामिस आलसो!

काका- आई प्रामिस आलसो!

विक्टर- आई प्रामिस आलसो!

रवि- आई प्रामिस आलसो!

दीपक- अब पूछो क्या पूछना है?

सूहास- तुमने यह कैसे कर लिया?

दीपक- बारह दिनों की कहानी है, मेरे पास सिर्फ़ आधे घंटे का टाइम है!

विक्टर- तुमने उसके साथ इंट्रोडक्शन कैसे की?

दीपक– उसके आने तक 'तनेजा बेकरी' पर तब तक चक्कर मारे! तनेजा के सारे बिस्कुट ट्राई किए, जब वह आई और उसने बिस्कुट लिए तो उसके बिस्कुटों की तारीफ़ की! इन्ट्रोडक्शन हो गई!

अमर– लोग लड़की की तारीफ़ करते हैं, और तुम बिस्कुटों की! तुम आदमी हो कि पाजामा?

दीपक– पाजामा मैं नहीं तुम हो, बल्कि पाजामा नहीं तुम जेल में कैदियों के पहनने वाला लकीरों वाला कच्छा हो! तुम लोग लड़कियों की तारीफ़ करना तो दूर, राह चलते उनकी बेइज़्ज़ती करते हो! लानत है तुम पर! तुम लोगों ने तो मां बाप कमाई मिट्टी में मिला दी!

अमर– इसमें मां बाप की कमाई मिट्टी में मिलाने वाली क्या बात है?

दीपक– जो उन्होंने तुम्हारी पढ़ाई पर खर्च की है! पढ़ लिख के यही सीखा है? इतना नहीं समझ सकते? लड़कियों की इज़्ज़त करोगे तो कोई तुम्हारी इज़्ज़त करेगी!

सुहास– और क्या बातें हुई?

दीपक– तुम ने पूछा था 'इंट्रोडक्शन कैसे की?', वह बता दिया, बाकी बातें बताने की क्या ज़रूरत है?

काका– कितनी देर बातें कीं?

दीपक– वहां तो पांच सात मिनट ही रुके होंगे, हां उसके घर तक उसके साथ गया था!

काका– यार, पूरी बात सुनाओ, नहीं तो पेट खराब हो जाएगा!

दीपक– फिर तो पूरी बात ही सुन लो, मैं तनेजा से बिस्कुट लेकर वहीं खड़ा खा रहा था,

गुड़िया अंदर आई, उसके हाथ में एक भारी बैग था, उसने दुकानदार से बिस्कुट लिए, दीपक ने उससे कहा

– *आप, जो बिस्कुट खाती हैं, बहुत टैस्टी हैं।*

गुड़िया नहीं में दाएं बाएं सिर हिला कर मुस्कराती हुई चली गई। दीपक उसे जाते हुए देखता रहा, गुड़िया ने घर तक पहुंचने तक कई दफा मुड़

कर उसे देखा।

दीपक- अब तो पूरी डीटेल में बता दिया, काफी है?

सुहास- नाम भी बता दिया, हाथ भी मिला लिया, घर भी ले गई, बिस्कुट भी खा गई, पांच मिनट में सब कुछ हो गया!

काका- यहां आंखें मटकाते दस साल हो गए, किसी ने वापिस आंख भी नहीं मारी!

जगदीप- सारे टिल लगा लिए, गाड़ी तिल भर भी नहीं हिली!

अमर- सभी हेयर स्टाइल धरे रह गए, सारे सूट बूट घिस गए, कुछ नहीं हुआ...

विक्टर- किसी एक्टर की एक्टिंग काम नही आती, किसी का स्टाइल काम नहीं करता...

दीपक- यारो, मेरा स्टडी का टाइम हो रहा है, मैं चलता हूं!

ओके- क्यों भई, यारों की बारात! बाकी कहानी सुननी है?

सुहास- हां, हां, क्यों नहीं? कब आओगे?

दीपक- जैसे ही मौका मिलेगा आ जाउंगा, यहां की मीटिंग का टाइम तो फिक्स है, अब तो तुम लोगों ने मेरी एक ज़िम्मेवारी और बढ़ा दी है! एक रिस्पैक्टेबल डीसैंट और खूबसूरत लड़की के सेंटीमेंट्स का ध्यान भी रखना है। उसे भी टाइम देना पड़ेगा!

कहते हुए चला गया। उसके बाहर निकलते ही काका उबल पड़ा

- एक रिस्पैक्टेबल डीसैंट और खूबसूरत लड़की के सेंटीमेंट्स का ध्यान भी रखना है। उसे भी टाइम देना पड़ेगा! क्या डॉयलाग फेंकता है! साला बना फिरता है, डीसैटं जैटंलमैन!

सुहास- यार, मैं तो उसकी उन बातों से हैरान हूं जो उसने बेकरी में गुड़िया के साथ कीं!

जगदीप- कैसे उसने बात शुरु की, *आप जो बिस्कुट खाती हैं, बहुत टेस्टी हैं।* मैं ने तो जब भी किसी से बात करने की कोशिश की है, जो कुछ सोच के जाता हूं, भूल जाता

हूं, उस वक्त क्या हो जाता है! बाद में अपना सिर फोड़ने को दिल करता है!

सुहास- यकीन नहीं होता! इतनी आसानी से किसी लड़की से कोई कैसे बात कर सकता है? सारी बातें मनगढ़ंत हैं!

ओके- उसके पास प्रूफ है, बीस फोटो शूट करके लाया है!

तभी अलार्म बजा, और सब चलने के लिए उठ खड़े हुए,

ओके- बाकी बातें कल!

सुहास ने कंक्लूडिंग डॉयलाग फेंका

- 'सारी बातें मनगढ़ंत हैं!' बाय, बाय... !

शनिवार 10.20 बजे सुबह दीपक ओके स्टूडियो पर आया उसने ओके का मोबाइल उसे दिया और उससे कहा

- गुड़िया की **एक** फ़ोटो का पीपी साइज़ प्रिंट बना दो!

ओके ने प्रिंट कर के उसे दिया**,** दीपक ने **प्रिंट** ले अपने पर्स में लगा कर मोबाइल में से गुड़िया की सभी तस्वीरें डिलीट कर दीं और मोबाइल ओके को दिया, ओके ने सिम बदल के दीपक का मोबाइल वापिस किया और दीपक गया।

शनिवार 3 बजे ओके स्टूडियो पर मित्र-मंडली की बैठक शुरु होते ही सुहास कहने लगा

- मैं कहता हूं, इतनी आसानी से किसी लड़की से कोई कैसे बात कर सकता है? सारी बातें मनगढ़ंत हैं!

ओके ने जवाब दिया

- उसके पास प्रूफ है, बीस फोटो शूट करके लाया है!

काके ने अपना शंका जताया!

काका- ऐडिट कर के लाया होगा!

ओके- मैं प्रोफैशनल फोटोग्राफर हूं, बीस तस्वीरें शूट करके एडिट करने में दस दिन लग जाते, मेरे मोबाइल में ऐसा कोई ऐप है ही नहीं! कल मेरा मोबाइल लेके गया, आज फोटो दिखा दीं!

अमर- मेरा तो दिमाग़ काम नहीं कर रहा!

विक्टर- मुझे लगता है, दीपक ने लड़की फंसाने का कोई कोर्स किया है!

सुहास- कभी तो ढंग की बात कर लिया कर शाहरुख खान के फोटोस्टैट! और ध्यान रखा कर, ज़्यादा ज़ोर लगा के बोलने से तेरी टुथपिक से बनी मेड टांगे कांपती हैं! कोर्स कर लिया होगा! एक्टर ऑफ डुप्लीकेसी!

काका- ओ यैस! डॉक्टर ऑफ इश्कोलोजी, डी.ओ.आई., मास्टर ऑफ लव अफेयरज़, एम.ओ.एल.ए., बेचलर ऑफ लव, बी.एल. !

अमर- चल ओए, मेड इन चाइना! यहां चाइना का माल नहीं चलता!

ओके- हम हिंदुस्तानी चल रहे हैं? खोटे सिक्कों की तरह अपनी ही जेबों में खनक रहे हैं, किसी और के दिल में खनकेंगे तभी तो जवानी का अहसास होगा! नहीं तो जवानी की इंतज़ार में बूढ़े हो जाएंगे!

अमर- हमें दीपक से कुछ सीखना चाहिए!

रवि- उससे कहो, हमारी ट्यूशन क्लास शुरु करले, अपनी पाकेट मनी उसको फीस में दे देंगे!

ओके- वह दोस्त है, एक दोस्त की तरह उससे बात करो, अपने दिल की बात उससे शेयर करो, जहां मुश्किल नज़र आए उसे बता कर उसकी सलाह लो।

सुहास- ओके ठीक कहता है! हमें उसके साथ इंटीमेसी बनानी चाहिए, तभी यह कुछ करने लायक बनेंगे!

ओके- हमें सैल्फ़ इंस्पैक्शन भी करनी चाहिए, हमारी शक्लें, कपड़े ठीक हैं, पढ़े लिखे हैं, अनपढ़ गंवार नहीं, तो हम में क्या कमी है?

काका- हमारी शक्ल पर कौन सी लानत पड़ी हुई है? लड़कियां क्यों हमारी तरफ़ एटरैक्ट नहीं होतीं?

सुहास- उनका दिमाग़ खराब है, अपने आप को बहुत हसीन

समझती हैं!

जगदीप- ज़रूर हमारे एटीच्यूड में कोई कमी होगी!

विक्टर- बॉडी लैंगवेज तो फ़स्ट क्लास है!

काका- हां, हां! सारे हिंदुस्तान में एक तू ही तो है, जिसकी बॉडी लैंगवेज ठीक है! बाकी सब की तो टांगे हिलती हैं! शाहरुख खान के फुल बॉडी एक्सरे हो, तुम्हारी बॉडी लैंगवेज कैसे खराब हो सकती है?

सभी ठहाके लगाते हुए लोट पोट हो गए।

जगदीप ने भी विक्टर से चुटकी ली

- तुम पांच किलो देसी घी का हलवा खाओ, चमकने लग जाओगे! तुम तो किसी को फंसा नहीं सके, शायद कोई लड़की ही तुम्हें फंसा ले!

विक्टर- बकवास बंद कर, कोयले के धुएं! तुम तो खुद को रोज़ देसी घी में फ्राई करते हो, तुम्हें कितनी लड़कियों ने हलवा बनाया?

ओके- तुम लोग आपस में बकवास करते रहना, कोई अक्ल की बात न सोचना!

काका- जैसे हम ने दीपक को लड़की से फ्रैंडशिप करने का चैलेंज दिया था, मैं भी एक लड़की पसंद कर लेता हूं, उसे कहो कि वह लड़की मेरे साथ फंसा दे!

ओके- अपने लाउड स्पीकर बंद करके बात समझो, दीपक में ओपोज़िट जैडंर के लिए कोई मैगनेटिज़्म है। उसे समझो!

रवि- वही तो मैं कह रहा था उससे कोचिंग लेते हैं! जो फ़ीस मांगेगा दे देंगे।

ओके- यह क्रिकेट या फुटबॉल नहीं है! कोचिंग से सैक्स अपील जेनेरेट की जा सकती तो सारे हीरो बन जाते!

अमर- तो समझाओ, क्या किया जाए?

ओके- वही तो करने की कोशिश कर रहा था, सुनो तो सही!

रवि कुछ कहने लगा तो अमर ने रवि के मुंह पर हाथ रख लिया। और कहने लगा - अब कोई नहीं बोलेगा, पहले सब बात सुनो!

ओके- देखो, एक बात बताओ, फ्रैंडशिप करना या लव अफ़ेयर बनाना ग्रुप में किया जा सकता है? यह प्राइवेसी का काम है, ग्रुप में नहीं किया जा सकता।

सब ने सहमति में सर हिलाया! ओके ने आगे कहना शुरु किया

- दीपक ने कैसे गुड़िया के साथ इंटीमेसी डेवेलप की? इसकी हर गहराई समझने की ज़रूरत है, वरडिंग, मूवमैंट, टाइमिंग, हर चीज़ की स्टडी करने की ज़रूरत है! क्या कहा, क्या किया, कब किया, क्यों किया, यह सब दीपक से वर्ड टू वर्ड, मूवमैंट टू मूवमैंट समझना पड़ेगा! तब हम एक्चुअल स्ट्रेटजी को समझ सकेंगे! यह काम इन्टीमेट फ्रैंडशिप से ही हो सकता है, किसी को उसका इंटीमेट फ्रैंड बनना पड़ेगा! आपस में डिसाइड करो, कौन यह काम करेगा?

ओके- मुझे एक ज़रूरी काम करके देना है, आज और कल का दिन आपस में यह डिसाईड करो, परसों उसका एक्शन प्लैन बनाऐंगे!

और उस दिन की मीटिंग खत्म हो गई।

सोमवार 3 बजे 'ओके स्टूडियो' की मीटिंग में दो नामों पर चर्चा हुई, ओके और रवि।

अमर- ओके, तुम बिज़नैसमैन हो, बात समझना, समझाना जानते हो, हमारा ख्याल है, यह काम तुम क्यों नहीं करते?

अमर- उसके सब से इंटीमेट फ्रैंड तो तुम ही हो!

ओके ने अपनी ओपीनियन सामने रखी

ओके- मैं सीखना समझना ही नहीं चाहता!

अमर- क्यों?

ओके- मैं ग़रीब मां-बाप का अकेला बेटा हूं, मैंने काम करके उनका सहारा बनना है, तुम सब को मां-बाप से बिना कोई काम किए सब कुछ मिल जाता है, तुम लोग यह लग्ज़री एफ़ोर्ड कर सकते हो, मैं नहीं!

अमर— दोस्ती और प्यार तो अमीर गरीब सभी करते हैं!

ओके— तुम में से किसी को दीपक के साथ इंटीमेट फ्रैंडशिप बनानी पड़ेगी, उसकी देख रेख में किसी लड़की को पटाए, और उसका मोडस ओपेरैंडी समझना पड़ेगा! वह जो कुछ उससे समझे वह बाकी टीम को समझाए!

जगदीप— यार ओके, यह काम तुम कर लो! हम सब मिल कर तुम्हारे नुक्सान को कम्पनसेट कर देंगे!

ओके— मैं दुकानदार हूं, टाइम डाइवोट नहीं कर सकता! और अगर किसी को पटाने के चक्कर में मुझे ही यह पागलपन चढ़ गया तो मैं दुकानदारी से भी जाऊंगा! मैं ना प्यार करना अफ़ोर्ड कर सकता हूं, ना और प्ले-बाय बनना! यह काम तुम में किसी एक को करना पड़ेगा!

सुहास— दीपक तुम्हारे साथ ज़्यादा इंटीमेट है! उसके साथ इतना इंटीमेट कोई और नहीं हो सकता!

ओके— जो कोई यह ड्यूटी लेगा, उसको दीपक के साथ मिक्स करना मैं मैनेज कर लूंगा।

जगदीप— ओके, तुम ही सजैस्ट करो, किस की ड्यूटी लगाई जाए?

ओके— रवि और दीपक दोनों पढ़ने के लिए आए हुए हैं, दोनों इकट्ठे बैठ कर स्टडी कर सकते हैं, इन दोनों में ज़्यादा इंटिमेसी हो सकती है, यह काम उसे सौंप देना चाहिए। बताओ रवि, करोगे यह काम?

रवि— मुझे एक ही प्राब्लम दिखाई देती है, ऐसी इंटीमेसी, डेवेलप करना, जिसमें सीक्रेट इज़िली शेयर किए जा सकें! वह अपने सीक्रेट मुझ से शेयर करेगा?

ओके— वह मैं मैनिपुलेट करूंगा!

रवि— वह सीक्रेट शेयर करने लग जाए तो मुझे कोई मुश्किल नहीं!

ओके— पका पकाया खाओगे! कोई बात नहीं, चलेगा! अब तुम सब ध्यान से सुनो, दीपक से अब तक की सारी कहानी

सुनाने का इसरार मैं करूंगा, उससे बात करते वक्त जब मैं उंगली से काउंटर बजाने लगूं, तुम सब यह शो करना कि इश्क करना तुममें से किसी के बस का रोग नहीं।

और उसने उंगली से काउंटर बजा के दिखाया। तभी दीपक आता दिखाई दिया, ओके- एलर्ट! दीपक आ गया! (फिर ओपन स्माइल के साथ, दीपक से) हैलो!

दीपक अंदर आया, सब के साथ हाथ मिलाया, ओके ने पूछा

- कल कहां रहे?

दीपक ने बताया

- परसों यहां से निकला, कमरे में बैठने को दिल नहीं किया, ममी डैडी से मिलने का मूड बन गया, घर चला गया, कल शाम को आया हूं।

ओके- यह अच्छा किया, कैसें हैं ममी, पापा?

दीपक- पापा तो एक स्माइल और एक हग देके मस्त हो जाते हैं, ममी सारा दिन कुछ न कुछ बना बना के खिलाती रहती है!

ओके- मां होती ही ऐसी है! और सिस्टर?

दीपक- उसके लिए यहां से समासे ले गया था, खा के खुश हुई! वह भी पूछती रहती है, कोई मिली कि नहीं?

ओके- क्या बताया?

दीपक- कुछ नहीं! कह देता हूं, तलाश जारी है! कहने की देर होती है, वह अपनी सहेलियों में से किसी को पेश करने की कोशिश करने लग जाती है।

सुहास- लगता है, वह भी तुम्हारी लव स्टोरी सुनना चाहती है!

दीपक हंसते हुए बोला

- बहनें बहुत अफ़ैक्श्नेट होती हैं! और तुम लोग कुछ ऐजीटैटिड से लग रहे हो! क्या बात है?

काका- ऐजीटैटिड? तुम्हारी पूरी लव-स्टोरी जो नहीं सुनी, ऐसे हो गया है, जैसे जेम्ज़ बोंड की फ़िल्म में लव सीन शुरु होते ही लाइट चली गई हो!

दीपक- मुझे जेम्ज़ बोंड बना रहे हो!

ओके- हमारा ग्रुप तो तुम्हें जेम्ज़ बोंड, लार्ड बायरन और बोरिस स्पास्की से कम नहीं समझता!

दीपक- लार्ड बायरन तो लव पोइट था, बोरिस स्पास्की कौन है?

अमर- ओके किसी रशियन के बारे में बता रहा था, पता नहीं कहां से नए नए कैक्टर ढूंड लाता है!

ओके- इन दोनों को दुनिया के सब से सैक्सी इन्सान माना जाता है, कहते हैं यह दोनों जिस औरत को नज़र भर के देख लेते थे, वह खुद को इनके हवाले कर देती थी! बोरिस स्पास्की रशियन था, कहते हैं ज़ार ख़ानदान के पतन का वही ज़िम्मेवार था!

काका- पता नहीं कहां कहां से पढ़ लेते हो!

ओके- तुम लोग गलियों में तांक-झांक करते हो, और मैं किताबों में! (वेटर चाय लेके आया) आज चाय की टर्न मेरी है!

और ओके ने चाय की पेमेंट की, वेटर गया, सब चाय लेकर बैठे तो ओके ने बात शुरु की,

ओके- हम सभी बड़ी इम्पेशैंस से तुम्हारे एपीसोड का बाकी पार्ट सुनने की वेट कर रहे हैं!

दीपक चाय की चुस्की ले कर कुछ सोचने के बाद कहने लगा

- सब से पहले मुझे सबसे एश्योरैंस चाहिए, किसी ने मेरे इस अफ़ेयर को लीक तो नहीं किया?

ओके- मुझे अपने दोस्तों पर यकीन है, किसी ने किसी बाहर वाले से ज़िकर नहीं किया!

दीपक ने बारी बारी सब के चेहरे को गौ़र से देखा,

- बाई नो मीनज़!
- नॉट पॉसीबल!
- नो!
- मेरी किसी से बात नहीं हुई, होगी भी तो मैं अपने प्रामिस पर पक्का हूं।

– (नहीं में सिर हिलाया)

– (नहीं में सिर हिलाया)

दीपक– तुम सब लोग माइंड न करना, लड़के लड़की की दोस्ती में सिर्फ़ लड़की की प्रैस्टिज रिस्क पर होती है! लड़के का तो कुछ बिगड़ता नहीं, लड़की का जीना मुश्किल हो जाता है! उस लड़की ने मुझ पर भरोसा किया है, मैं उसकी बदनामी का रीज़न नहीं बनना चाकता! तुम लोगों ने जो करने को कहा मैंने कर दिया! मेरे दोस्त हो, दोस्ती की डिगिनिटी बनाए रखना! प्लीज़!

ओके– दीपक, बी श्योर, हम सब फिर से प्रामिस करते हैं।

दीपक– ओके, ओके.. , मैं काउंटर पर आ जाऊं?

ओके काउंटर से हट गया और दीपक उसकी चेयर आ बैठा

दीपक– आज से रेट डबल, बोलो किसने क्या लेना है?

काका– एक दिन का बादशाह! चमड़ें के सिक्के चलेंगे!

दीपक– रेट डबल हो गए हैं, एक के बदले दो जूते मिलेंगे! पूछो क्या पूछना है?

ओके– तुमने इन्ट्रोडक्शन की डिटेल तो बता दी थी, हम लोगों को बात शुरु करने के क्लू तो मिल गए, बात आगे बढ़ाने के तुम्हारे आर्ट को समझना चाहते हैं! मेरा ख्याल है, अपनी आपबीती पूरी डिटेल में सुना दो, जिसके पास जितनी अक्ल होगी, उतना समझ लेगा!

दीपक ने गुड़िया के साथ बेकरी पर अपनी दूसरी मुलाकात पूरी डीटेल में सुना दी,

अगले दिन दीपक बेकरी में जान बूझ कर पांच मिनट लेट पहुंचा, गुड़िया वहां खड़ी मिली, दुकानदार ने उसे देखते ही गुड़िया से कहा

– लो वह आ गया!

गुड़िया– कल अपने नोट्स ले आना, अंकल से थोड़ी देर यहां बैठने की पर्मीशन ले लेंगे! अब मैं चलती हूं, कल मिलेंगे! और वह चली गई।

उसके बाद कहने लगा

दीपक– मैं ने कोई बात नहीं छिपाई, पूरी कहानी तुम सब के सामने क्लीयर है! एक भी शब्द किसी और पर लीक नहीं होना चाहिए! यह साफ़, सच्चे दिल वाली आनेस्ट लड़की है, और अब वह एक दोस्त है, इसके लिए कहा गया एक बुरा शब्द भी नीचता होगी!

ओके– मैं तुम से पूरी तरह सहमत हूं, और प्रामिस करता हूं, एक भी शब्द कभी भी किसी से नहीं कहूंगा! तुम सब भी प्रामिस करो!

सब ने समर्थन किया! दीपक बाय बाय चला तो ओके ने कहा

– तुम तो ऐसे चल पड़े हो, जैसे ड्यूटी पूरी करके कर्मचारी चल पड़ा हो!

दीपक– दोस्तों ने ड्यूटी दी थी, पूरी कर दी! अब दोस्तों को शर्त पूरी करनी है! छे फ़िल्में देखने का पूरा बजट, कैश!

ओके– अगली मीटिंग में हो जाएगा! बाय बाय तो ऐसे कर रहे हो, जैसे इसके बाद फिर कभी आना ही नहीं!

दीपक– स्टडी पर फ़ोकस कर रहा हूं, मौका मिलते ही आउंगा! सब के पास मेरा नम्बर तो है ना! कीप इन टच!

और वह चला गया। ओके मित्र-मंडली से सम्बोधित हुआ

– आज का सैशन खत्म! मैं ने भी काम करना है, बॉय! अब जेबें ढीली करो, उसकी शर्त पूरी करनी है!

सब ने पैसे निकाल के अमाउंट पूरा करके ओके को दिया!

शनिवार 3 बजे सारे दोस्त इकट्ठे हुए...

ओके– अब पूरी कहानी सुन ली, क्या समझ आया?

सुहास– तुम उस दिन किसी दो आदमियों के बारे में कुछ बता रहे थे।

ओके– लॉर्ड बायरन और रशियन?

सुहास– हां हां... क्या बता रहे थे?

ओके– यह दोनों की चर्चा हिस्ट्री में दुनिया के दो ऐसे मर्दों में

की जाती है, जिनकी सैक्स अपील को कोई औरत ओपोज़ नहीं कर सकती थी! एक इंग्लैंड की रायल फ़ैमिली का मैंम्बर था और दूसरा रूस की ज़ार फ़ैमिली का! कहते हैं, यह दोनों जिसे भी नज़र भर देख लेते थे वह लोकलाज भूल कर खुद को इनके हवाले कर देतीं थीं!

विक्टर- ऐसी क्या ख़ास बात थी उनमें?

ओके- यह मिस्ट्री लगभग दो सौ साल से अनसोल्वड पड़ी हुई है। यह क्वालिटी हमारे कैक्टर की एक स्पैसीफ़िकेशन हो सकती है, हमारी बाडी लैंगवेज या औरा हो सकती है, हमारी आवाज़ की फ़्रीक्वेंसी हो सकती है। या इन सब का कम्बीनेशन भी हो सकती है।

जगदीप- इसका मतलब है हमारा कैक्टर खराब है?

काका दूसरों को चिढ़ाने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहता था, उसने चिढ़ाया - तुम सब का कैक्टर ख़राब है!

अमर- किसी को हाथ तक लगाना तक तो अभी तक नसीब नहीं हुआ, कैक्टर पहले खराब हो गया!

ओके- अबे घोंगे! कैक्टर का मतलब है, कम्बीनेशन ऑफ़ बाडी एंड माइंड, फ़िज़ीक एंड नेचर!

सुहास- ओके यार इतनी बड़ी बड़ी बातें न किया करो, ऊपर से गुज़र जाती है!

ओके- पाखंडी धर्मगुरु लाखों लोगों को हिप्नोटाईज़ करते हैं, सब लोग उनके पाखंड को समझते हुए भी उनकी पूजा करते हैं, नोट चढ़ाते हैं! वह भी पब्लिक पर ऐसा ही जादू चलाते हैं!

सुहास ने भी उससे सहमति जताई

- वही जादू शायद दीपक भी लडकियों पर चलाता है!

विक्टर- उसे बातें करनी आती हैं, यह गुरु लोग भी तो बातें ही करते हैं!

जगदीप- वह तो है! उसको बातें करना आता है!

ओके- और हम सब का मुंह बंद है? बकबक करने में सब एक से बढ़ कर एक हैं!

सुहास- इस का मतलब तो यह हुआ, हमें बात करने की तमीज़ नहीं है? और हम सब दूरदर्शक हैं और दूरदर्शक ही रहेंगे! हमारी किस्मत लड़की फंसाना नहीं है?

काका- दीपक को बातें करने की तमीज़ है, तभी तो उसने गुड़िया को फंसा पाया है!

ओके- याद करो, पहली दफ़ा यही काम उसने बिना बात किए कर लिया था!

रवि अपनी गाल पर हाथ मारते हुए कहने लगा

रवि- हां यार, तब तो उसने लड़की का नाम तक नहीं पूछा था!

अमर ने भी अपनी हैरानी जताई

\- ज़रूर उसको हिप्नोटाइज़ करने की टेकनीक आती है!

जगदीप- दीपक लड़कियों को हिप्नोटाइज़ करने का आर्ट जानता है, हम उससे सीख सकते हैं!

ओके ने उसे चुनौती दी

ओके- उससे ट्यूशन लोगे? क्लास लगाओगे? बेवकूफ़ो, किसी एक को उसका राज़दार दोस्त बनाओ, तब शायद बात समझ आ जाए!

जगदीप ने भी जवाबी चुनौती दे मारी

जगदीप- ओके, तुम उसके राज़दार बन सकते हो, तुम उसका राज़ मालूम करो और हम सब को एजुकेट करो! हम सब कुत्तों की तरह गलियां सूंघते फिरते हैं, किसी से बात करनी नसीब नहीं होती!

ओके- मैं पहले ही बता चुका हूं, मेरी लाइफ़ का टार्गेट डिफ़रेंट है, मैं खुद को कुछ और बनाना चाहता हूं, इसीलिए रवि का नाम प्रोपोज़ किया है।

रवि- दीपक तुमसे ज़्यादा फ्री है!

ओके- दो चार दफ़ा मिलोगे तो तुम से भी हो जाएगा! तरीका

मैं बता दूंगा।

अमर अपना रौब झाड़ा

- रवि, अब बकवास बंद करो, और काम शुरु करो, हम तुम्हारा यह मिशन सपोंसर कर रहे हें, तुम्हारा समय शुरु होता है अब! शुरु हो जाओ!

ओके- रवि अब डिसाइड हो गया है, यह काम तुम करोगे! कल शाप का वीकली हॉलीडे है, रवि, तुम लंच के बाद मेरे घर आ जाओ, अपनी रीडिंग साथ ले आना, मैं तुम्हारे साथ बैठ कर पढ़ूंगा!

रवि- मेरी रीडिंग में तुम क्या पढ़ोगे?

ओके- मुझे कॉलिज जाने का चांस नहीं मिला, तुम्हारे नोट्स पढ़ के दिल बहला लूंगा! और आगे क्या करना है, उसकी प्लैनिंग भी कर लेंगे!

रवि- कॉलिज नहीं गए लेकिन हम से ज़्यादा नालिज है!

ओके- यह नॉलिज मैंने तुम सब कॉलजियट दोस्तों से चुरा चुरा कर इकट्ठी की है!

रवि- यह चीज़ तो तुमसे सीखने वाली है।

ओके- मेरी तरह तुम्हें भी दीपक की हर बात, हर मूवमेंट से दूसरों को वह इन्फ्लूऐंस करना सीखना है, जो वह लड़कियों पर चलाता है। अभी से प्रैक्टिस शुरु कर दो! अपनी रीडिंग साथ लेकर आना, अब जाओ....

रविवार 3 बजे रवि ओके के घर आया,

ओके- चलो, कम्युनिटी पार्क में चल के बैठते हैं।

रवि- वहां तो इस वक्त कुत्ते भी नहीं होंगे।

ओके- इसी लिए वहां चलना है। वहां अकेले में बैठ कर बात करेंगे!

बाज़ार से हो कर जाना था, दोनों टहलते हुए चले, रास्ते में एक लड़की को देख कर रवि ने कहा

- क्या बेकार कम्बीनेशन पहन रखा है!

एक आदमी को देख कर

– इस की चाल देखना!

एक स्कूटर पर दो लड़कियों को देख कर

– टशन मारने निकली हैं!

ओके ने उससे पूछा

– तुम सब को आब्ज़र्व कर रहे हो! मैं तुम्हारे साथ हूं, मुझे तो तुमने आब्ज़र्व नहीं किया!

रवि– नहीं, मैंने नोटिस नहीं किया।

ओके– अब ध्यान से समझना, जब भी तुम्हारे दीपक साथ हो तो तुम ने उसकी हर मूवमैंट को आब्ज़र्व करना है! देखोगे तो सीखोगे! उसकी चाल, आंखों की, बॉडी की मूवमेंट, बोलने का स्टाईल, आवाज़ की मोड्यूलेशन हर चीज़ तुम्हारे दिमाग़ में रिकार्ड होनी चाहिए, ताकि ज़रूरत पड़ने तो उसकी कॉपी कर सको!

रवि– साथ चलते वक्त को कोई अपने साथी को नहीं देखता! सभी इधर उधर देखते हुए बातें करते हैं।

ओके– तभी तो हम दूसरों की यूज़फ़ुल क्वालिटीज़ को अडाप्ट नहीं कर सकते! कम्युनिकेशन में आई कांटैक्ट बनाए रखने से हर बात माइंड में रजिस्टर हो जाती है!

रवि– यह तो नेचुरल है।

ओके– तुम्हें दीपक की हर बात, हर एक्शन पर इसी तरह ध्यान देना है। तभी तुम उसकी उस स्पैशिलिटी को समझ सकोगे जिस से दीपक लड़कियों से इतनी जल्दी इंटीमेट हो जाता है!

पार्क में पहुंच कर ओके एक पेड़ के सहारे बैठ गया और रवि को इंसट्रक्ट किया

– मेरे सामने बैठो, अपना फ़ेस मेरी तरफ़ रखो! और अपनी कंस्नट्रेशन मुझ पर फ़ोकस करो!

रवि– इधर उधर नहीं देखना है?

ओके– नहीं! एक टक मुझे देखो, एक सैकंड के लिए भी आई

कांटेक्ट ब्रेक नहीं होना चाहिए! मेरी हर मूवमेंट स्टडी करो, हर थॉट को रीड करने की कोशिश करके मुझे बताना, मैंने क्या किया? क्या सोचा?

रवि- क्या सोचा? वह कैसे पता चलेगा?

ओके- तुम्हें जो पता चले, तो मुझे समझाना!

कहके उसने आंखें बंद कर पेड़ के तने से अपना सिर टिका लिया।

रवि- तुम ने तो आंखें बंद करलीं!

ओके- मैं अपना काम कर रहा हूं, तुम्हें जो काम बताया है, तुम वह करो!

कुछ देर तक तो रवि असमंजस में उसे देखता रहा, उसे कुछ समझ नहीं आया क्या करे, फिर वह समझने का प्रयास करने लगा कि ओके क्या सोच रहा है? कुछ देर बाद उसने देखा ओके ने एक सैकंड के लिए उसे देख कर आंखें बंद कर लीं, पांच सात मिनट के बाद ओके ने उसे इंस्ट्रक्ट किया

- अब तुम अपनी रीडिंग खोलो और इस पीसफ़ुल एट्मास्फ़ियर में थोड़ी देर स्टडी करो!

रवि- तुम मुझे यहां स्टडी करवाने लाए हो?

ओके- सही समझो! जितनी देर में तुम्हारा फ़ोकस बनेगा, उतनी देर में मैं अपना थॉट प्रोसैस ट्रैक पर ले आउंगा!

रवि पढ़ने लगा, ओके सोचने लगा, थोड़ी देर में रवि स्टडी में मगन हो गया, बहुत देर तक खमोशी रही... ओके रवि की मूवमैंट्स आब्ज़र्व करता रहा, लगभग आधे घंटे बाद रवि का ध्यान बंटा तो ओके की ओर देखा, ओके उसे देख कर मुस्कराया और पूछने लगा

- कैसा लगा यहां बैठ के पढ़ना?

रवि- ठीक है!

ओके- बोर तो नहीं हुए?

रवि- नहीं!

ओके- अकेलापन खलता है?

रवि- अकेला होता तो ज़रूर खलता! आज तो तुम साथ हो!

ओके- पढ़ने में ध्यान लगा?

रवि- हां, फ़ोकस बन जाता है!

ओके- मेरे होने से कोई डिस्टर्बेंस हुई?

रवि- नहीं, बल्कि अगर अकेला होता शायद इतनी देर न रीडिंग कर सकता!

ओके- दीपक और तुम, दोनों पढ़ने के लिए यहां आए हो, आज के बाद तुम उसके साथ इकट्ठे बैठ के पढ़ना शुरु करो, उसके साथ यहां आया करो, एक दो घंटे रोज़ साथ बिताओ, जल्दी आपस में फ्री हो जाओगे!

रवि सोचने लगा, दो तीन मिनट के बाद उसने जानना चाहा

- दीपक को फ़ोन करूं?

ओके- ज़रूर करो, उसे बताओ, तुम्हें यहां अकेले बैठ कर पढ़ना कैसा लगा है, मेरा ज़िकर न करना, उसे यहां बुलाओ, अगर आ जाए बहुत अच्छा, नहीं तो उसके कमरे पर जाने के लिए एक्सक्यूज़ बनाओ, इकट्ठे बैठने पर इन्सिस्ट करो! किसी भी तरह रोज़ मिलने, घंटा दो घंटे साथ रहने की स्कीम बनाओ। खाने पीने में हाथ खुला रखना पड़ेगा, खर्चा कर लोगे?

रवि- पाकेट मनी में ही गुज़ारा करना पड़ेगा!

ओके- फ़िकर मत करो, हम सब मिल कर तुम्हें फ़ाइनांस करेंगे! तुम अपने माइंड को फ़ोकस कर के दीपक को फ़ोन करो! स्पीकर ऑन कर लेना...

रवि कुछ देर फ़ोन हाथ में लेके शून्य में देखता रहा, फिर दीपक का नम्बर मिलाया... दीपक ने उठाया

- हैलो.... कौन?

रवि- रवि बोल रहा हूं, पहचाना?

दीपक- रवि? अरे क्या बात है? ठीक तो हो?

रवि- ठीक हूं, कम्यनिटी पार्क में बैठा पढ़ रहा था, तुम्हारी याद आ गई तो फ़ोन कर दिया...

दीपक- अकेले हो?

रवि- हां, कमरे में बोर हो रहा था तो पार्क में आ बैठा...

दीपक- पार्क तो इस वक्त सुनसान होगा!

रवि- कुत्ते भौंक रहे हैं!

दीपक- आवाज़ तो सिर्फ़ तुम्हारी आ रही है!

रवि- यार ऐसे ही कह दिया, यहां तो कुत्ते भी नहीं हैं!

दोनों हंसने लगे, ओके भी मुस्कराया!

दीपक- मेरा भी कमरे में बैठने का दिल नहीं था सो साइबर कैफ़े में आ गया... ओके की दुकान भी बंद है!

रवि- यहीं आ जाओ, मैं भी अकेला हूं...

दीपक- दस मिनट में आ रहा हूं! खाने पीने के लिए कुछ ले आऊं?

ओके ने 'नहीं' में उंगली हिलाई, और दुकान की तरफ़ इशारा किया!

रवि- नहीं, यहां पास में ही एक दुकान है, चाय, काफ़ी, समोसा, ब्रेड-पकौड़ा, कोल्ड-ड्रिंक सब मिलता है!

दीपक- पूरा मीनू गिनवा दिया, या अभी और भी है? ज़्यादा बोर हुए पड़े हो, या भूख लगी है?

रवि- लगी तो है, अकेले खाने का मन नहीं किया!

दीपक- अभी आ रहा हूं, चल पड़ा हूं!

और फोन बंद किया।

ओके- यह लो थोड़े पैसे रख लो, खर्चा तुम करना! मैं चलता हूं, नहीं तो ट्रैक डाइवर्ट हो जाएगा!

और ओके वहां से चला गया। रवि पार्क के गेट पर आया, दीपक आया और दोनों दुकान से अपने लिए खाने पीने का सामान लेके पार्क में आ बैठे। दीपक के हाथ में एक मैग्ज़ीन देख कर रवि ने पूछा

- यह पढ़ रहे थे?

दीपक- साइबर कैफ़े वाले से दोस्ती हो गई है, उससे उठा लाया, टाइम पास!

रवि- सब से दोस्ती कर लेते हो?

दीपक- दो मिनट में! टेलैंट डेवेल्प किया है।

रवि- टेलैंट डेवेल्प किया है? नेचुरल नहीं है!

दीपक- नहीं! पहले मैं बहुत इन्ट्रोवर्ट था, अपने आप में ही गुम रहता था, कोई दोस्त यार नहीं था, बहुत लोनली और बोर था!

रवि- अब तो नहीं!

दीपक- पहले ऐसा नहीं था, पहले मैं खुद को किसी कोन्टेनर में सील्ड महसूस करता था, बंद, घुटा हुआ, किसी घोंघे की तरह! किसी से बात करने की हिम्मत नहीं होती थी!

रवि- एक दम से कैसे चेंज हो गए?

दीपक- हुआ नहीं, किया है। मुझे इस ट्रांसफार्मेशन की ज़रूरत थी, मैं ने खुद अपने आपको उस बंद डिब्बे में से बाहर निकाला है!

रवि- किसी साइकॉलोजिस्ट से कन्सल्ट किया था?

दीपक- नहीं, खुद को खुद ही रिपेयर किया! इस फिनोमिना पर एक बुक पढ़ने को मिली, 'दोस्त कैसे बनाएं?' उस किताब का हर शब्द बार बार पढ़ा, और अपना गाइड लाइन बना लिया, ज़बरदस्ती अपने करैक्टर को मोल्ड किया, अपनी नेचर से हर वह कमी निकाल कर बाहर फेंक दी, जिस की वजह से घुटन होती थी! अब तो दो मिनट में दोस्ती कर लेता हूं, एक स्माइल और हैलो! बस बातें शुरु!

रवि- क्या फ़ार्मूला है?

दीपक- क्यों? आज पढ़ने का मूड नहीं है? वैसे तो यह चीज़ भी लाइफ़ में बहुत इम्पोर्टेंस रखती है!

रवि- मुझे भी दोस्त बनाने का फ़ार्मूला समझा दो!

दीपक- चलो बाज़ार का एक चक्कर लगाते हैं!

और दोनों चले!

दीपक- वह फ़ार्मूला हमारे आप पास बिखरा पड़ा है, हर चेहरे, हर जिस्म में नज़र आता है, हम देखते नहीं, अपने आप में गुम रहते हैं।

रवि- इतनी डिफ़्फ़ीकल्ट बातें समझ नहीं आतीं। मुझे

समझाओ, मैं दोस्त बनाने के लिए क्या करूं? मैं बहुत सारे दोस्त बनाना चाहता हूं!

दीपक- वही जो मुझे बुलाने के लिए अभी किया था!

रवि- फ़ोन किया था!

दीपक- फ़ोन करने के लिए क्या किया था?

रवि- फ़ोन निकाला था!

दीपक- मैंने कहा था ना बिखरा पड़ा है देखते नहीं! तुमने सोचा होगा, अकेला हूं 'किसी से बात करनी चाहिए!'

रवि- हां!

दीपक- फिर सोचा होगा 'किस से करनी चाहिए?'

रवि- हां!

दीपक- यह सोचा होगा 'क्यों करनी चाहिए?'

रवि- नहीं! बात करने के लिए, 'क्यों करनी है?', सोचने की क्या ज़रूरत है?

दीपक- तुम जानते हो, समझते नहीं! बात करने के लिए, 'क्यों करनी है?', सोचने की ज़रूरत नहीं है?, बात करो, सोचने की ज़रूरत नहीं है। सोचने लग जाओगे तो बात नहीं कर सकोगे। बात करोगे तो बात आगे बढ़ेगी। सोचते रह जाओगे तो सोचते ही रह जाओगे!

रवि- बिना सोचे समझे बोलने लग जाएंगे तो दोस्ती की बजाय दुश्मनी हो जाएगी!

दीपक- बिना सोचे बात करो, बिना अक्ल के बात करने को किस ने कहा है? ऐसी बात करो जो सुनने वाले को अच्छी लगे, वह मुस्करा पड़े! मुस्कराहट ही हर दोस्ती का दरवाज़ा खोलती है।

रवि- मैं ने कहीं एक कोटेशन पढ़ी थी 'कीप स्माइलिंग एट एवरीबॉडी, यू डोंट नो, हू विल फ़ाल इन लव विद यू'

दीपक- बिल्कुल ठीक, कोई सामने हो या ना हो, हर वक्त मुस्कराओ, सबको अच्छे लगोगे! यही पापुलर होने का पहला फ़ार्मूला है। मुस्कराते रहो, हंसने हंसाने की बातें

करते रहो! हंसमुख चेहरे ही सब को अच्छे लगते हैं, उदास या सड़ी हुई शक्लें किसी अच्छा को नहीं लगतीं!

रवि मुस्कराने की कोशिश करता रहा और दीपक हमेशा की तरह स्माइलिंग और रिलैक्स्ड फ़ेस लिए साथ चलता रहा! बाज़ार पार किया ओके के घर के पास पहुंच कर दीपक ने उससे पूछा

– तुम तब से स्माइल कर रहे हो, अपनी स्माइल का दूसरों पर क्या इफ़ैक्ट महसूस किया?

रवि– ऐसे लगता है, जैसे सभी स्माइल कर रहे हैं!

दीपक– इस स्माइल को अपनी अपनी नेचर बना लो, हर वक्त मुस्कराओ, ऐसी आदत बनाओ, कि नींद खुलते ही ऑटोमेटिकली चेहरे पर मुस्कराहट आ जाए! तुम सब को अच्छे लगने लगोगे!

ओके फ़स्ट फ़्लोर पर अपने माता पिता के पास रहता था, ओके के घर के नीचे से पहंचे तो रवि ने दीपक को ओके का घर दिखाया

– यह देखो, यह ओके का घर है!

दीपक– बुलाओ उसे!

रवि ने ओके को आवाज़ दी, ओके खिड़की में आया और दोनों को ऊपर बुलाया, दीपक ने रवि को याद करवाया

– लगातार स्माइल करते रहना, देखते हैं, तुम्हारी स्माइल में कितना मैजिक है?

ओके ने अपने ममी, पापा को बताया

– यह दीपक और यह रवि है, दोनों यहां पीजी हैं, यहां पढ़ने के लिए आए हुए हैं,!

ओके की ममी और पापा बड़े प्यार से उनसे मिले, ममी ने उन को मीठा बना के खिलाया और चाय पिलाई। दोनों जाने लगे तो ममी ने उनसे पूछा – खाना बाज़ार से खाते हो?

दीपक– जी हां, आंटी...

ममी– बाज़ार का खाना अच्छा नहीं होता।

दीपक– ऐसी बात नहीं, ओके की दुकान के पास एक ढाबा है, वहां बिल्कुल घर जैसा खाना मिलता है।

ममी- मां के हाथ का बना खाना हो तो यहां आ के खा लिया करो!

दीपक- जी ममी, ज़रूर आउंगा!

और उसने ममी के पांच छुए, रवि भी झुक गया, ममी ने दोनों के सर पर हाथ फेरते हुए कहा

- बड़े प्यारे बच्चे हैं, कितने हंसमुख हैं!

रास्ते में दीपक ने उसे बताया

- ममी ने तो तुम्हारी स्माइल को पास कर दिया!

रविवार 8 बजे शाम ओके ने रवि को फ़ोन किया,

- क्या कर रहे हो?

रवि- रोटी खाने बाज़ार आया हूं...

ओके- दीपक के साथ कैसा रहा?

रवि- अच्छा रहा, उसने एक बड़ा मज़ेदार टिप दिया, कहता है, हर वक्त स्माइल करते रहो!

ओके- तुम ने कोशिश की?

रवि- हां, की!

ओके- क्या रिस्पांस मिला?

रवि- कई दफ़ा तो ऐसे लगा, मुझे देखने वाला भी स्माइल पास कर रहा है।

ओके- गुड! कीप इट अप! अभी किसी को दीपक के साथ हुई कोई बात मत बताना! वह तुम्हें स्माइल करते देख कर तुम्हारा मज़ाक उड़ाएंगे! कुछ कहें तो बात टाल देना! तुम दीपक को चिपके रहो, खर्चे की चिंता मत करना, इसके एक्सपैन्सिज़ हम सब मिल कर ईकुअली शेयर करेंगे! मैं उनसे पैसे लेकर तुम्हें देता रहूंगा!

रवि- चंदा इकट्ठा करोगे?

ओके- नहीं, अपनी पर्सनैलिटी ग्रूमिंग की फ़ीस पे करेंगे!

रवि- पर्सनैलिटी ग्रूमिंग?

ओके- हां, पर्सनैलिटी ग्रूमिंग ही है! यह ग्रूमिंग सारी उमर तुम्हारे

काम आएगी! रवि, मैं हर मिनट अपनी ग्रूमिंग करता रहता हूं, मैं सब की यूज़फुल क्वालिटीज़ खुद में अडॉप्ट करने की कोशिश करता रहता हूं! देख लेना, दीपक के यह एडवैंचर हमारे लिए गॉड-गिफ़्ट साबित होंगे!

सोमवार 3 बजे 'ओके स्टूडियो' पर सारी मित्र-मंडली बैठी थी... ओके उन्हें बता रहा था,

– दीपक ने गुड़िया के साथ जिस डॉयलॉग से ओपनिंग की थी, कल हमारे जैकी चैन ने उस डायलॉग की पैरोडी बना दी!

सुहास ने उसे की पीठ पर जो़र से हाथ मारते हुए उसे चिढ़ाया

– यह खुद ही जेकी चैन की पैरोडी है!

काका– तुम अपने आप को टाम क्रूज़ समझते हो?

कहते हुए उसने भी जवाब में सुहास को मुक्का मार दिया!

सुहास– समझता नहीं, रियैलिटी में वैसा ही हूं, सेम टू सेम! तुम्हारी आंखें खराब हैं दिखाई नहीं देता!

अमर– अबे टाम क्रूज़ के फ़ोटोस्टैट! बकबक बंद कर! काके तू बता, ओके क्या कह रहा है? कल क्या हुआ?

काके ने रविवार की अपनी आपबीती सुनाई,

– *मैं बाज़ार में जा रहा था मझे अपने पसंद की एक लड़की गोलगप्पे खाती नज़र आई, मुझे दीपक का गुड़िया से इन्ट्रोडक्शन के टाइम का पहला डॉयलाग याद आया 'आप जो बिस्कुट खाती हैं, बहुत टैस्टी हैं।'*
मैंने सोचा मैं भी वही डायलॉग ट्राई करके देखता हूं,
मैं दीपक के स्टाइल में गोलगप्पे के स्टाल पर गया, गोलगप्पे वाले ने कटोरी दी और मुझे भी एक गोलगप्पा दिया, खाने के बाद मैंने फुसफुसा के कहा
'आप जो गोलगप्पा खा रही हैं, वह बहुत टैस्टी हैं।'
लड़की ने सुन लिया, उसने मुझे एक नज़र देखा और अगला गोलगप्पा मुंह में डाल लिया। लड़की ने सुना नहीं था, इसलिए थोड़ी ऊंची आवाज़ में कहा

'आप जो गोलगप्पा खा रही हैं, वह बहुत टैस्टी है।'
लड़की ने मुझे ग़ौर से देखा और अगला गोलगप्पा मुंह में डाल लिया। मैंने इस दफ़ा थोड़ी और ऊंची आवाज़ में कहा- 'आप जो गोलगप्पा खा रही हैं, वह बहुत टैस्टी है।'
लड़की ने मुझे घूर कर देखा और गोलगप्पे वाले को और चटनी डालने का इशारा किया, उसने चटनी डाल कर अगला गोलगप्पा दिया, लड़की ने मुंह में डाल लिया। और माथे पर बल डाले मुझे घूरने लगी, मुझे लगा लड़की ने सुना नहीं, वह इस दफ़ा थोड़ी तेज आवाज़ में बोला- 'आप जो गोलगप्पा खा रही हैं, वह बहुत टैस्टी है।'
लड़की बोली- तुम्हें भी खिला देती हूं!
गोलगप्पे वाला मुस्करा के काके से बोला
-खुशकिस्मत हो, मैडम तुम्हें गोलगप्पे खिलाएंगी!
लड़की कहने लगी
लड़की- मैं आज जी भर के गोलगप्पे खाउंगी, तुम भी मेरे साथ बराबर खाओगे! मुझ से दोस्ती जो कर रहे हो, ट्रीट तो बनती है! पहले अपनी जेबें देख लो, तुम्हारे पास कितने पैसे हैं?
मैंने सारी जेबें खाली कीं, एक सौ चालीस निकले, लड़की ने पचास रुपए अपने ब्लाउज़ में डाले और बाकी दुकानदार को देती हुई बोली
- यह लो आज की पेमेंट! सारे पैसों के गोलगप्पे डबल डोज़ करारे करके हमें खिलाओ। मुझे कहा
- मुझ से दोस्ती कर रहे हो, मेरी पसंद के गोलगप्पे खाओ...,
और हंसते हुए खाने लगी। उसने खुद तो तीन चार ही खाए, मुझे खिला खिला के मर्डर करने लगी, तेज़ मिर्चों से मेरी हालत खराब हो गई, लेकिन हंसने की कोशिश

करता रहा, लड़की मेरी शक्ल देख देख कर हंसती रही, गोलगप्पे वाले ने बताया
- पैसे पूरे हो गए, अब पानी पी लो...
और उसने पानी डाल के दिया, लड़की तो आराम से पी गई, मेरे तो कानों में आग लग गई, धुआं निकलने लगा! लड़की खा पी के हंसती हुई चली गई और मैं 'सी सी' करता हुआ उसे जाते देखता रहा!
मैंने गोलगप्पे वाले से पूछा
- इस लड़की पर मिर्चों का असर नहीं होता?
दुकानदार- मिर्चें लड़कियां खाती हैं, और लगती लड़कों को हैं!
मैंने उससे पूछा- कुछ मीठा है?
दुकानदार- यह दुकान लड़कियों के लिए है! यहां मीठा नहीं मिलता!
और मैं रुमाल मुंह में डाले 'सी सी' करता हुआ वहां से आया! अभी तक मुंह से लेकर आउटलैट तक मिर्चें लगी हुई हैं! कल से लूज़ मोशन लगे हुए हैं, पांच सौ रुपए दवाई पर खर्च हो गए, ममी पापा की डांट खाई अलग!

सभी पागलों की तरह हंसने लगे! वेटर चाय देने आया, अमर ने ओके से पूछा

- रवि की क्या प्रोग्रैस है?

ओके ने बात अनसुनी की तो अमर ने फिर पूछा

- रवि नहीं आया?

ओके- मैं ने रवि को दो तीन दिन के लिए यहां आने से मना किया है।

अमर- क्यों?

ओके- मैं चाहता हूं वह पूरी अटैन्शैन से दीपक की बातों पर ध्यान दे!

सुहास- तुम क्या समझते हो? वह हम से मिल कर वह डिस्ट्रैक्ट हो जाएगा?

ओके- हम सब हर बात का मज़ाक उड़ाते रहते हैं, हो सकता है, यह सारी बात भी मज़ाक में उड़ जाती! इस लिए मैंने उसे रोक दिया !

अमर- ठीक किया! हमारी चंडाल चौकड़ी में सभी एक से बढ़ कर एक सैलीबिरेटिड कार्टून है। एक है, (काका) 'देसी जैकी चैन' ने अभी अभी अपना कारनामा सुनाया है, दूसरा है, (विक्टर) 'शाहरुख खान का फोटोस्टैट', ज़रा सी तेज़ हवा चल पड़े तो इसके उड़ जाने का ख़तरा पैदा हो जाता है! तीसरा यह है, (सुहास) 'सपनों का सैकंड लैफ्टीनैंट', भर्ती हो भी गया तो उम्मीद यही है, बंदूक की आवाज़ सुनते ही शहीद हो जाएगा!

काका- चौथा है, (अमर) एक कप दूध पी के छाती नाप के देखता है बढ़ी कि नहीं! और यह जगदीप, इसे तो किसी का जोक ही समझ नहीं आता!

अमर- इसे तो खुद अपनी बात समझ नही आती! इसकी गिनती करनी बेकार है।

जगदीप- मेरी गिनती तुम कार्टूनों में नहीं होती! ओके के बारे में क्या ख़्याल है?

ओके- मेरा सबूत तो यह है, इतने कार्टून मेरे दोस्त हैं!

जगदीप- और रवि?

विक्टर- वह! फटा पोस्टर निकला हीरो! उसको तो अपना ही पता नहीं, उसने करना क्या है? सब का मुंह देखता रहता है।

सभी हंसते हुए चाय पाने लगे

ओके- मैं ने रवि को दीपक के साथ इंटीमेसी बढ़ाने पर लगा दिया है, कल उसने दीपक के साथ तीन घंटे बिताए, दोनों शाम को मेरे घर चाय पी कर गए। मैंने कल उसे खर्चे के लिए सौ रुपए दे दिए थे।

विक्टर- क्यों दिए?

ओके- यह प्रोजैक्ट को सारी मित्र-मंडली मिल कर सपोंसर

करना पड़ेगा! सब को कंट्रीब्यूट करना पड़ेगा! वह जो नौलिज गेन करेगा, वह हम सब के लिए बेनेफ़िशल है, ओके? मैं नहीं चाहता, रवि की पाकेट मनी पर उसका बर्डन पड़े। तुम्हें ऑब्जैक्शन है तो प्रोजैक्ट से बाहर हो जाओ, प्रोजैक्ट रिपोर्ट नहीं मिलेगी!

अमर ने विक्टर को गुद्दी से पकड़ कर हिलाया

– ओए कबाब में सिंगल हड्डी! कभी अकल की बात भी कर लिया कर! ओके, इस एक्सरे की परवा मत करो! दस पंद्रह रुपए रोज़ एक आदमी के हिस्से में आएंगे, नोमीनल सी बात है, यह लो मेरे हिस्से के सौ रुपए अभी रख लो! जब और ज़रूरत हो बता देना!

सब ने पैसे निकाल कर ओके को दिए। तभी 'खुराना स्टडी सैंटर' के रमेश खुराना पांच छे स्टूडैटंस को ले के आए

खुराना– ओके, बच्चों की पासपोर्ट साइज़ फोटो बनाओ! कितने पैसे लोगे?

ओके ने काउंटर से बाहर आकर उनके पांव को हाथ लगाया, और कहने लगा – मास्टर जी, आप से पढ़े हैं, पैसे ले कर आपकी इन्सल्ट नहीं करूंगा।

खुराना– और मैं बिना पैसे काम करवा के अपनी इन्सल्ट नहीं करवाउंगा! बच्चों को पच्चीस पर्सैंट डिस्काउंट देना पड़ेगा!

ओके– एक शर्त है, आपको भी अपनी फ़ोटो बनवानी पड़ेगी!

खुराना– मैं फ़ोटो बनवा के क्या करूंगा? पासपोर्ट बनवाउं? विदेश चला जाऊं?

ओके– मैं आपको प्रैज़ैंट करना चाहता हूं, आप पहली बार मेरी दुकान पर आए हैं!

खुराना– तुम अपना रांझा राज़ी कर लो यार!

ओके ने अपने दोस्तों की इंट्रोडक्शन करवाई

– सर, यह मेरे दोस्त हैं, सुहास, आर्मी में जाना चाहता है। अमर, अपनी फ़ैक्टरी चलाएगा। विक्टर, एक्टर बनना

चाहता है। यह अभी काका है कुछ सोचा नहीं, पढ़ने के बाद सोचेगा। जगदीप, तस्वीरें बनाना सीख रहा है।

मास्टर जी– सभी कालिजियेट हैं, और तुम मिडल स्टैंडर्ड तक आके अटक गए हो!

ओके– पापा कहते हैं पढ़ाई करके मैं नौकरी करूंगा और दुकान करके बिज़्नैसमैन बनूंगा!

मास्टर जी– पढ़ लिख के दुकान करोगे तो बड़ा बिज़्नैस करोगे!

ओके– अब तो दुकान बना ली, मास्टर जी, फ़ुलस्टॉप लग गया है, अब तो आपकी शिक्षा से ही काम चलाना पड़ेगा!

ओके स्टूडियो में स्टूडैंट्स की फ़ोटो शूट करने गया और मास्टर जी मित्र–मंडली से बातें करने लगे!

वीरवार 3 बजे रवि दीपक दो घंटे से दीपक के कमरे में बैठा था, दोनों पढ़ रहे थे, दीपक ने नोट बुक बंद की

– अच्छा किया, तुम यहां आ गए, स्टडी में दिल लगा रहा, चलें, लंच कर लें!

दोनों चले, नीम वाली गली में गुड़िया के घर के पास से गुज़रते हुए दीपक ने नज़र बचा कर ईंट की पोज़ीशन देखी, रवि ने पूछा

– गुड़िया से नहीं मिलोगे?

दीपक– यह मेरा पर्सनल मैटर है!

रवि– सीक्रैट रखना है?

दीपक– एब्सोल्यूटली! जितना ओपन हो गया सो हो गया, फर्दर नहीं!

रवि– ऐसा क्यों? दोस्तों से भी सीक्रैट!

दीपक– दोस्तों ने एक चैलेंज दिया था, उससे दोस्ती कर के दिखाओ! दोस्ती करते करते प्यार हो गया है! अब उसकी इज़्ज़त अपनी इज़्ज़त से ज़्यादा प्यारी हो गई है! अब कोई और उसका नाम भी लेगा तो दिल में चुभेगा!

रवि– ओह!

और वह खामोश हो गया, थोड़ी देर बाद चलते चलते रवि ने पूछा

– एक बात बताओ, प्यार करने का भी कोई फ़ार्मूला है?

दीपक मुस्कराया, उसने रवि की तरफ़ तिरछी नज़र से देखा और कहने लगा – हां, प्यार करने का फ़ार्मूला है!

रवि– जानते हो?

दीपक– तुम भी जानते हो!

रवि– मैं जानता होता तो कर न लेता?

दीपक– मैं कोई लव स्पैशिलस्ट नहीं हूं! रवि, पहली बात है, प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है! करने और होने में फ़र्क होता है।

रवि– मैं किसी से प्यार करना चाहूं तो, क्या करूं? वह बताओ!

दीपक– तुम आल्रैडी जानते हो! फिर भी सुन लो, प्यार के फ़ार्मूला के कुछ नियम हैं, सब से पहला तो यह है, ऐसी लड़की चुनो जिसे तुम प्रॉपर रिस्पैक्ट दे सको, जिसे एड्मायर करते हो उसे ही प्यार कर सकोगे!

रवि– वह तो पक्का है, जो अच्छी ही नहीं लगेगी उसे कौन प्यार करेगा?

दीपक– और अगर तुम उसकी नज़र में एड्मायरेबल हो तभी तुम उसे प्यार कर सकते हो!

रवि– नहीं तो वन साइडिड अफ़ेयर होगा, उससे क्या फ़ायदा?

दीपक– और सुनो, अपने और उसके मुहल्ले, गली से दूर जाके मिलना चाहिए, जिससे दोनों की बदनामी का अंदेशा न हो! खास तौर पर लड़की के घर से दूर! लोग लड़की को ज़्यादा बदनाम करते है! एग्री करते हो?

रवि– पक्की बात है!

दीपक– सिर्फ़ अपनी पसंद ही पर न जाओ, अपना और उसका सोशल स्टेटस और फ़ैमिली की प्रैस्टिज का ध्यान रख के ही प्यार करना शुरु करना चाहिए! क्या ख़्याल है?

रवि– यह तो असूल की बात है! अपने से लो क्लास लोगों से पाला पड़ गया तो प्यार कम, मार ज़्यादा पड़ेगी! हाई

क्लास लड़की को छेड़ बैठे तो उसके तलवे चाटने पड़ेंगे!

दीपक- आगे सुनो, पहले दिन डिसाइड कर लेना चाहिए, रिलेशनशिप किस लिमिट तक रखनी है, दोस्ती तक, किस्सिंग तक, सैक्स तक या शादी करनी है! नहीं तो क्रेज़ दिमाग़ पर चढ़ जाने का परिणाम 'लैला मजनूं' का किस्सा हो सकता है। क्या मैं ठीक कह रहा हूं?

रवि- ठीक तो है, मेरी विश शादी करने की हो और वह सिर्फ़ दोस्ती रखना चाहती हो तो बड़बड़ हो जाएगी!

दीपक- प्यार करने के लिए लड़की को रिझाना ज़रूरी है! है ना?

रवि- वह तो ज़रूरी है, उसकी खुबसूरती, कपड़ों वग़ैरह की तारीफ़ तो करनी ही पड़ेगी!

दीपक- उसको इतना ही रिझाओ, कि वह सर पर न चढ़े, नहीं तो उसे पोसैस करने की बजाय उसके पोसैशन बन जाओगे! लिस्ट लम्बी है, इतनी प्रीकॉशन नहीं रखी जा सकती, इसलिए अपना दिमाग़ इस्तेमाल करो!

रवि- यार मैं तो शेर की पूंछ को छेड़ बैठा! मारो गोली, किस झझंट में फंस गया? यह सब तो मैं पहले ही जानता हूं!

दीपक- मैंने पहले ही कहा था!

रवि- प्यार करने और हो जाने का क्या मतलब है?

दीपक- लैला मजनूं की कहानी याद कर लो, क्लीयर हो जाएगा! लैला ने प्यार <u>किया</u> होश में रही, मजनूं को प्यार <u>हुआ</u> पागल हो गया।

रवि- और तुम ने... ?

दीपक- मैं ने तो तुम लोगों के साथ मिल कर एक शरारत की थी, मुझे क्या पता था, गुड़िया मेरे लिए इतनी स्पैशल हो जाएगी! मेरा तो करना और होना दोनों हो गए।

कुछ देर बाद बाज़ार में चलते हुए दीपक ने जेब से स्पैक्ट्स निकाल कर एक आंख से लगा कर दूर किसी को देखा तो रवि ने पूछा

- तुम्हारी नज़र कमज़ोर है?

दीपक– हां, बचपन में ही चश्मा लग गया था! मुझे और ओके को सेम पावर गलासेज़ लगे हैं!

रवि– वह तो हर वक्त चश्मा लगा के रखता है, तुम क्यों नहीं लगाते?

दीपक– वह देखना चाहता है, और मैं दिखाना!

रवि– आज तो सारी बातें ऊपर से निकल रही है, समझाओ।

दीपक– समझा दूंगा तो भी ऊपर से निकल जाएगा, प्रैक्टीकल दिखा दूंगा!

इतनी देर में दो लड़कियां सामने से आती हुई पास से गुज़रीं, रवि एक टक उन्हें देखता रहा और उन दोनों ने दो तीन दफा दीपक की तरफ़ देख कर आपस में कुछ बात की!

उनके ओझल होते ही दीपक ने रवि से पूछा

– कुछ देखा?

रवि– दोनों अच्छी हैं!

दीपक– कुछ आब्ज़र्व किया?

रवि– मुझे लगा दोनों आपस में तुम पर कमेंट कर रही हैं।

दीपक– मुझ पर? नहीं यार, तुम कर रही होंगी!

रवि– नहीं, वह दोनों तुम्हें देख रहीं थीं!

दीपक– यही देखने और दिखाने का प्रैक्टीकल फ़र्क है! क्योंकि तुम देख रहे थे, मैं दिखा रहा था!

रवि– तुम्हारा ध्यान तो दूसरी तरफ़ था!

दीपक– मैंने उन्हें देखा और आंखें फ़ेर कर उन्हें देखने का मौका दिया, ताकि वह मुझे देख सकें! अगर मैं तुम्हारी तरह उन्हें लगातार देखता रहता तो वह मुझे देख कर आंखें चुरा लेतीं! न मुझे ऑब्ज़र्व करतीं न आपस में मुझ पर कमेंट करतीं! लड़कियां अजनबियों से आंख नहीं मिलातीं! मैं ने देखने का मौका दिया और तुमने देखने का मौका नहीं दिया!

रवि– इससे क्या फ़र्क पड़ता?

दीपक– अगर उन्हें कोई अच्छा लगेगा तो वह खुद बात करने की

कोशिश करेंगी। तुम्हें भी कोई पसन्द आता है तो उससे मिलने की कोशिश करते हो ना!

रवि- तुम्हारा मतलब है, जब कोई देखे मुंह दूसरी तरफ़ कर लेना चाहिए!

दीपक- तुम उन्हें देखने लगते हो तो उनके सर से पांव की सारी डिटेल वेरिफ़ाई कर लेते हो, यहां तक कि उनके अंडर गार्मेंट्स के साईज़ तक कनफ़र्म कर लेते हो! तुम्हारा बस चले तो एक्सरे ग्लासेज़ से उनके सारे बाल गिन लो!

रवि- बड़ी इन्सल्ट कर रहे हो?

दीपक- सच्चाई है कि नहीं!

रवि बग़लें झांकने लगा,

दीपक- देखने लगते हो एक टक देखते रहते हो, जब तक देख सको! है कि नहीं?

रवि- क्यों कि वह हमारे लिए बन ठन कर, मेक अप करके, सैक्सी बन कर आती हैं! इसलिए!

दीपक- और तुम घंटा भर शीशे के सामने मेक अप करके, लिशक पुशक के, डियो लगा कर, किस के लिए निकलते हो?

रवि- ताकि वह हमें देखें!

दीपक- तो उन्हें भी मौका दो ताकि वह बिना किसी डिस्टर्बैंस के तुम्हें देख सकें!

रवि- हम कब डिस्टर्ब करते हैं? वह देखतीं ही नहीं! अभी देखा नहीं, दोनो कमीनियां तुम्हें देख कर आपस में बातें कर रही थीं, मेरी तरफ़ देखा तक नहीं!

दीपक- मैं ने देखने का मौका दिया और तुमने देखने का मौका नहीं दिया! दूसरों को चांस दो, ताकि तुम्हारे बारे में अपनी ओपीनियन फॉर्म कर सके! और अपनी बॉडी लेंगवेज से अपनी पर्सनैलिटी की गुडनैस कनवे करो! जैसे रैंप पर मॉडल करते हैं!

रवि- सड़क पर मॉडल की तरह शो-ऑफ़ करने वाले लड़कों

को लडकियां पागल समझती हैं! विक्टर पर इतने कमेंट पास करती हैं, सुना करो!

दीपक- विक्टर मॉडल की तरह लाउड शो-ऑफ़ करता हैं, पब्लिक में लाउड शो-ऑफ़ नहीं, सटल मूवमैंट से अपनी पर्सनैलिटी का इम्पैशन क्रियेट करना होता है।

ढाबे पर पहुंचे, रवि ने पूछा

- यहां खाते हो? मैं लाल चौक में करन से खाता हूं।

दीपक- आज यहां खाके देखो!

लंच करते वक्त रवि ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की

- कई दफ़ा लड़कियां बड़ी नफ़रत से हमें देखती हैं!

दीपक- ऐसा तभी होता है, जब तुम ग्रुप में होते हो!

रवि- (सोचते हुए) यू आ राइट! ऐसे देखती हैं जैसे गुंडों का गैंग आ गया हो!

दीपक- लड़कियों को अच्छा इम्प्रैशन देने के लिए ग्रुप में घूमना बंद कर दो। ग्रुप में रह कर लड़कियां ताड़ोगे तो तुम भी बाकी लड़कों जैसा इम्प्रैशन क्रियेट करोगे!

रवि- यह बात ठीक है! लफ़ंडरों के साथ देखेंगे, तो लफ़ंगा ही समझेंगे!

दीपक- पब्लिक में हम लोगों के लिए मॉडल ही होते हैं, लोग हमारी हर मूवमैंट को स्क्रुट्नाइज़ करते हैं, हमें अपना बैस्ट एक्स्प्रैशन और पोस्चर वियर करके रखना चाहिए, तभी हम पापुलर हो सकते हैं! कीप स्माइलिंग एंड मूव डीसैंटली!

लंच करके निकले तो देखा 'ओके स्टूडियो' से मित्र-मंडली निकल कर आ रही है। सब ने एक दूसरे को 'हैलो' की, दो तीन मिनट बाद अपने रास्ते चले, दीपक ने रवि से कहा

- तुम अपने चेहरे पर स्माइल मेनटेन करने का कोशिश कर रहे हो, यह अच्छी बात है।

दोनों रवि के कमरे पर गए!

वीरवार 8.30 बजे ओके ने रवि को फ़ोन किया

ओके- रवि, हमने तुम्हारे खर्चे के लिए कुछ पैसे कंट्रीब्यूट किए हैं, कब लेने आओगे?

रवि- सुबह दस बजे आ जाउं?

ओके- आ जाओ, मैं दुकान पर ही मिलूंगा।

शनिवार 1 बजे रवि स्टेशनरी की दुकान पर कुछ खरीदने गया, विमला पहले से वहां कुछ खरीदने के लिए खड़ी थी, उसने सामान का बैग लिया पैसे दिए और बाहर गई, अपना छोटा सा पर्स काउंटर पर ही भूल गई, दुकानदार ने देखा तो रवि से कहा

- वह लड़की अपना पर्स भूल गई है, देना उसे...

रवि ने पर्स उठाया और दौड़ कर उसको पर्स दिया

- तुम अपना पर्स वहां भूल गई थी।

विमला- थैंक्यू!

उसने मुस्करा कर कहा।

रवि - यू आर वैलकम!

दोनों कुछ सैकंड एक दूसरे को देखते रहे, फिर विमला ने पर्स बैग में रखा, और रवि को एक स्माइल दे कर चली गई। रवि वापिस दुकान पर गया, अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीद कर दीपक को फ़ोन किया

- मैं ने नोटबुक और पैन ले लिए हैं, और कुछ लाना है?

दीपक- लंच के लिए निकलेंगे तो याद कर लेंगे। आ जाओ...

मिलने पर रवि ने दीपक को दुकान का इन्सीडैंट बताया

दीपक- इतनी सी मुलाकात बहुत आगे तक जा सकती है, छोटा सा शहर है, आज नहीं तो कल मुलाकात हो ही जाएगी!

रवि- हां, होगी तो सही!

दोनों पढ़ने के लिए बैठ गए, थोड़ी देर बाद रवि ने पूछा

- अगर कहीं वह लड़की मिल गई तो क्या मुझे क्या करना चाहिए?

दीपक- रवि, ऐसी मुलाकातें अचानक ही हुआ करती हैं, ऐसे मौके का फ़ायदा कुओक्सोटिक पर्सन ही उठा सकता

है, फ़ौरन ऐसा काम या बात की जाए जिससे मुलाकात जान पहचान में बदल जाए।

रवि– अगर कुछ न सूझे तो?

दीपक– मुस्कराओ और पिछली मुलाकात याद करवाओ! 'मैं आपसे वहां मिला था, आपको याद है?'

दोनों फ़िर अपनी स्टडी में लग गए।

कुछ देर बाद रवि ने घड़ी देखकर कहा

– लंच के लिए चलें?

दीपक– आज तुम्हारा दिल स्टडी में नहीं लग रहा?

रवि– वापिस आकर लग जाएंगे।

दीपक– चलो, चलते हैं! आज तुम्हारे ढाबे पर चलें?

रवि– ऐज़ यू लाइक!

दोनों ने 'करन' के ढाबे पर लंच किया, रवि ने पूछा

– क्या ख़्याल है? ओके की दुकान पर चलें?

और दोनों टहलते हुए 'ओके स्टूडियो' की तरफ़ चले, बाज़ार में एक दुकान से एक पुराने गाने की आवाज़ सुनाई दी

– मुस्कराओ कि जी नहीं लगता,
पास आओ कि जी नहीं लगता

दीपक– दो मिनट रुक जाओ, रवि! मुझे यह गाना बहुत पसंद है।

दुकान के नज़दीक ही दो लड़कियां खड़ी कुछ खा रही थीं, दीपक रवि से फुसफुसाया

– दुकान की तरफ़ घूम जाओ, लड़कियां कुछ और समझ बैठेंगी! गाना सुनो...

दोनों लड़कियों को देख कर लग रहा था, रवि और दीपक ही उन की चर्चा का विषय है। दीपक फिर से फुसफुसाया

– समझ लो रैंप पर खड़े हो, बैस्ट पोस्चर, स्माइल डिस्पले करो! यही मौका है। गाना गुनगुनाओ...

और दीपक गाने के बोल गुनगुनाने लगा! गाना खत्म हुआ तो दीपक फुसफुसाया – एक ग्लांस लड़कियों को देखना, एक टक नहीं!

रवि ने लड़कियों की तरफ़ ग्लांस किया तो दोनों लडकियां स्माईल

करती हुई दिखाई दीं! लगा जैसे इंट्रोडक्शन हो गई है।

दीपक– देखा, डायरेक्ट न देखने का असर! अब वह बहुत दिनों तक तुम्हें याद रखेंगीं!

रवि को भी बात समझ आ गई! दोनों वहां से चले, 'ओके स्टूडियो' पर पहुंचे! सुहास के इलावा सभी दोस्त पहले ही स्टूडियो में बैठे थे, इन को देख के सब खुश हुए, और सुहास का ताज़ा एडवैंचर सुना!

सुहास का दिल पकौड़े खाने का हुआ, वह पकौड़े वाले ठेले पर पकौड़े खा रहा था, एक लड़की (वीना) आई और पकौड़े ले के खाने लगी, सुहास को दीपक का डायलॉग याद आया '*आज मेरा लक्की डे है, पहले इतने टेस्टी बिस्कुट मिले, फिर इन बिस्कुटों को खाने वाली गुड़िया मिल गई*'

वह वीना से यही डॉयलाग बोलने के लिए तैयार हो रहा था, कि वीना के साथ उसकी आंखें टकरा गईं! सुहास झिझक कर ठेले वाले की तरफ़ घूम गया और अखबार पढ़ने के अंदाज़ में कहने लगा

– आज मेरा लक्की डे है, (आवाज़ भर्रा गई, रिपीट किया) आज मेरा लक्की डे है, (फिर अड़ा, रिपीट किया) आज मेरा लक्की डे है, पहले इतने टेस्टी पकौड़े मिले, फिर इन पकौड़ों को खाने वाली लड़की मिली!

वीना ने किसी को इशारे से बुलाया, और चिल्लाई

– जल्दी आओ, जल्दी आओ,

पांच छे लड़कियां उसके पास आगईं, वीना सुहास के पास आकर प्यार से कहने लगी

– सुनाओ, सुनाओ, क्या डायलॉग बोला था? शर्माओ मत

सुहास ने रिपीट किया

– आज मेरा लक्की डे है, पहले इतने टेस्टी पकौड़े मिले, फिर इन पकौड़ों को खाने वाली लड़की मिली!

वीना और पास आकर कहने लगी

– तुम को पकौड़े खाने वाली लड़की मिली, हमें पकौड़े खिलाने वाला लड़का मिला! हमें पकौड़े खिलाओगे?

सुहास के पास 'हां' करने के सिवा और कोई आप्शन नहीं थी, उसने

हामी भरी – हां!

वीना– कितने पैसे हैं तुम्हारे पास?

सारी लड़कियों ने सुहास को घेर लिया! सुहास ने अपनी जेब से पैसे निकाल कर देखे

सुहास– दो सौ रुपए हैं!

वीना ने ठेले वाले का आर्डर दिया,

– तुमने सुन लिया! दो सौ रुपए के पकौड़ें सब को खिलाओ! करारे करारे मिर्ची के पकौड़े देना, (सुहास से) लाओ पैसे दो!

वीना ने सुहास के हाथ से पैसे ले कर ठेले वाले को दिए, सब लड़कियां सुहास को घेरे में लेके पकौड़े खाने लगीं। और वीना हंसती हुई, सुहास को पकौड़े दिखा दिखा कर खाने लगी! सब ने खा लिए तो वीना ने लड़कियों से कहा

– कितनी ख़राब हो तुम सब? अपने होस्ट को नहीं खिलाओगी?

कहते हुए उसने अपने हाथ में पकड़ा पकौड़ा सुहास के मुंह के पास किया – मुंह खोलो डार्लिंगं!

सुहास ने मुंह खोला और वीना ने उसके मुंह में पकौड़ा डाला और लड़कियों को इशारा किया तो सब ने सुहास को पकड़ लिया, और सब ने उसे मिर्ची के कई पकौड़े खिलाए, वीना ने ज़बरदस्ती उसका मुंह पकड़ कर चार पांच हरी मिर्चे उठाईं और उसके मुंह में घुसेड़ दीं, एक लड़की ने चटनी का दोना उसके मुंह पर मल दिया, बाकी लड़कियों ने चटनी से सुहास के कपड़े खराब कर दिए। सब चलने लगीं तो वीना सुहास से कहने लगी

– तुम्हें आज पकौड़े खाने वाली लड़की मिली थी, याद रखना!

और सब हंसती हुई चली गईं। और सुहास मुंह पर हाथ रखे सी सी करता हुआ सर झुका के वहां से चला गया।

दीपक ने हंसते हुए

– जब मैंने यह वर्डिगं बोली गई थी, तब बात और थी,

कहने वाला कोई और था, सुनने वाला कोई और था, इसे अगर पकौड़े खाती हुई लड़की से बात करने का दिल किया था, तो उसी से पूछ लेता पकौड़े कैसे हैं? खाउं या न खाउं?

विक्टर- मिर्चो के पकौड़े थे, उसने फिर भी खिला देने थे!

जगदीप- मिर्चे खा रही थी, वही इसको भी खाने को दे दी, रसगुल्ले खा रही होती तो रसगुल्ले खाने को मिलते।

दीपक- प्लेबॉय-शिप एक टेलैंट है, एक आर्ट है! मौका देख के बात करने का टेलैंट भी एक आर्ट है!

काका- यह प्लेबॉय-शिप का नहीं, मार खाने का टेलैंट यूज़ कर रहा था, बच गया, लड़कियों ने मिर्चो से काम चला लिया, नहीं तो गंजा हो के आता!

चार बजे का अलार्म बजा और सब ओके से हाथ मिला के चले गए।

शनिवार 2 बजे रवि और दीपक लंच करते हुए बातें कर रहे थे

दीपक- मैं एक बात से खुश हूं, तुम अपने आप को मोल्ड कर रहे हो। इम्प्रूवमैंट विज़िबल है।

रवि- कोशिश कर रहा हूं, तुम ने क्या नोटिस किया?

दीपक- तुम कभी कभी स्माइल वियर करने लग गए हो!

रवि- याद आता है तो करने लगता हूं, पर थोड़ी देर में भूल जाता हूं तो नार्मल हो जाता हूं।

दीपक- स्माइल दिखावे की नहीं, नेचर का पार्ट बनानी है। सिर्फ़ चेहरे की डैकोरेशन नहीं, जैनियन स्माइल, फ़्राम द हार्ट!

रवि- स्माइल तो स्माइल ही है!

दीपक- दिल से उठी स्माइल दूसरे के दिल में भी स्माइल पैदा कर देती है! जिससे दोनों एक सम्मोहन में बंध जाते हैं!

रवि- कभी कभी तुम किसी गुरु की तरह प्रवचन करने लग जाते हो!

दीपक- कभी कभी किसी महापुरुष के वचन याद आ जाते हैं। यह शब्द मेरे डैडी के हैं, मैंने बताया था ना, मैं बचपन

से मोरोस था, एक्स्ट्रीम इन्ट्रोवर्ट, फ्राउन-फ़ेस्ड मोरोस! नैवर स्मालिंग! कोई शौक नहीं था, न खेलने का, न घूमने का! अपने आप में गुम था, किसी से बात तक नहीं करता था। बिल्कुल डम्मी!

रवि- बिल्कुल डम्मी? यकीन नहीं होता!

दीपक- सच यही है, एक ही क्रेज़ थी, किताबें पढ़ने की!

रवि- चेंज कैसे आई?

दीपक- मेरे डैडी ने मेरे इसी क्रेज़ को मेरे इलाज का इन्स्ट्रूमैंट बनाया, एक दिन उन्होंने बड़े प्यार से मुझे अपने पास बिठाया, मुझे बताया कि मैं उनके लिए दुनिया की सब से प्यारी चीज़ हूं! और मुझे इसी फ़िनोमिना पर एक किताब दी। उस किताब ने मेरी लाईफ़ बदल दी, मुझे एक घोंघे से निकाल कर इन्सान बना दिया!

रवि- हैरानी होती है! किताब से ऐसा हो सकता है?

दीपक- किताबें ज़िंदगी क्या देश बदल देती हैं! डस कैपीटल इसका सबूत है!

रवि- उस किताब ने आधी दुनिया को बदल दिया था। तुम्हारे पापा तुम्हें किसी साइकैट्रिस्ट के पास भी लेके गए थे?

दीपक- नहीं, उन्होंने इतने प्यार से मुझे पढ़ने के लिए कहा कि उनके शब्दों ने साइकैट्रिस्ट का काम किया, मुझ पर जादू सा हो गया, मैं ने उस किताब को सौ बार पढ़ा होगा, लगातार उसके शब्दों पर सोचता रहा, अल्टीमेटली उन शब्दों ने अपना रंग दिखाया, मैं ने खुद को मोल्ड करना शुरु कर दिया, ज़्यादा टाइम नहीं लगा, दिनों में ही दोस्त बनने लगे, हंसने हंसाने लग गया, कुछ ही दिनों में इसकी आदत बन गई, नेचर में आटोमैटिकली चेंज आनी शुरु हो गई, और आज एक बदला हुआ दीपक तुम्हारे सामने है।

और दीपक ने उसे एक खिली हुई स्माइल दी।

रवि- तुम लक्की हो, तुम्हारे डैडी जैसा इन्सान किसी को भी

चेंज कर सकता है।

दीपक- हो सकता है यह प्रवचन तुम्हारी लाइफ़ भी बदल सकता है, जैसे इसने मेरे लाइफ़ पैट्टर्न को बदल दिया।

रवि- यह चेंज कब की बात है?

दीपक- मैं 14 वर्ष का था, जब मेरे पिता ने मुझे बदलने का टास्क शुरु कर दिया था। मेरी ममी ने भी उनका साथ दिया, मुझे भरपूर प्यार दिया, अपने प्यार और दोस्ती से मुझे उस घोंघे जैसी ज़िंदगी से निकाल कर आज का दीपक बनाया। मैं भगवान से हमेशा प्रार्थना करता हूं, हर बच्चे को मेरे डैडी जैसा पिता और माता जैसी मां दे!

रवि के मन में दीपक के लिए गहरी एड्माइरेशन पैदा हो गई। उसने देखा दीपक गम्भीर है और किसी गहरी सोच में है, तो उसने पूछा

- आज तुम हमेशा वाले दीपक नहीं हो! क्या बात है?

दीपक- माइंड अनस्टेबल है, मां की गोद में सिमटने और पिता की छाती से लगने को जी चाहता है।

रवि- तो जाओ, माता पिता से मिल आओ! हो सकता है वह भी तुम्हें याद कर रहे हों! तुम ही तो कहते हो, माइंड टू माइंड ट्रांसमिशन होती है!

दीपक- शायद यही बात है, मुझे जाना चाहिए!

रवि- जाओ, मिल आओ, तुम्हारा उदास चेहरा अच्छा नहीं लगता!

दीपक उठा और रवि को गले से लगा लिया

- यू आर ए फ्रैंड! थैंक्स!

रवि उसे बस स्टैंड पर बस में चढ़ाने आया! दीपक ने बस में बैठ कर उसे बॉय किया। बस गई, रवि खड़ा बस को जाते देखता रहा, उसे दीपक की बात याद आई

'मां की गोद में सिमटने और पिता की छाती से लगने को जी चाहता है।'

वह थोड़ी देर खड़ा सोचता रहा, फिर वापिस चल पड़ा, रास्ते में एक दुकान से एक कोल्ड-ड्रिंक लेने के रुका, जगदीप साईकल पर जा

रहा था उसने रवि को देखा तो उसके पास आया,

जगदीप– किधर घूम रहे हो?

रवि– दीपक अपने घर जा रहा था उसके साथ बस स्टैंड तक आया था। कोल्ड–ड्रिंक लोगे?

जगदीप– तुम ले रहे हो?

रवि ने दो कोल्ड–ड्रिंक लिए

रवि– पार्क में चल कर बैठें?

दोनों पार्क में जा बैठे,

जगदीप– क्या चल रहा है?

रवि– फ़ौग चल रहा है!

दोनों हंसने लगे...

जगदीप– वो तो टीवी में चल रहा है! तुम्हारे साथ क्या चल रहा है? कोई मिली?

रवि– मिली तो है...

और उसने जगदीप को विमला से हुए टकराव का किस्सा सुनाया

रवि स्टेशनरी की दुकान पर कुछ खरीदने गया, विमला पहले से वहां कुछ खरीदने के लिए खड़ी थी, उसने सामान का बैग लिया पैसे दिए और बाहर गई, अपना छोटा सा पर्स काउंटर पर ही भूल गई, दुकानदार ने देखा तो रवि से कहा

– वह लड़की अपना पर्स भूल गई है, दे दो उसे...

रवि ने पर्स उठाया और दौड़ कर उसको पर्स दिया

– आप अपना पर्स वहां भूल गई थीं।

विमला– थैंक्यू!

उसने मुस्करा कर कहा।

रवि – यू आर वैलकम!

दोनों कुछ सैकंड एक दूसरे को देखते रहे, फिर विमला ने पर्स बैग में रखा, और रवि को एक स्माइल दे कर चली गई।

जगदीप– लगता है, तुम्हारे अच्छे दिन आ गए हैं! इन्ट्रोडक्शन तो हो गई, अब मिलने का क्या सीन है?

रवि– नाम पता होता तो मिलने का कोई चांस था, पता नहीं

कौन है? कहां से आई है?

जगदीप– यार छोटा सा शहर है, अगर लोकल है तो कहीं न कहीं मिल ही जाएगी! जिस दुकान पर मिली थी उसके आस पास की सारी गलियों के चक्कर मारते रहो, तुम्हारे अच्छे दिन आ गए हैं, मिल जाएगी!

रवि– कहां जा रहे हो?

जगदीप– दुकान के काम से जा रहा हूं!

और वह गया!

दूसरी तरफ़ दीपक बस में बैठा गुड़िया के साथ बिताए पल याद कर रहा था, *दीपक ने उससे कहा*

– *आप, जो बिस्कुट खाती हैं, बहुत टैस्टी हैं।*

कहते हुए उसे अपना सारा सम्मोहन डाल कर स्माइल दी, सुन कर वह थोड़ी सी मुस्करा दी।

दीपक ने दुकानदार की तरफ़ इशारा करते हुए उससे फिर कहा

– *मैंने इनसे पूछा इतने टेस्टी बिस्कुट और कौन खाता है, तो इन्होंने बताया "एक प्यारी सी गुड़िया खाती है" इनकी बात पूरी होते ही एक लाइव गुड़िया आ गई।,*

कहते कहते दीपक ने अपने हाथ के बिस्कुट गुड़िया को आफ़र किए,

दीपक– आप से मिल कर बहुत अच्छा लगा, यू आर ए प्लैज़ैंट पर्सन! मैं कल फिर आपको देखने के लिए इस दुकान पर आऊंगा, मेरा लक फ़ेवर करेगा तो आपको फिर से देखने का चांस मिल जाएगा! थैंक्यू फ़ार द पलैज़ैंट टाइम!

गुड़िया नहीं में दाएं बाएं सिर हिला कर मुस्कराती हुई चली गई। दीपक उसे जाते हुए देखता रहा, गुड़िया ने घर तक पहुंचने तक कई दफा मुड़ कर उसे देखा।

बस में बैठे दीपक ने एक अधेड़ आदमी को खड़ा देखा तो उसे अपनी सीट आफ़र कर दी और खुद खड़ा हो गया, बस चल पड़ी...

दीपक की बस रुकी, दीपक उतरा और पैदल चल पड़ा, घर तक जाते हुए उसे दो तीन दोस्त मिले, दो बुज़ुर्ग मिले, एक बूढ़ी औरत मिली दीपक ने बड़ों के पांव छुए!

अपने घर के दरवाज़े से अंदर जाते ही पापा (रामसरूप) मिले, दीपक को देखते ही उनके चेहरे पर आई खुशी छा गई! दीपक दौड़ कर उनके पास गया रामसरूप ने उसे कस के गले लगा लिया! दीपक भी उनसे लिपट गया! कुछ देर दोनों लिपटे रहे, रामसरूप ने पूछा

– या बात है बेटा? कोई मुश्किल है क्या?

दीपक– नहीं पापा, कोई मुश्किल नहीं, आप की छाती से लगने का मन किया था, इसी लिए आया हूं!

और एक दफ़ा फिर लिपट गया!

रामसरूप– कोई तंगी है क्या?

दीपक– नहीं पापा, कोई तंगी नहीं, आप से कुछ बात करने आया हूं, ममी से मिल के आ जाउं, फिर आप से बात करूंगा!

रामसरूप– ठीक है पुत्तर, मिल ले, दिन रात तुझे याद करती रहती है! मैं तो कुलतार के घर जा रहा हूं, उसका सांढू आया हुआ है, पीने पिलाने का प्रोग्राम है, देर से आउंगा!

दीपक– कोई बात नहीं, सुबह बात कर लेंगे!

दूसरी तरफ़ रवि पैदल चला जा रहा था, उसके पास आ के अमर ने अपना स्कूटर रोका,

– ओए रवि, कहां घूम रहा है?

रवि– दीपक के साथ बस स्टैंड तक गया था, वह अपने घर गया है।

अमर– चल बैठ पीछे, मेरा घूमने का मूड है!

रवि– ओके के पास गया था?

अमर– नहीं यार, उधर नहीं गया, घर में रिश्तेदार आए हुए थे, उनके साथ बैठे बैठे बोर हो गया तो बहाना बना के निकल आया।

दोनों शहर की गलियों में घूमते रहे।------------------

दूसरी तरफ़ दीपक अपनी मां की गोद में सर रखे लेटा था...

मां- क्या बात है? मां की गोद कैसे याद आ गई?

दीपक- याद आई थी इसीलिए एक दिन के लिए आ गया!

मां- पुत्तर, मां की गोद तभी याद आती है, तब आदमी किसी उलझन में हो! तुम्हें क्या उलझन है? मुझे बता!

दीपक- ममी, एक लड़की की दोस्ती ने मुझे उलझन में डाल दिया है!

मां- प्यार कर बैठा है?

दीपक- शायद, हर वक्त उसे देखने को जी चाहता है!

मां- वह भी तुम्हें चाहती है?

दीपक- हां, ममी!

मां- खूबसूरत है?

दीपक- आप खुद देख लो!

और दीपक ने मां को उसकी फ़ोटो दिखाई!

मां- बहुत खूबसूरत है,

दीपक- आपको पसंद है?

मां- मेरे बेटे की पसंद ही मेरी पसंद है! शादी करेगा उससे?

दीपक- यही तो उलझन है, ममी! शादी कर ली तो हम दोनों की पढ़ाई रह जाएगी, हम पढ़ाई में लगे रहे तो डर है, बहुत देर न हो जाए, और हम एक दूसरे को खो न बैठें!

मां- इतनी सी बात है? तुम दोनों शादी के बाद भी अपनी पढ़ाई पूरी कर सकते हो, मैं तुम्हारे पापा को मना लूंगी! चल हट, मैंने रोटी भी बनानी है!

दीपक- दीपी कहां गई है?

मां- नीलम के साथ शापिंग करने गई है।

मां किचन में खाना बनाने लगी, दीपक उसके साथ बातें करता रहा!

रविवार 9 बजे रवि सुबह नहा कर तैयार हुआ, और लैंडलेडी के पास नाश्ता करने गया, लैंडलेडी ने उससे पूछा

\- कहीं जा रहे हो?

रवि- हां आंटी, दो तीन दिन पहले एक दोस्त नज़र आया था, उसे ढूंडना है।

लैंडलेडी- उसके घर का पता नहीं है?

रवि- नहीं आंटी, घर का एडरैस नहीं है, सारा शहर देखना पड़ेगा!

लैंडलेडी- सारा शहर पैदल देखोगे?

रवि- हां आंटी!

लैंडलेडी- मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें पड़ौसी से साईकल ले देती हूं! उसकी आज छुट्टी है।

दूसरी तरफ़ दीपक और उसके पापा रामसरूप में बात चीत हुई

रामसरूप - मुझे तुम्हारी मां ने तुम्हारी दुविधा बताई है, मैं उससे सहमत हूं, तुम दोनों तुरंत शादी कर लो, मन का मीत तकदीर से मिलता है, रिस्क मत लो! दोनों हंसते खेलते पढ़ते रहना, शादी तुम दोनों के मानसिक विकास में बाधा न बने, यह तो तुम्हारे संयम और इच्छा शक्ति पर आधारित है!

दीपक- हम दोनों ही अपनी पढ़ाई पूरी करने से पहले इस परिवार की ज़िम्मेवारी में बंधना नहीं चाहते!

रामसरूप - बेटा, परिवार की ज़िम्मेवारी विकास के रास्ते में तभी अड़ती है, अगर परिवार में वैचारिक मतभेद हो, तुम दोनों पढ़ना चाहते हो, मैं और तुम्हारी मां तुम्हारे विकास में सहमत हैं! तुम्हारे लिए पढ़ाई की कोई रुकावट नहीं है! तुम्हारी बहन को एक सहपाठी और मिल जाएगा, (और उन्होंने दीपी को आवाज़ दी) बेटा इधर आओ!

दीपी आई - हां पापा!

रामसरूप- बेटा, दीपक शादी करने के बाद पढ़ना चाहता है, तुम क्या कहती हो?

दीपी- शादी करके पढ़ाई करने में क्या मुश्किल है, मैं तो पढ़ने से रोकने वाले के साथ शादी ही नहीं करूंगी!

रामसरूप- दीपक बहू को भी पढ़ाना चाहता है..

दीपी- यह तो और भी अच्छा है, तीनों साथ बैठ कर पढ़ा करेंगे, गप्पों का गप्पें, पढ़ाई की पढ़ाई!

दीपक- गप्पें ज़्यादा ज़रूरी हैं! गपौड़न कहीं की...

कह कर दीपक ने उसे घुड़की दी, दीपी उसे ठेंगा दिखा के हंसती हुई भाग गई। रामसरूप कुछ देर सोचने के कहने लगे

- कितनी पुरानी दोस्ती है?

दीपक- लगभग एक महीना पहले मिला था!

रामसरूप- रोज़ मिलते हो?

दीपक- हां, इतवार को छोड़ कर, रोज़!

रामसरूप- कितनी देर साथ रहते हो?

दीपक- एक डेढ़ घंटा!

रामसरूप- फ़िज़िकल कांटैक्ट?

दीपक- एब्सल्यूटली नॉट! मैंने उससे प्रामिस किया है, शादी से पहले उसे टच नहीं करूंगा!

रामसरूप- गुड! दैट इज़् लाइक माई सन! वैरी नाईस! (और उन्होंने दीपक को गले लगाया, और हंसते हुए कहा) हिस्ट्री रिपीट्स इटसैल्फ़! मैंने भी तुम्हारी मां से यही प्रामिस किया था!

दीपक- आपने और ममी ने मुझे अपने जैसा बनाया है! मेरे ममी पापा दुनिया के बैस्ट पेरैंट्स हैं!

रामसरूप- और हम चाहते हैं, हमारे दोनों बच्चे भी बैस्ट हों!

दीपक- अब आप मुझे गाईड करो, मेरे लिए बैस्ट क्या है?

रामसरूप- एंगेजमैंट कर लो और अपनी स्टडी कंटीनयू करो, लेकिन उससे स्टडी से डिस्ट्रैक्ट हो सकते हो, दीपे, शादी कर लो और हंसते खेलते स्टडी करते रहना! प्यार भी और पढ़ाई भी! भई मज़ा आ जाएगा! कर लो!

दीपक- कर लूं?

रामसरूप- कर लो! लेकिन बेटा! इतने शार्ट टाइम में किसी को समझना बहुत मुश्किल है! ख़ास तौर पर तुम्हारी ऐज में!

और प्यार के इंफ़्लुएंस में तो पार्टनर की हर बात अच्छी लगती है! अच्छी लगनी भी चाहिए, कमियां दिखाई देने लगें तो प्यार मरने लगता है। भरोसा डोल जाता है!

दीपक- मुझे गुड़िया पर पूरा भरोसा है!

रामसरूप- अपने भरोसे को कमज़ोर न होने देना, भरोसा है तो प्यार है!

दीपक- मैं आपके इन शब्दों को हमेशा अपनी गाइड लाइन बना के रखूंगा! मैं ने हमेशा आपको ममी की हर बात का समर्थन करते देखा है, आपने कभी उनकी बात नहीं काटी, हां में हां मिलाते हैं, मैं भी यही करूंगा!

रामसरूप- मैं उस पर विश्वास करता हूं, इसलिए! कई बार उसका डिसीज़न ग़ल्त होता है, तो सब से अलग ले जाकर अपना विचार उसके सामने रख देता हूं, वह उसी वक्त सहमत हो जाती है! विश्वास करो, अंध-विश्वास नहीं! उसकी बात काटे बिना अपना विचार भी सामने रखना ज़रूरी है।

दीपक- मैं ध्यान रखूंगा।

रामसरूप- मेरा ख़्याल है, थोड़े दिन बिना बात आगे बढ़ाए हर ऐस्पैक्ट पर गहराई से सोचो, जब तुम्हारा विश्वास पक्का हो जाएगा, तब जो कहोगे, कर लेंगे!

दीपक पिता के गले लग गया!

दूसरी तरफ़

रवि साईकल लेकर उस लड़की 'विमला' को ढूंडने चल पड़ा, और शहर की हर गली देखता हुआ सारा दिन घूमता रहा। अंत में उसकी एक झलक देखने को मिल गई, वह उसे सब्ज़ी लेकर घर में जाती दिखाई दे गई, रवि साईकल की चेन उतार कर बैठ गया और थोड़ी देर इंतज़ार करता रहा, शायद फिर से नज़र आ जाए! साईकल चलाते हुए कई चक्कर लगाए, वह नहीं दिखाई दी। निराश होकर वापिस आ गया। -----------------

रविवार 9 बजे दीपक बस में बैठा गुड़िया के साथ बिताए पल याद कर रहा था

दीपक- क्या खिलाओगी?

गुड़िया- आलू मटर की सब्ज़ी है, रोटी दो मिनट में बना देती हूं!

और उसके जवाब का इंतज़ार किए बिना गैस ऑन कर ली, फ्रिज में से सामान निकाला और फुर्ती से उसके लिए खाने की थाली बना के उसे दी - उधर बैठ के खाओ मैं ताज़ा चपाती बना के लाती हूं।

दीपक- गुड़िया, कॉफ़ी बना सकती हो?

उसकी बात पूरी होने से पहले ही गुड़िया उठ खड़ी हुई,

गुड़िया- मैं सोच ही रही थी तुम बोल पड़े, दो मिनट में लाई!

दीपक ने उसकी आंखों में देखा और उसकी तरफ़ थोड़ा सा झुक के कहने लगा - आज ही हुई है! और आज मैं ने उसके हाथ का बना खाना खाया और उसके साथ बैठ कर गर्मा गर्म काफ़ी हाथ में लेके टीवी देखा! उसके हाथों में जादू है, टेस्ट बनाने का, और आंखों में जादू है दीवाना बनाने का!

गुड़िया- (चमकती आंखों और स्माइल से) अपनी वाइफ़ से कब मिलवाओगे?

दीपक- स्टडी पूरी होने के बाद! तब तक बाय बाय वाइफ़!

बस रुकी और दीपक बस से उतर कर अपने कमरे की तरफ़ जाते हुए गुड़िया के घर के आगे से गुज़रा और 'मोर की आवाज़' निकाली, गुड़िया ने तुरन्त खिली हुई स्माइल के साथ दरवाज़ा खोल कर बाहर देखा, होटों पर उंगली रख कर खामोश रहने का इशारा किया और गेट पर आके कहने लगी

- कल आना!

दीपक ने उसे अपने हाथ में पकड़ा पैकेट दिया, और

कहा- मैडम, मेरी ममी ने आपके लिए पिन्नियां भेजी हैं!

गुड़िया- ममी यहां आई हैं?

दीपक- मैं घर गया था, सीधा यहीं आया हूं, घर में कोई नहीं?

गुड़िया- सभी हैं!

दीपक- मैं कल आउंगा, चिकन लाउं?

गुड़िया- खाना है तो ले आना!

दीपक- बाय...

कहते हुए आगे चल दिया! अंदर गई तो पिता ने पूछा

- कौन था?

गुड़िया- फ्रैंड का भाई पिन्नियां देने आया था!

सोमवार 8 बजे सुबह रवि विमला की गली में पहुंचा, वह उसे अपने घर के आगे झाड़ू देती नज़र आ गई। रवि ने वहां खेलते एक बच्चे से पूछा

- उस लड़की का नाम क्या है?

बच्चा- दीदी का नाम विमला है!

बच्चा भाग कर विमला के पास गया और उसे बताया

- दीदी, भइया आपका नाम पूछ रहा है!

कह कर उसने रवि की तरफ़ इशारा किया, विमला ने उसे देखा और मुंह पर उंगली रख कर चुप रहने का इशारा किया, बच्चे को जाने के लिए कहा और रवि को इशारे से बुलाया और ऊंची आवाज़ में मुहल्ले को सुनाती हुई पूछने लगी

- किस को ढूंड रहे हो? (फिर धीमी आवाज़ में बोली) मैं उधर डेरी पर दूध लेने जा रही हूं तुम वहां चलो, मैं बर्तन लेकर वहां आती हूं।

और डेरी की तरफ़ इशारा किया।

विमला अंदर किचन में गई, दूध सिंक में गिराया और बोली

- पापा दूध गिर गया, मैं दूध लेने जा रही हूं...

पापा- विनोद को भेज दो..

विमला- कोई बात नहीं, मैं ले आती हूं...

और डोल लेके तेज़ी से बाहर निकल गई

रवि डेरी पर पहुंचा, बिस्कुट लेकर खाने लगा, विमला आ कर

उसके नज़दीक गाहक की तरह खड़ी हो गई

- कल तुम ने मेरी गली के कई चक्कर लगाए थे, मैंने देख लिया था!

रवि- मुझे तो तुम नज़र नहीं आई!

विमला- मैं दरवाज़े की ओट से तुम्हें देख रही थी। मुझे ढूंड रहे थे?

रवि- हां! तुमने देख लिया था तो बाहर क्यों नहीं आई?

विमला- मैं घर में अकेली नहीं थी नहीं तो अंदर बुला लेती! कल इतवार था, सभी घर में थे!

रवि- मैं तुम से मिलने आया था! तुम से बात करनी है।

विमला- यहां बात नहीं कर सकती!

रवि- कहां मिल सकती हो?

विमला- तुम्हारा घर कहां है?

रवि- मैं पीजी हूं, मेरे कमरे में लड़कियां अलाउड नहीं है। कहीं बाहर मिल लेते हैं।

विमला- मैं बाहर नहीं मिल सकती!

रवि- तो मैं वापिस जाऊं?

विमला- मेरे घर आ जाओ!

रवि- तुम्हारे घर?

विमला- थोड़ी देर में ममी, पापा, भाई सब चले जाएंगे, शाम को आएंगे।

रवि- लोग देख लेंगे?

विमला- दोपहर को गली में कोई नहीं होता।

रवि- अकेली मिलोगी?

विमला- हां, अकेली मिलूंगी, कोई नहीं होगा, अभी मैंने ममी के साथ काम करवाना है, तुम 12 बजे आ जाना...

रवि- (*मन में लड्डू फूटा*) अकेली मिलेगी?

विमला- तुम पीपल के पेड़ के नीचे खड़े रहना, अकेली होते ही तुम्हें बुला लूंगी।

और वह चली गई।

रवि अपने कमरे पर आया, नहाया, चुन कर कपड़े पहने, पर्फ़्यूम लगाया, लैंडलेडी के पास जा के नाश्ता किया। टाइम देखा, अभी 9.30 बजे थे, सो पढ़ने बैठ गया, लेकिन बेचैन रहा, पढ़ने की कोशिश की, पढ़ा नहीं गया! 11 बजे शीशे में खुद को देख कर टिप टॉप करके विमला से मिलने चल पड़ा।

रवि ने 11.30 बजे गली के नुक्कड़ पर खड़े पीपल के पेड़ के नीचे पहुंचा, पेड़ के पास देवी देवताओं की तीन चार तस्वीरें रखी थीं, कई दिए जल रहे थे, रवि दो चार मिनट खड़ा विमला के घर की तरफ़ देखता रहा, आते जाते लोग उसे घूर कर देखते हुए निकले तो रवि पेड़ के नीचे हाथ जोड़ कर बैठ गया। 12 बजे विमला गेट पर आई उसने इधर उधर देखा, पेड़ के नीचे रवि को बैठे देखा तो एक दीपक लेके पेड़ के पास आई दिया जलाते हुए कहने लगी

- मेरे घर के सामने पीले रंग के मकान में ऐनक वाली बुढ़िया आई है, उसके जाने के बाद आना,

रवि भक्त बन के बैठा पीले रंग के मकान को देखता रहा, आधे घंटे के इंतज़ार के बाद बुढ़िया स्टिक लिए बाहर निकल कर रवि की तरफ़ आने लगी, वह लगातार रवि को देख रही थी, रवि को घबराहट होने लगी, बुढ़िया नज़दीक आई तो रवि पेड़ को मत्था टेकने के लिए झुक गया, और छिपी आंखों से बुढ़िया को देखता रहा, बुढ़िया उसके पास आके रुक गई और अपनी स्टिक रवि की पीठ पर मारी और कहने लगी

- बेटा सोमवार के दिन शिवजी के मंदिर में दूध चढ़ाया करो, अच्छी घरवाली मिलेगी, मंगल वार को हनुमान जी को बूंदी का भोग लगाया करो, नौकरी मिलेगी, शनिवार की सुबह पीपल को जल दिया करो, प्रोमोशन मिलेगी, शाम को यहां दिया जलाया करो, धन मिलेगा। सुना?

और उसकी पीठ पर ज़ोर से स्टिक मार कर चल दी।

रवि थोड़ी देर उसी तरह झुका रहा, फिर सीधा हुआ, उठा दाएं बाएं देखा, गली खाली थी, वह इधर उधर देखता हुआ विमला के घर के अंदर गया, विमला ने दरवाज़ा बंद किया, और सोफ़े पर उसके सामने बैठ गई, रवि सर झुकाए अपने हाथों को देखता हुआ बैठा रहा, उसे

बात करने के लिए कुछ नहीं सूझ रहा था।

विमला– तुम्हारा नाम क्या है?

रवि– रवि...

विमला– पढ़ते हो?

रवि– हां...

विमला– कौन सी क्लास में?

रवि– फ़स्टईयर...

विमला– घर कहां है?

रवि– जालंधर!

विमला– यहां क्या करने आए हो?

रवि– पढ़ने आया हूं...

विमला– यहां किस के पास रहते हो?

रवि– पीजी हूं...

विमला– यहां मुझसे मिलने आए हो?

रवि– हां..

विमला– मैं अच्छी लगी हूं?

रवि– हां

विमला– प्यार करते हो?

रवि– पता नहीं...

विमला– शर्म आती है?

रवि– नहीं...

विमला– बेशर्म हो?

रवि– पता नहीं..

विमला उठकर उसके पास आ बैठी

विमला– पहले किसी से प्यार किया है?

रवि– नहीं...

विमला– मुझ से प्यार करोगे?

रवि– हां..

विमला ने अपने होंट उसके आगे किए

विमला– तो करो!

रवि कुछ देर भौंचक्का सा उसे देखता रह गया, फिर किस करने को आगे बढ़ा ही था, तभी किसी ने गेट खटखटाया, विमला खड़ी हो गई और रवि को बैड के नीचे छिपने के लिए कहा, उसे नीचे छिपा कर विमला बाहर गई, गेट पर पंडिंत खड़ा मिला, उसने दान लेने वाला झोला आगे करते हुए कहा

पडिंत- आज सोमवार है!

विमला- पता है!

कह के बड़बडाती हुई अंदर आई! अंदर आकर रवि को बाहर जाने के लिए कहा- बाहर आ जाओ, सोमवार चला गया,

रवि बाहर निकला और अपने होंट विमला के आगे किए... लेकिन विमला ने ध्यान नहीं दिया

विमला- अब तुम जाओ! कल इसी वक्त आना!

रवि- कल भी पीपल की पूजा करनी पड़ेगी?

विमला- मैं देखा था, वह बुढ़िया ने तुम्हें तंग कर रही थी!

रवि- हां कल फिर करेगी?

विमला- उसको तो मैं ठीक करूंगी! मैं तुम्हारी वेट करती रही और तुम पीपल की पूजा करते रहे!

रवि- जब सब ठीक हो तो फ़ोन करके बुला लिया करो...

विमला- मेरे पास मोबाइल नहीं है!

रवि- किसी दुकान से कर दिया करो!

विमला- आस पास किसी दुकान पर फोन नहीं है।

रवि को याद आया, दीपक ने ईटं का फ़ार्मुला बताया था, उसने विमला से कहा

- अपनी दीवार पर एक ईटं रख लो, तब मुझे घर बुलाना हो तो उस ईट को खड़ी कर दिया करना!

विमला उछल पड़ी

- यह तरीका ठीक है! अभी रखती हूं..

रवि- अब मैं जाउं?

रवि जाने को उद्यत हुआ तो विमला ने उसे रोका और उसे बैड के नीचे छिपने के लिए कहा, वह नीचे छिपा कर बाहर गई गली में इधर

उधर देखा, जब ठीक लगा तो अंदर आ कर उसे बैड के नीचे से निकलने के लिए कहा, रवि बाहर निकला तो उसने उसके साथ सट कर खड़ी हो गई, और अपने होंट आगे करते हुए कहा

– किस करो!

रवि ने उसको किस किया और विमला ने अलग हो कर मुस्कराते हुए उसे बाहर भेजा! रवि कांपता हुआ बाहर आया, गली खाली मिली, वह तेज़ी से चल कर गली से बाहर निकला, थोड़ी दूर जाके एक दुकान से चिल्ड कोल्ड ड्रिंक लिया दो बड़े बड़े घूंट लिए एक लंबी सांस ली तो थोड़ा होश में आया, एक दो हल्के हल्के सिप लिए तो उसके चेहरे पर मुस्कराहट प्रकट हुई, अब उसे लगा जैसे उसने एवरैस्ट पर विजय पा ली हो! मुस्कराहट खिल उठी, और चाल में मस्ती आ गई, गुनगुनाता हुआ अपने कमरे पर आया और बिस्तर पर लेट कर विमला के किस्सिंग की यादों में खो गया!

----

3 बजे दीपक ने गुड़िया के गेट के पास से गुज़रते हुए 'मोर की आवाज़' निकाली, गुड़िया ने दरवाज़ा खोला, दीपक सावधानी रखते हुए इधर उधर देख कर अंदर गया! और उसने चिकन का पैकेट उसे दिया,

गुड़िया– रेडीमेड लाए हो? मैं ने समझा था कच्चा लाओगे, मैं ने तो प्रोग्राम बनाया था तुम्हारे साथ बातें करते हुए बनाउंगी! मैंने मसाला तैयार करके रखा है!

दीपक– यह डिश मुझे अच्छी लगी थी सो तुम्हारे लिए भी ले आया!

गुड़िया– मैं अकेली नहीं खाउंगी, तुम नहीं खाओगे तो मैं फेंक दूंगी!

दीपक– मैंने कब कहा? मैं नहीं खाउंगा! तुम्हारे पास किचन में खड़े होकर तुम्हें खाते हुए देखूंगा और तुम्हारे हाथ से छीन कर खाउंगा!

गुड़िया ने चपाती बना कर उसे परोसी तो दीपक ने उसे कहा

– पहले तुम खाओ!

गुड़िया– मैंने रोटी बनानी है, हाथ खराब हो जाएंगे, तुम खिलाओ!

दीपक- कुछ नहीं होता! तुम शुरु करो!
गुड़िया- नहीं तुम खिलाओ!
दीपक- नहीं मैं नहीं खिलाउंगा, खुद खाओ!
गुड़िया- क्यों?
दीपक- जब मेरी पत्नी बन जाओगी तब खिलाउंगा! अभी मैं तुम्हें सिर्फ़ अपनी दोस्त बनाना चाहता हूं!
गुड़िया- बनाना चाहते हो, अभी तुम्हारी दोस्त नहीं बनी?
दीपक- नहीं, तुम तो मेरी दुश्मन हो, हर सैकंड अपनी बड़ी बड़ी आंखों मुझे धमकाती रहती हो, जल्दी आओ नहीं तो काट खाउंगी!
गुड़िया- मैं बिल्ली हूं?
दीपक- नहीं शेरनी हो...
गुड़िया- तुम खाना शुरु करो, मैं रोटियां बना लूं (दीपक ने एक कौर बनाया, तो गुड़िया ने उसके हाथ से कौर छीन कर अपने मुंह में डाल लिया, और कहने लगी) तुम छीनोगे तो मैं भी छीनूंगी!

दीपक के चेहरे पर आई स्माइल देख कर गुड़िया इतराई, दीपक ने दूसरा कौर बनाया, गुड़िया ने वह भी छीन कर खा लिया,

दीपक- प्रामिस करो हमेशा ऐसे ही छीन कर खाया करोगी!
गुड़िया- तुम अपने हाथ से नहीं खिलाओगे?
दीपक- शादी के बाद, सिर्फ पहले दिन! उससे पहले और बाद में मैं तो छीन के खाउंगा!
गुड़िया- तुम छीनोगे तो मैं भी छीनूंगी!

कुछ चपातियां बनाने के बाद गुड़िया ने एक कौर उठाया तो दीपक ने छीन लिया, हंसते हंसते दोनों छीना झपटी करते हुए खाना एंजॉय करते रहे!

----

3 बजे रवि 'ओके स्टूडियो' पर आया, ओके आउंटर पर बैठा एक गाहक से काम समझ रहा था, उसने रवि को रुकने का इशारा किया, गाहक के जाने के बाद उसने रवि से कहा

– कल आके कंट्रीब्यूशन के पैसे ले जाना।

रवि– ओके!

ओके– इतने दिन दीपक के साथ रहने का कुछ फ़ायदा हुआ?

रवि– सीखा समझा है, फ़ायदा भी हुआ है।

ओके– दीपक का मूड कैसा है?

रवि– अच्छा है! शनिवार शाम को घर चला गया था, शायद आज सुबह आ गया हो!

ओके– आज नहीं मिले?

रवि– नहीं, कुछ और काम था!

ओके को कुछ सैंस हुआ..

– कोई खास बात?

रवि– हां! मैंने एक गर्लफ्रैंड बना ली है!

तभी वेटर चाय ले कर आया, ओके ने उसे अंदर ले जाने का इशारा किया, और फुसफुसाते हुए रवि से कहने लगा

ओके– सभी अंदर स्टूडियो में बेठे हैं, गर्लफ्रैंड की कोई बात न बताना, यह जोकर तुम्हारा मज़ाक उड़ाने लग जाएंगे, बंदरो के हाथों में तलवार न पकड़ देना! सिर्फ़ दीपक के साथ जो बातचीत हुई है, वही बताना!

और उसे अंदर जाने का इशारा किया। सभी दोस्त हमेशा की तरह अंदर स्टूडियो में बैठे थे। ओके ने अंदर आके रवि से कहा

– अब बताओ, इतने दिन क्या हुआ?

रवि ने पूरे हफ़्ते में दीपक के साथ जो बातें हुई, जो घटनाएं हुई, बताई।

एक घंटा लग गया, अलार्म बजा और मेहफ़िल खत्म हुई। सब लोग चले गए।

मंगलवार 11 बजे रवि 'ओके स्टॅडियो' पर आया, ओके ने उसे पैसे दिए और बताया

– कल तुम्हारे जाने के बाद सभी वापिस आए थे और अपनी कंट्रीब्यूशन दे गए थे ले जाओ।

रवि– मैंने एक गर्ल-फ्रैंड बना ली है!

और उसने सारी कहानी सुनाई।

कैसे उसने लड़की का पर्स लौटाया, कैसे सारा दिन उसने शहर की गलियों में साईकल चलाई, कैसे उसकी मुलाकात लड़की से हुई, कैसे लड़की ने उसे अपने घर बुलाया! और लड़की के घर में ही मिलने की स्कीम बनी है।

सुनने के बाद ओके ने समझाया

– यह अफ़ेयर डेंजरस है, सम्भल के रहना! दोस्ती से आगे न बढ़ना, ग्रुप में तुम इसका कोई ज़िकर न करना, जो बताना है मैं बता दूंगा, तुम दीपक के साथ लगे रहो,

----

मंगलवार 3 बजे सभी दोस्त मिले, ओके ने रवि का प्रकरण सुनाया

– *कैसे उसने लड़की का पर्स लौटाया, कैसे सारा दिन उसने शहर की गलियों में साईकल चलाई, कैसे उसकी मुलाकात लड़की से हुई, कैसे लड़की ने उसे अपने घर बुलाया! और लड़की के घर में ही मिलने की स्कीम बनी है।*

काके को रवि की सफ़लता पर शक हुआ, उसे लगा रवि झूठी कहानियां सुना कर हमें बेवकूफ़ बना रहा है।

काका– वुडन बाक्स हमें बेवकूफ़ बना रहा है, स्माइल करनी तो आती नहीं है! इसको लड़की अपने घर लेके जाएगी! यह नज़रबट्टू किसी को घर के सामने नज़र आ जाए तो वह इसे झाड़ू मार के भगा देगी!

अमर– अपनी भविष्य वाणी कर रहे हो! आपबीती से मार खाए हुए नकली चाइनीज़! उसने दीपक से कुछ सीखा होगा!

सुहास– दो दिन में प्ले-बॉय बन गया! ओ माई गॉड! यह तो डायनामो इम्पासिबल मेजिशियन का मैजिक हो गया!

विक्टर– तुम्हें याद है? महीना भर पहले मेंरे साथ क्या हुआ था? मैं दीपक के स्टाइल में 'रात के दस बजे मिलना' के इशारे की प्रैक्टिस कर रहा था, मन्नू की बहन समझी मैं

उसे इशारे कर रहा हूं, उसने अपने भाई से मेरी शिकायत कर दी, वह साला चार लड़के लेके मुझे मारने आ गया, उस कमीने चुग़लखोर मेंटल कुलदीप ने उस झगड़े की न्यूज़ फोटो के साथ अख़बार में छाप दी थी!

ओके– आठ दस दिन दीपक की कम्पनी में रह कर रवि एक लड़की से दोस्ती करने में सक्सैसफ़ुल हो गया! इसका मतलब है, उसे फ़ार्मूले की एबीसीडी समझ आनी शुरु हो गई है।

जगदीप– रवि पूरी कहानी सुनाएगा तभी बात साफ़ होगी!

अमर– तभी हम इस फ़ंडे का सीक्रेट समझ सकेंगे!

ओके– इसीलिए तो हमने उसे दीपक के साथ लगाया है, अगर हम इस टेलैंट को अपने कैरेक्टर में एडाप्ट कर सके तो हमें इस मैजिकल क्वालिटी से अपनी लाइफ को इम्प्रूव करने में हैल्प मिलेगी!

जगदीप– पक्की बात है!

सुहास– ओके ठीक कहता है, यह टैक्नीक सारी उमर काम आने वाली है। इस टैक्नीक से हम दूसरों के दिल में अपने लिए प्यार पैदा कर सकते हैं! पापुलर हो सकते हैं।

ओके– यह क्वालिटी हमारे बहुत काम आएगी! महात्मा गांधी ने अपनी इस क्वालिटी से पूरे देश को आज़ादी की लड़ाई में बलिदान होने के लिए अपने साथ मिला लिया था!

काका– ठीक है, लेकिन वुडन बाक्स झूठ बोल रहा है, लड़की फंसाना उसके बाप के भी बस का रोग नहीं!

विक्टर– फिर रवि का जन्म कैसे हुआ है? तुम्हारे बाप ने इन्टरफ़ियर किया था?

और सभी खूब हंसे।

\-

मंगलवार 3 बजे दीपक और गुड़िया कमरे में बैठे बातें कर रहे थे

दीपक– मुझ से शादी करोगी?

गुड़िया– क्या जल्दी पड़ी है? पढ़ना नहीं है?

दीपक– शादी करने के बाद पढ़ाई करने से कौन रोकता है?
गुड़िया– सास ससुर राज़ी नहीं होते!
दीपक– मेरे ममी पापा राज़ी हैं!
गुड़िया– तुम शादी की बात करने गए थे?
दीपक– हां!
गुड़िया– मुझ से पूछा नहीं, मैं तुम से शादी करूंगी कि नहीं?
दीपक– तुम्हें तो मैं अपनी जान दे कर भी मना लूंगा!
गुड़िया– मैं मान जाउंगी, इतना भरोसा है मुझ पर?
दीपक– खुद से ज़्यादा। मैं, मेरे ममी, पापा, बहन सब तुम्हें अपने घर ले जाने को तैयार बैठे हैं!
गुड़िया– मैं ने अभी कुछ नहीं सोचा!
दीपक– क्यों नहीं सोचा? मैं अच्छा नहीं लगा?
गुड़िया– तुम्हारी दोस्ती में मज़ा आ रहा है, यह दोस्ती खोने की नहीं सोच सकती!
दीपक– मुझे भी पत्नी की नहीं दोस्त की ज़रूरत है, मेरी इच्छा है, शादी के बाद हम हमेशा इसी तरह दोस्त रहें!
गुड़िया– सम्बंध तो बदल जाएंगे ना, फ़र्क तो ज़रूर पड़ जाएगा!
दीपक– मेरे माता पिता ने भी लव मैरिज की थी, आज भी उनकी आंखे मिलती हैं, तो लगता है आंखें बातें कर रही हैं!
गुड़िया– तुम्हारी बातें सुन कर उनसे मिलने का दिल कर रहा है!
दीपक– मेरे ममी, पापा, बहन, वह सब भी तुम्हें मिलने को बेचैन हैं!
गुड़िया– तुम बताओ ना, मैं क्या करूं? मैं ने अभी कुछ नहीं सोचा!
दीपक– नहीं सोचा तो अब सोचो, हर अच्छाई बुराई पर गहराई से सोचो! मैं भी तुम्हारी तरह अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहता हूं, लेकिन डर लगता है, पढ़ाई पूरी होने तक का टाइम कहीं तुम्हें मुझ से छीन न लें! अब तुम्हारे बिना जीने का ख़्याल से भी घबराहट होती है!

गुड़िया- तुमने तो अपने घर में सब से सलाह ले ली, मैं तो किसी से बात नहीं कर सकती, मैं क्या करूं? किस से सलाह करूं?

दीपक- मैं ने किसी की सलाह नहीं ली! मैं तुम्हें अपना लाइफ़ पार्टनर बनाना चाहता हूं, उन्हें बताना ज़रूरी था! क्योंकि तुम्हें परिवार का मेम्बर बनना है! सोचो अगर हमारे प्यार की कहानी लीक हो गई तो हमारे लिए कितना घातक होगा! मैं और मेरी फ़ैमिली की ओपिनियन है कि हमारी शादी तुरंत कर दी जाए और हम अपनी स्टडी पर पूरी अटेन्शन से लग जाएं! जिस दिन तुम हां कर दोगी, मेरे पापा उसी दिन तुम्हारे पापा से बात करने आ जाएंगे!

गुड़िया- तुम्हारा क्या ख़्याल है?

दीपक- मैं नहीं चाहता, तुम मेरी ओपिनियन से इफ़ैक्टिड हो कर कोई डिसीज़न लो, यह डिसीज़न 100 पर्सेंट तुम्हारा अपना होना चाहिए! मैं 15 दिन तुमसे नहीं मिलूंगा, ताकि तुम बिना किसी दबाव के सोच सको! मैं तीन अक्तूबर को तुमसे मिलने आउंगा! ताकि तुम बिल्कुल फ्री हो कर सोच सको। अब गली की पोज़ीशन देख लो, ताकि मैं निकल सकूं!

गुड़िया ने रास्ता क्लीयर देख कर इशारा किया और दीपक बाहर गया, गुड़िया ने उदास आंखों से उसे विदा किया!

बुधवार 1 बजे काके को विक्टर और जगदीप मिले,

काका- तुम्हें रवि की कहानी पर यकीन आता है?

विक्टर- कैसे यकीन करेगा? इस शाहरुख खान जैसी पर्सनैलिटी को कोई लाइक नहीं मिलता! एक वीक हो गया प्रोफ़ाइल में अपनी नई पिक्चर डाले हुए, एक भी लाइक नहीं मिला! उस वुडन बाक्स को कौन लाइक करेगा?

जगदीप- कोई सिम्पल लड़की हो सकती है।

विक्टर- कोई भौंदू घरेलू टाइप लड़की हो सकती है, जिसे कोई

और नहीं मिलता हो!

जगदीप— उसने झूठी कहानी बनाई है, उसने दीपक के सैक्स एडवैंचर की नकल कर के कहानी बनाई है!

विक्टर— तुम ने ठीक पकड़ा है! एग्ज़ैक्टली यही बात है! आई एम श्योर!

जगदीप— उसके झूठ को बेनकाब करना चाहिए!

विक्टर— तुम कैसे करोगे? तुम डिटैक्टिव हो?

जगदीप— मैं कैसे कर सकता हूं? मैंने कभी जेम्ज़ बांड की फ़िल्म नहीं देखी!

काका— (विक्टर से) तुम कर सकते हो!

विक्टर— मैं?

काका— तुम जेम्ज़ बांड की फिल्में देखते हो।

विक्टर— मैं शहर का सब से पापुलर बॉय हूं, मैं डिटैक्टिव वर्क करके अपनी प्रैस्टिज लूज़ नहीं कर सकता। काके तुम जेम्ज़ बांड की फिल्म डाउन लोड करके देखो, उसको फ़ालो करो, और वुड बाक्स के झूठ की मिस्ट्री सोल्व करो!

काका— मैं उसके झूठ को बेनकाब करूंगा, सच को सब के सामने लाऊंगा!

और काके ने रवि की जासूसी शुरु कर दी। उसने अमर को फ़ोन किया

— अमर, रवि की लव-स्टोरी की कोई डीटेल क्लीयर हुई?

अमर— क्यों? क्या हुआ? कोई नई डैवेलपमैंट हुई है, क्या?

काका— उसकी स्टोरी झूठी है! मैं उसके झूठ की रियैलिटी सब के सामने लाना चाहता हूं!

अमर— क्या करोगे?

काका— उस लड़की का घर ढूंढूंगा और सच्चाई का पता लगाउंगा! तुम्हें कोई गैस्स है, उसका घर कहां है?

अमर— वह बता रहा था, उसके घर के पास एक पीपल का पेड़ है, जहां उसने बैठ कर उसके इंतज़ार में तपस्या की थी।

वीरवार 9 बजे सुबह काका अपने बड़े भाई के पास गया,

– भइया, मुझे आज स्कूटर चाहिए!

भइया– क्या करना है?

काका– एक दोस्त का घर ढूंडना है! सारे दोस्तों के पास जाना पड़ेगा!

भइया– मुझे आफ़िस छोड़ कर स्कूटर ले आना।

काका स्कूटर ने कर सारा दिन शहर की हर गली देखते हुए घूमता रहा...

एक आदमी से स्कूटर की हल्की सी टक्कर हो गई, उस आदमी ने काके को तीन चार थप्पड़ रसीद कर दिए, काका हाथ पांव जोड़ कर बड़ी मिन्नतें करके उससे जान बचा कर निकला!

एक बच्चे से टकराते टकराते बचा, उसकी मां ने काके को चप्पल से मारा! और उससे बच्चे को डराने का जुर्माना मांगा, और उसकी जेबें खाली करवा लीं!

गली गली घूमते हुए कई दफ़ा उसका सामना लड़कियों के एक ग्रुप से हुआ, लड़कियों ने समझा काका उनका पीछा कर रहा है, उन्होंने काके को पकड़ लिया, सब ने मिलके उसकी धुनाई की, उसकी कमीज़ उतरवा कर रख ली, और उसके मुंह पर मिट्टी भी मल दी! काके ने उनके सामने कान पकड़ कर उठक बैठक की, तब कहीं उन्होंने काके को जाने दिया।

वहां से छूटने के बाद काका स्कूटर लेकर बनियान और पैंट में आगे चला, एक गली में मुड़ते हुए उसे लड़कियों का वही ग्रुप दिखाई दे गया तो काके ने घबरा कर स्कूटर को यू टर्न में घुमाना चाहा तो स्किड कर गया और उसकी पैंट फट गई, लडकियां उसे देख कर हंसने लगीं, काके ने किसी तरह अपना स्कूटर स्टार्ट किया और वहां से अपने घर की तरफ़ चला, रास्ते में सुहास मिला, उसने काके को रोका और उसकी हालत देख कर बहुत हंसा, काके ने अपनी सफ़ाई देते हुए सारी बात सुनाई और गली ढूंडने की पूरी आत्मकथा बिसूरते हुए सुनाई, सुहास सुन सुन कर हंसता रहा। अंत में काके ने कहा

– कई गलियों में पीपल के पेड़ मिले हैं, पता नहीं कौन सी

गली है?

सुहास- रवि ने बताया था, उस लड़की के घर के सामने एक पीला मकान है, जहां से वह बुढ़िया निकली थी जिसने उसे छड़ी से उसे मारा था!

काका- मिल गया, मिल गया!

सुहास- क्या मिल गया?

काका- क्लू मिल गया! अब सच्चाई सामने लाकर रहूंगा!

सुहास- इससे घर मिल जाएगा?

काका- सब झूठ है! ऐसा कोई घर है ही नहीं! मिलेगा कहां?

सुहास- यू आर राइट! अगर घर नहीं तो सब झूठ!

काका- अगर घर है? तो सच है? मीनज़, रवि ने लड़की फंसा ली? यह नहीं हो सकता! नहीं हो सकता!

कहते कहते वह स्कूटर स्टार्ट करके चल पड़ा

- मैं ऐसा नहीं होने दूंगा, नहीं होने दूंगा...

वीरवार 3 बजे 'ओके स्टूडियो' पर मित्र-मंडली में

ओके- आज काका नहीं आया!

जगदीप- सुबह मिला था, कह रहा था रवि झूठ बोल रहा है सच का पता लगाएगा।

विक्टर- जेम्ज़ बॉंड की फिल्म देख कर डिटैक्टिव बनेगा!

सब हंसने लगे।

वीरवार 3 बजे रवि ने गली में टहलते हुए गली पार की, विमला की ईंट लेटी हुई मिली।

वह दीपक के कमरे पर गया, लेकिन दीपक नहीं मिला, तो गुड़िया के घर की गली का चक्कर लगाते हुए गुड़िया की दीवार पर रखी ईंट देखी और अपने कमरे पर आया।

शुक्रवार 9 बजे सुबह काका फिर अपने भाई के पास स्कूटर मांगने गया तो वह काके की शक्ल देखते ही कहने लगा

- अब स्कूटर नहीं मिलेगा, काके! कल तू उसकी शक्ल बिगाड़ लाया है!

काके ने साईकल मिस्त्री से साईकल किराए पर ली और फिर से सारे शहर का दौरा करने निकल पड़ा। सारा दिन शहर की गलियां छानने के बाद उसे चार पीले रंग के घर ऐसे मिले जिनके पास पीपल का पेड़ था। शाम को थका हारा घर आया, अपने बिस्तर पर पड़ा उल्टी सीधी बातें सोचता रहा, रात भर, बेचैन रहा।

शनिवार 9 बजे सुबह काके ने सुहास को फ़ोन किया, उसने उठाते ही हैरानी से पूछा

- क्या हुआ?

काका- यार, कल शहर के सारे पीले मकान और पीपल के पेड़ देख आया, कहीं कुछ नज़र नहीं आया!

सुहास- मैं समझा कोई एक्सीडैंट हो गया है। मैं अभी बाथरूम भी नहीं गया! और तुम ने शहर के पीले मकान और पीपल के पेड़ गिनने गिनाने शुरु कर दिए!

काका- कल सारा दिन साइकल पर शहर की गलियां छानता रहा हूं, टांगे दुख रही हैं!

सुहास- मैंने तो तुम्हें यह पंगा लेने के लिए नहीं कहा था! मुझे क्यों बोर कर रहे हो?

काका- मुझे बताओ रवि उस लड़की के घर किस टाइम जाता है?

सुहास- ओए, तूतिए! तेरी पॉटी तेरी खोपड़ी में इकट्ठी हो गई है! मैं उसका सैक्टरी हूं? मुझे क्या पता?

काका- अबे गालियां क्यों दे रहा है? मेरा दिमाग़ खराब हुआ पड़ा है, सारी रात सोया नहीं! उसने कुछ तो बताया होगा!

सुहास- ठहर जा, मुझे बहुत प्रैशर हो रहा है, होल्ड कर, मैं सीट पर बैठ कर सोचता हूं!

काका फ़ोन कान से लगाए दो तीन मिनट तक फोन में से आने वाली गैस रिलीज़ की आवाज़ें सुन कर बुरी बुरी शक्लें बनाता रहा,

सुहास- हैलो, सुन रहा है?

काका- अरे कुतिया चोर, बड़ी गैस छोड़ता है! पॉटी खाता है?
सुहास- बकवास मत कर, भैंस चोर! सुन..
काका- सुन सुन के नाक सड़ गया! भौंक, क्या कह रहा है?
सुहास- लोग ठीक कहते हैं, दुनिया की हर इन्वेन्शन पॉट पर बैठ कर की गई है! दिमाग़ की सारी मशीनरी चलने लग जाती है।
काका- मुझे बताओ रवि उस लड़की के घर किस टाइम जाता है?
सुहास- भूतनी के! तेरी पॉटी की गैस तेरी खोपड़ी में पहुंच गई है। उसकी पूरी कहानी सुनके भी नहीं समझा पाया! अबे गधे की दुम! वह उसके घर 12 बजे गया था!
काका- टाइम पता होता तो हर घर के सामने 12 बजे पहुंच कर देख लेता, रवि कौन से घर में जाता है,
सुहास- कितने घर देखने हैं?
काका- सात घरों के सामने नीले मकान हैं
सुहास- मतलब है, तुम रोज़ एक घर के सामने धरना दोगे!
काका- देना ही पड़ेगा, वरना कैसे पता लगेगा वह किस घर में जाता है?
सुहास- अबे गधे की टेढ़ी दुम! 12 बजे रवि का पीछा करके देख लो कहां जाता है? जाता भी है या नहीं?
काका- यार यह बात मुझे नहीं सूझी? तुम्हें कैसे सूझ गई?
सुहास- मैंने बताया है ना, दुनिया की हर इन्वैन्शन पॉट पर बैठ कर की गई है! दिमाग़ की सारी मशीनरी चलने लग जाती है।
काका- मैं भी अब पॉट पर बैठ कर सोचा करूंगा!
सुहास- फोन बंद कर! मैं ने अभी और बहुत कुछ सोचना है!

शनिवार सुबह रवि कालिज गया, कालिज में पढ़ाई पर ध्यान देने की कोशिश करता रहा लेकिन बेचैन रहा और पीरियड स्किप कर के **12 बजे** विमला के घर पहुंच गया, देखा ईंट खड़ी मिला तो इधर

उधर देख कर अन्दर जाने लगा तो विमला ने दरवाज़ा खोल कर बाहर देखा, आंखें मिलीं और विमला मुस्कराई और दरवाज़ा पूरा खोल दिया, रवि भी खुश हो गया और अंदर गया! विमला ने दरवाज़ा बंद किया और उसके पास आई, रवि ने उसे बाहों में लपेटा और किस करने लगा और विमला चुपचाप उसकी बाहों में सिमटी रही, चार पांच मिनट रवि किस करता रहा, ज़रा सा सांस लेने के लिए रुका तो विमला ने उसे अलग करते हुए कहा

– बस, अब जाओ, कल आना!

कह के उसने दरवाज़ा खोल कर उसे बाहर की तरफ़ धकेला, रवि कन्फ़्यूज़ सा बाहर आ गया और अपने घर को चल दिया!

शनिवार 11.30 बजे काका ठीक 11.30 बजे रवि के पीजी हाउस के सामने छिप कर खड़ा हो गया, 1 बजे तक कमरे को घूरता रहा, रवि दिखाई नहीं दिया तो उसकी लैंडलेडी के पास जाके पूछा

– रवि कहां है?

लैंडलेडी– वह तो ब्रेकफ़ास्ट करते ही कहीं चला गया था!

काका उदास होके वापिस आया, और सुहास को फ़ोन किया

– रवि तो ब्रेकफ़ास्ट करते ही कहीं चला गया!

सुहास– वह वहीं गया होगा! तुम कल सुबह ही रवि के घर के बाहर डेरा जमा लो!

काका– मैं सुबह नौ बजे ही रवि के घर के बाहर डेरा जमा लूंगा!

सुहास– शाबाश! मिनी जेम्ज़ बांड! केस सॉल्व करो, सच्चाई का पता लगाओ!

अगले दिन रविवार 9 बजे सुबह काका नौ बजे रवि के पीजी हाउस के इर्द गिर्द मंडराने लगा, एक बूढ़ी औरत ने अपने घर की खिड़की से उसे देखा तो उस पर शक हो गया–यह लड़का कहीं चोरी करने आया है!

वह थोड़ी देर उस की निगरानी करती रही, फिर झाड़ू लेकर उसके पास

आई - कहां चोरी करने आया है?

और उसका जवाब सुने बिना उसे झाड़ू से मारने लगी, तीन चार झाड़ू खाने के बाद उसने बूढ़ी के पांव पकड़ लिए

काका- मैं तुली टीवी वाले का बेटा हूं, मैं चोरी करने नहीं, अपने दोस्त से मिलने आया हूं...

बूढ़ी- दोस्त से मिलने आया है तो चोरों की तरह इधर उधर क्या झांक रहा है? मुझे तो लगता है, तू या तो चोरी करेगा या किसी बच्चे को उठा के भागेगा!

कहते कहते उसे दो तीन झाड़ू और टिका दिए, पीजी हाउस की लैंडलेडी शोर सुन कर बाहर आई काका भाग कर उसके पास गया, बूढ़ी उसके पीछे पीछे आ गई, काके ने बूढ़ी से कहा

काका- आप इनसे पूछ लो, मैं रवि का दोस्त हूं, उससे मिलने आया हूं!

बूढ़ी- मिलने आया है तो बाहर खड़ा क्या कर रहा था?

काका- किसी की वेट कर रहा था... (लैंडलेडी से) रवि कमरे में है?

लैंडलेडी- हां है!

काका- मैं उसके पास जाउं?

लैंडलेडी- जाओ!

और काका वहां से निकल कर रवि के पास गया,

रवि- अरे काके तुम यहां?

काका- मैं तुम से मिलने आया था, एक बूढ़ी लेडी झाड़ू से मुझे मारने लगी!

रवि- क्यों?

तभी लैंडलेडी और बूढ़ी वहां आ गईं, काका उन्हें देख कर रवि के पीछे छिपने लगा

काका- मैंने कुछ नहीं किया, मैंने कुछ नहीं किया!

बूढ़ी- तू वहां छुप छुप के क्या देख रहा था?

काका- आंटी, मैं... मैं...

लैंडलेडी- कौन? तुम? तुम तो कल भी आए थे!

काका- जी मैं मैं

लैंडलेडी- तुम बिल्ली की तरह मैं मैं क्यों किए जा रहे हो?

काका- वोह मैं बिल्ली....

रवि- आंटी, यह बिल्लियों से डरता है!

बूढ़ी- पिछले जन्म में चूहा होगा!

लैंडलेडी बूढ़ी से कहने लगी

- सब पिछले जन्मों का फल है!

और दोनों बातें करते हुए वहां से चली गईं! उनके जाने के बाद

रवि- तुम सुबह सुबह यहां क्या कर रहे हो?

काका- तुम से मिलने आया था, तुम्हारी लैंडलेडी ने बताया, तुम सुबह सुबह ही कहीं चले गए थे!

रवि- कालिज गया था! तुम नहीं पढ़ते तो मैं भी न पढ़ूं?

काका- आज नहीं गए?

रवि- आज कहीं नहीं जा सकता, आज संडे है! पागल हो गए हो? दिमाग़ खराब हो गया है क्या?

काका- बूढ़ी ने झाड़ू मार मार के दिमाग़ खराब कर दिया! मैं जा रहा हूं!

रवि- मुझ से क्या बात करने आए थे?

काका- भूल गया! झाड़ू की मार ने मेरा दिमाग़ खराब कर दिया है, मैं जा रहा हूं!

रवि- मैं ने एक गर्ल-फ्रैंड बना ली है! कल उसके साथ हॉट किस्सिंग की!

काका- झूठ बोलते हो!

रवि- नहीं सच बोल रहा हूं!

काका- कैसे फंसाई?

रवि- अचानक ही फंस गई! दीपक ने एक हिंट दिया था, काम कर गया!

काका- क्या हिंट था?

रवि- उसने समझाया, सब को स्माइल पास किया करो, कोई न कोई ज़रूर फंस जाएगी! मैंने स्माइल किया और वह

फंस गई! कल उसने घर में बुलाया, मैंने उसे हॉट किस्सिंग किया!

काका- इम्पॉसिबल! तुम झूठ बोल रहे हो! कोई लड़की अपने बॉय-फ्रैंड को अपने घर नहीं बुलाती!

रवि- नहीं यार! मैं ने दीपक का फ़ार्मूला चलाया है, दीवार पर रखी ईंट को संकेत बनाया है, जब वह अकेली होती है तो संकेत कर देती है। मैं अंदर चला जाता हूं!

काका- तुमने दीपक से झूठी कहानियां बनाना सीख ली हैं? वह गपौड़िया भी ईंट को संकेत बनाने की कहानियां सुनाता है, अब तुम भी शुरु हो गए!

रवि- तुम्हें यकीन नहीं होता तो कल खुद देख लेना!

काका- मोबाइल से शूट करके दिखाओगे? जैसे दीपक ने करके दिखाया था!

रवि- नहीं, कल साढ़े ग्यारह बजे मेरे साथ चलना, खुद देख लेना!

काका- रियली? दिखाओगे?

रवि- मेरे साथ चलना, खुद देख लेना!

सोमवार 11 बजे काका रवि के पास पहुंच गया!

रवि- बड़ी जल्दी है? दोस्त पर यकीन नहीं है?

काका- कोशिश कर रहा हूं! होता नहीं है।

रवि- थोड़ी देर में अपनी आंखों से देख लोगे! चलो चलते हैं, थोड़ी देर बाज़ार में घूमने के बाद वहां चलेंगे!

दोनों वहां से चले, रवि दीपक की सलाह पर चलते हुए हर वक्त स्माइल करने की कोशिश करने लगा था, बाज़ार में चलते हुए काके ने अनुभव किया, हर कोई रवि को देख कर मुस्कराता रहा है, उससे रवि से पूछा - क्या बात है? आज सभी तुम्हें देख कर हंस रहे हैं! लगता है, वह तुम्हें पागल समझते हैं!

रवि ने मुस्कराते हुए कहा

- नहीं, वह हैरान हैं, मैं क्यों एक पागल के साथ घूम रहा

हूं?

काका- मुझे लगता है तुम पागल हो गए हो, ऐसे हंस हंस के लोगों को देख रहे हो, वह तुम्हें देख के हंसेंगे नहीं तो क्या रोएंगे?

रवि- मैं उन्हें हंस के देखता हूं, इसीलिए वह वापिस हंसते हैं!

काका- तुम पागल हो गए हो!

रवि हंस कर रह गया! थोड़ी देर में वह पीपल वाली गली में के पास पहुंचे तो रवि ने उसे समझाया

- मैं जा रहा हूं, तुम यहीं रुक कर देख लो, और अपनी तसल्ली कर लो!

काका- मैं साथ चलूंगा!

रवि- पागल हो गए हो? लड़की के घर तुम्हें साथ लेके जाउंगा?

काका- अकेला खड़ा रहूंगा, तो लोग शक करेंगे!

रवि- उस पीपल के नीचे बैठ कर पूजा करने की एक्टिंग करते रहो। मैं ने भी की थी!

काका पीपल के नीचे बैठ गया। रवि तिरछी नज़र से विमला के घर को देखता हुआ आगे निकल गया, ईंट लेटी हुई मिली, मतलब, विमला अकेली नहीं थी! रवि ने आगे जा कर काके को इशारे से अपने पास बुलाया। और उसे बताया

- वह घर में अकेली नहीं है!

काका- तुम मुझे उल्लू बना रहे हो!

रवि- हर बात को उल्टा समझोगे उल्लू बन ही जाओगे! अब चलो, थोड़ी देर बाद आएंगे!

एक घंटे बाद दोनों ने वही कार्यक्रम दोहराया, ईंट लेटी हुई मिली, मतलब, विमला अकेली नहीं थी! रवि ने आगे जा कर काके को इशारे से अपने पास बुलाया। और उसे बताया

- वह घर में अकेली नहीं है!

काका- तुम पक्का मुझे उल्लू बना रहे हो!

रवि- तुम खुद देख लो, दीवार पर रखी ईंट खड़ी नहीं है!

काके ने देखा, रवि ठीक कह रहा था! और वह दोनों वापिस चल दिए।

काका- मैं बोर हो गया हूं, जा रहा हूं...

रवि- ओके, बाय, मैं भी लंच करने जा रहा हूं!

दोनों अलग रास्तों पर चल पड़े!

काका चलते चलते रुक कर सोचने लगा

और वापिस विमला के घर के सामने पहुंचा, ईंट लेटी हुई मिली, उसे खुराफ़ात सूझी, इधर उधर देखा आंख चुरा कर ईंट खड़ी कर दी,

----

दूसरी तरफ़ रवि ने एक बार फिर ट्राई करने की सोची और विमला के घर के सामने पहुंचा, ईंट खड़ी मिली, रवि ने इधर उधर देखा और जल्दी दरवाज़ा खोल कर से घर के अंदर गया, काका दूर पेड़ की ओट से देख रहा था, अंदर विमला कुछ करती हुई मिली, रवि ने आव देखा न ताव, उसे लपेटा और किस करने लगा, विमला कसमसाती रही, उसकी बाहों से छूटने की कोशिश करती रही, लेकिन रवि किस्सिंग करता रहा, पिछले कमरे से विमला की मां और पिता आ गए, पिता ने अपने बेटे को आवाज़ दी

- दिलेर, जल्दी आओ...

दिलेर ने भी विमला को उसकी बाहों में छटपटाते देखा, आवाज़ से चौंक कर रवि उससे अलग हुआ, हैरान हो कर उन्हें देखता रह गया, विमला की मां ने चप्पल से शुरु किया, पिता ने थप्पड़ चलाए, दिलेर मुक्के चलाए, विमला उसे गालियां देने लगी

- कुत्ता, कमीना, सुअर, कनखजूरा, बिच्छू वगैरह वगैरह..

रवि नीचे झुक गया, दो तीन मिनट मार खाने के बाद हाथ बढ़ा कर विमला की टांग खींच ली, वह चीख़ मार कर गिर गई, सब का ध्यान बंटा तो रवि खुले दरवाज़े का फ़ायदा उठा कर भाग निकला, दिलेर उसके पीछे जाने लगा तो मां ने उसको पकड़ के पीछे खींच कर दरवाज़ा बंद कर लिया,

- उसे जाने दो, लोगों को पता लगेगा तो बदनामी होगी...

रवि भागता हुआ निकला, काका छिप कर देखता रहा, रवि भागते हुए कई गलियां पार कर गया! ------------------------

मंगलवार 10 बजे सुबह रवि दीपक को मिलने उसके कमरे पर गया दीपक- क्या बात है? कई दिनों से मिले नहीं!

रवि- मैं उस पर्स वाली लड़की के चक्कर में उलझ गया था..

दीपक- यह प्यार मुहब्बत इन्सान का ध्यान अपने काम से हटा देती है।

रवि- नहीं यार,

दीपक- यह प्यार मुहब्बत अपने दोस्तों से भी दूर कर देती है। तुम स्टूडियो पर नहीं गए? मिले किसी से?

रवि- स्टूडियो पर तो नहीं गया, कल काके से मुलाकात हुई थी। गड़बड़ हो गई है!

दीपक- क्या गड़बड़ हो गई? कहां गए थे?

रवि- कल काका मेरे साथ ही था! बड़ी गड़बड़ हो गई... उसी लड़की से मिलने जाना था, मेरे साथ गया था!

दीपक- उसे लड़की से मिलवाने ले गए थे?

रवि- मिलवाने नहीं दिखाने ले के गया था, वह मुझे झूठा समझ रहा था!

दीपक- लड़की दिखाने गए थे?

रवि- नहीं यार! उसे सच्चाई दिखाने गया था!

दीपक- रवि! पहले पानी पी और मुझे पूरी कहानी सुना! मुझे तुम्हारी बात का अगाड़ा पिछाड़ा ही पल्ले नहीं पड़ा!

रवि ने बॉटल से पानी पिया,

दीपक- चाय पिओगे या काफ़ी?

रवि- चाय बना लो!

दीपक ने दो कप चाय बनाई, उसको एक कप देके कहा

\- अब शुरु से आखिर तक की पूरी बात डीटेल में बताओ!

रवि- उस दिन तुम्हें घर जाने के लिए बस पर चढ़ाने के बाद उस लड़की को ढूंडने का ख़्याल आया, अगली सुबह नहा कर तैयार हुआ,

लैंडलेडी ने मुझसे कहा

- मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें पड़ौसी से साईकल ले देती हूं! आज उसकी छुट्टी है।

साईकल लेकर चल पड़ा, और शहर की हर गली देखता हुआ सारा दिन घूमता रहा। अंत में उसकी एक झलक देखने को मिल गई, वह उसे सब्ज़ी लेकर घर में जाती दिखाई दे गई, अगली सुबह वह अपने घर के आगे झाड़ू देती नज़र आ गई। मैंने वहां खेलते एक बच्चे से पूछा - उस लड़की का नाम क्या है?

वह पूछने लगी

- किस को ढूंड रहे हो? (फिर धीमी आवाज़ में बोली) मैं उधर डेरी पर दूध लेने जा रही हूं तुम वहां चलो,

विमला- तुम पीपल के पेड़ के नीचे खड़े रहना, अकेली होते ही तुम्हें बुला लूंगी।

पेड़ के नीचे रवि को बैठे देखा तो एक दीपक लेके पेड़ के पास आई दिया जलाते हुए कहने लगी

- मेरे घर के सामने पीले रंग के मकान में ऐनक वाली बुढ़िया आई है, उसके जाने के बाद आना,

वह इधर उधर देखता हुआ विमला के घर के अंदर गया, विमला ने दरवाज़ा बंद किया,

विमला- तुम्हारा नाम क्या है?

रवि- रवि...

विमला ने अपने होंट उसके आगे किए

विमला- तो करो! ....

रवि ने उसको किस किया और विमला ने अलग हो कर मुस्कराते हुए उसे बाहर भेजा

विमला- अब तुम जाओ! कल इसी वक्त आना!

रवि ने उसे ईटं का फ़ार्मुला बताया

काके को मेरी कहानी पर यकीन नहीं हुआ

काका- इम्पॉसिबल! तुम झूठ बोल रहे हो! कोई लड़की अपने बॉय-फ्रैंड को अपने घर नहीं बुलाती!

रवि- नहीं यार! मैं ने दीपक का फ़ार्मूला चलाया है, दीवार पर

रखी ईंट को सिगनल बनाया है, जब वह अकेली होती है तो सिगनल कर देती है। मैं अंदर चला जाता हूं!

काका- दीपक से झूठी कहानियां बनाना सीख ली हैं? वह गपौड़िया भी ईंट को सिगनल बनाने की कहानियां सुनाता है, अब तुम भी शुरु हो गए!

रवि- तुम्हें यकीन नहीं होता तो कल खुद देख लेना!

काका- मोबाइल से शूट करके दिखाओगे? जैसे दीपक ने करके दिखाया था!

रवि- नहीं, कल साढ़े ग्यारह बजे मेरे साथ चलना, खुद देख लेना!

काका- रियली? दिखाओगे?

रवि- मेरे साथ चलना, खुद देख लेना!

विमला के घर के सामने पहुंचा, ईंट खड़ी मिली, रवि ने इधर उधर देखा और जल्दी दरवाज़ा खोल कर से घर के अंदर गया, काका दूर पेड़ की ओट से देख रहा था, अंदर विमला कुछ करती हुई मिली, रवि ने आव देखा न ताव, उसे लपेटा और किस करने लगा, विमला कसमसाती रही, उसकी बाहों से छूटने की कोशिश करती रही, लेकिन रवि किस्सिंग करता रहा, पिछले कमरे से विमला की मां और पिता आ गए, पिता ने अपने बेटे को आवाज़ दी

- दिलेर, जल्दी आओ...

दिलेर ने भी विमला को उसकी बाहों में छटपटाते देखा, आवाज़ से चौंक कर रवि उससे अलग हुआ, हैरान हो कर उन्हें देखता रह गया, विमला की मां ने चप्पल से शुरु किया, पिता ने थप्पड़ चलाए, दिलेर मुक्के चलाए, विमला उसे गालियां देने लगी

- कुत्ता, कमीना, सुअर, कनखजूरा, बिच्छू वगैरह वगैरह..

रवि नीचे झुक गया, दो तीन मिनट मार खाने के बाद हाथ बढ़ा कर विमला की टांग खींच ली, वह चीख़ मार कर गिर गई, सब का ध्यान बंटा तो रवि खुले दरवाज़े का फ़ायदा उठा कर भाग निकला,

रवि पूरा किस्सा सुनाने के बाद कहने लगा

- पता नहीं यह कैसे हो गया, सब घर में थे तो उसने ईंट

खड़ी क्यों की?

दीपक- उससे मिलोगे तो क्लीयर हो जाएगा!

रवि- उन्होंने फिर पकड़ लिया तो मार मार के कीमा बना देंगे! अब मैं उससे मिलने नहीं जाउंगा...

दीपक- तुम बिदक गए हो, विमला तो तुमसे मिलना चाहेगी, वह तुम्हारी दोस्त है! हो सकता है, वह तुम से प्यार करने लगी हो!

रवि- उसके परिवार ने मुझे मारना शुरु किया, तो उसने भी मुझे गालियां देनी शुरु कर दीं, ऐसे करते हैं प्यार?

दीपक - वह तुम से ज़्यादा समझदार है, उसने अकार्डिंगली रिएक्ट किया है,

रवि- पता नहीं, उसके साथ उन्होंने क्या किया होगा?

दीपक- इस तरह उसने अपनी क्लीन चिट एक्आयर कर ली है, सारा इल्ज़ाम तुम्हारे सिर पर डाल दिया है! अब वह आरोप मुक्त है। उसे थोड़ी बहुत डांट पड़ेगी, बस! और कुछ नहीं होगा! वह तुम से ज़रूर मिलना चाहेगी!

रवि- कैसे मिलेगी? मैं तो उस एरिया में कभी नहीं जाउंगा! किसी ने देख लिया तो बचना मुश्किल है।

दीपक- अपना अपीयरैंस चेंज कर लो!

रवि- कैसे?

दीपक- स्पैक्ट्स लगा लो, सर पर कैप रख लो, दाढ़ी रख लो!

रवि- दाढ़ी आने में दो तीन महीने लग जाएंगे...

दीपक- तब तक कम से कम बाहर निकलो, तब तक उधर न जाना, अंदर बैठ कर स्टडी करो, मौके का फ़ायदा उठाओ!

रवि- यही करना पड़ेगा! अच्छा तो यही होता मैं दो तीन महीने के लिए घर चला जाता,

दीपक- क्या बताते मां बाप को? क्यों पढ़ाई छोड़ के वापिस आए हो?

रवि- यही तो चक्कर है!

दीपक कुछ देर सोचता रहा, फिर

दीपक- एक बात बताओ, तुमने इस लड़की के साथ दोस्ती क्या सोच के शुरु की थी?

रवि- लड़की से दोस्ती करने के लिए सोचने की क्या ज़रूरत है?

दीपक- जवाब दो, तुम ने लड़की से दोस्ती क्यों की?

रवि- एंजॉय करने के लिए...

दीपक- सिर्फ एंजॉय और कुछ नहीं?

रवि- और क्या करना है?

दीपक- अगर उससे शादी करनी पड़ जाए तो कर लोगे?

रवि- मुझे करने में कोई प्राब्लम नहीं! अच्छी लड़की है!

दीपक- एंजॉय करने के लिए करोगे?

रवि- एंजॉय करने के लिए ही तो शादी करते हैं!

दीपक- एंजॉय कौन सा? शरीर का या दिल का?

रवि- लड़की से साथ एंजॉय शरीर से होता है! दिल का इसके साथ क्या रिलेशन है?

दीपक- कोई लड़की दिल को भाती है, तभी उसके साथ रिलेशन बनाने का दिल करता है, अगर कोई लड़की अच्छी न लगे तो क्या उसे किस करने का दिल करेगा?

रवि- नहीं!

दीपक- दिल से प्यार जैनेरेट होता है, और प्यार से सैक्स! प्यार से जैनेरेट होने वाला सैक्स सोल-सूदिंग होता है, थोड़ी देर का साथ सारी ज़िंदगी के लिए आनन्द बन जाता है! सिर्फ़ शरीर से जैनेरेट होने वाला सैक्स सिर्फ़ फ़िज़िकल एक्शन है! इससे सिर्फ़ थोड़ी देर का मज़ा मिलता है!

रवि- दिल से जैनेरेट हो या शरीर से! अल्टीमेट तो सैक्स है, जो लड़की अच्छी न लगे उससे तो बात करने का दिल नहीं करता!

दीपक- अपने दिल को एनालाइज़ करो, तुम्हें उससे प्यार है या फ़िज़िकल एट्रैक्शन!

रवि सोच में पड़ गया

– पता नहीं! समझ नहीं आता!

दीपक– प्यार लॉंग लास्टिंग फ़ीलिंग होती है, ए टाइम प्लैज़र और फ़िज़िकल एट्रैक्शन टाइमली उठने वाली क्रेज़!

रवि– समझ नहीं आता!

दीपक– खुद को समझना इतना आसान नहीं है। फ़िर भी गहराई से समझने की कोशिश करो, अगर लड़की को तुमसे प्यार है, तो उस लड़की के लिए संसीयर हो जाओ, प्यार इस सृष्टि का सब से बड़ा वरदान है।

रवि– अब मेरे संसीयर हो जाने से क्या होगा, बात तो बिगड़ गई!

दीपक– कहते हैं सच्चे दिल से किसी को चाहने वाले का सारी सृष्टि साथ देने लगती है! कोई न कोई रास्ता ज़रूर खुलेगा! हो सकता है, मुझे या तुम्हें कोई स्कीम सूझ जाए!

वीरवार 3 बजे दीपक ने गुड़िया के घर के पास जा के देखा ईंट खड़ी मिली, उसने इधर उधर देखा और मोर की आवाज़ का निकाल के इशारा किया, गुड़िया दरवाज़ा खोल कर बाहर आई और दीपक अंदर गया, गुड़िया दरवाज़ा बंद करके आई और उससे पूछने लगी

गुड़िया– मेरी याद आ गई?

दीपक– यह पूछो अपनी याद आ गई?

गुड़िया– क्या मतलब?

दीपक– तुम्हें भूलता नहीं, अपनी याद आती नहीं! तुम्हारा चेहरा आंखों के सामने से हटे तो अपनी याद आए!

गुड़िया– बड़े गपौड़िए हो! इतने दिन बाद तुम्हें मेरी याद आई है। मैंने तुम्हारे लिए काफ़ी बनाई है! मुझे पता था आज तुम आओगे!

दीपक– मैं तो तुम्हारे हाथ का बना खाना खाने का मूड बना के आया था!

गुड़िया- मेरा तुम्हारे साथ काफ़ी पीने का मूड है!

दीपक- तो ठीक है, काफ़ी पीते हैं, लंच अगली दफ़ा सही!

गुड़िया- नहीं, काफ़ी फिर सही, मैं खाना बना देती हूं!

दीपक- नहीं, लेडीज़ फ़स्ट! काफ़ी...

गुड़िया- सब्ज़ी बनी पड़ी है, दस मिनट में रोटी बन जाएगी, मैं भी खाने के लिए तुम्हारा वेट कर रही थी...

और वह खाना बनाने लगी, दीपक उसके पास खडा हो गया,

गुड़िया- तुम ऐसे मुझे देखते रहते हो, मेरे हाथ ठीक से नहीं चलते!

दीपक- मैं हमेशा ऐसे ही तुम्हें देखते रहना चाहता हूं! तुम्हें अच्छा नहीं लगता?

गुड़िया- अच्छा लगता है, लेकिन काम ठीक से नहीं होता, ध्यान तुम्हारी तरफ़ लगा रहता हे!

दीपक- मैंने तुम्हें सोचने के लिए दस बारह दिन का टाईम दिया था, तीन अक्तूबर के बाद आने का वादा कर के गया था, अपने टाइम पर आ गया हूं! अब बताओ, क्या सोचा है?

गुड़िया- चाहे शादी करें या एंगेजमेंट, हमें अपनी पढ़ाई ज़रूर पूरी करनी चाहिए!

दीपक- मैं भी यही चाहता हूं! डिसाईड यह करना है, शादी करनी है या एंगेजमैंट?

गुड़िया- पहले एंगेजमैंट होती है फिर शादी!

दीपक- पहली दफ़ा कर रहा हूं, आगे पीछे कर बैठा!

गुड़िया- मैं भी पहली दफ़ा कर रही हूं! शादी करनी है या एंगेजमैंट? यह तुम डिसाइड करो, मैंने अपनी ज़रूर पढ़ाई पूरी करनी है!

दोनों हंसने लगे! दीपक मस्त आंखों गुड़िया को देखते और मुस्कराते हुए ज़रा सा उसकी तरफ़ आगे बढ़ा और पीछे हटता हुआ बोला

दीपक- तुम्हें किस करने को जी चाहता है!

गुड़िया- तुमने वादा किया है, शादी से पहले मुझे हाथ नहीं

लगाओगे!

दीपक- इसीलिए तो खुद को रोक रहा हूं! मैं अपना वादा याद रखता हूं!

गुड़िया ने खाने की प्लेट लगाई, दीपक ने कौर बनाया और गुड़िया ने छीन कर अपने मुंह में डाल लिया, और छीना झपटी में दोनों खाना एंजॉय करने लगे!

वीरवार 4.30 बजे ओके अपनी दुकान पर शीशे साफ़ कर रहा था, उसे गुलाटी अंकल आते दिखाई दिया, तो सड़क पर आ कर उसके पांव छुए, गुलाटी अंकल दुकान पर आए, ओके ने उसे पानी पीने को दिया,

गुलाटी- काम कैसा चल रहा है?

ओके- काम कम है अंकल, बढ़ाना चाहता हूं...

गुलाटी- बिज़नैस उसी का फ़्लोरिश होता है, जो बिज़नैसमैन सोशली एक्टिव रहता है! तुम्हारी सोशल एक्टिविटीज़ ही तुम्हारे बिज़नैस को मूवमैंट देती हैं!

ओके- सोशली एक्टिव होने से आपका क्या मतलब है?

गुलाटी- तुम्हें अपने कितने गाहकों के बर्थ-डे विश करते हो?

ओके- मैंने कभी किसी का बर्थ-डे पूछा ही नहीं!

गुलाटी- अपने गाहकों को अपना दोस्त बनाओ, उन्हें फ़ोन करते रहा करो।

ओके- बिना काम के फ़ोन करना भी तो ठीक नहीं!

गुलाटी- तुम्हें कोई फ़ोन करे तो क्या पूछते हो,

ओके- कैसे फ़ोन किया?

गुलाटी- अगर वह कहे कि 'तुम्हारी याद आई तो कर लिया', तो तुम्हें कैसा लगेगा?

ओके- कोई याद करे तो अच्छा लगता है!

गुलाटी- बिना काम के किए फ़ोन से दोस्ती जेनेरेट होती है, तुम किसी को याद करते हो तो उसे अच्छा लगता है, वह तुम्हारे पास आने लगता है। वह तुम से मिलने की

एक्सक्यूज़ तलाश करने लगता है।

ओके- आप ठीक कहते हैं, लेकिन क्या बात करूं? औरतों की तरह मैंने यह किया, मैंने वह किया, कहना मुझे अच्छा नहीं लगता!

गुलाटी- अपने बारे में बातें करने वाला कभी पापुलर नहीं हो सकता! दूसरों के सुख, दुख और हॉबीज़ में इंट्रैस्ट लो, उनके टेस्ट की चीजों में इंट्रैस्ट लो, वह तुम्हें ज़्यादा पसंद करेंगे! सिर्फ़ अपने मतलब की बातें करने वाले को कोई पसंद नहीं करता!

ओके- आप का मतलब है, मुझे उनको अच्छी लगने वाली बातें करनी चाहिए, जैसे आपको क्या खाना अच्छा लगता है? कौन सी फिल्म अच्छी लगी है?

गुलाटी- बिल्कुल ठीक!

ओके- आप मुझे हमेशा गाईड करते हैं, बताईए मुझे क्या करना चाहिए.... ?

गुलाटी- एक नोट बुक बनाओ, अपने हर परिचित और नए पुराने गाहक का बर्थ-डे, वैडिंग-एनवर्सरी, वगैरह की डीटेल उसमे नोट करके रखो, इसे रोज़ देखो, सब को फ़ोन करते रहो! उन्हें अपना दोस्त बनाओ, तुम्हारे दोस्त तुम्हारे लिए काम तलाश करेंगे!

कह कर गुलाटी चला गया!

शुक्रवार 1 बजे दीपक बेकरी पर गया,

- अंकल, नमस्कार!

तनेजा- कैसे हो बेटा?

दीपक- ठीक हूं अंकल! आप कैसे हैं?

तनेजा- ठीक हैं, गुड़िया कैसी है? कई दिन से आई नहीं!

दीपक- पढ़ाई में लगी होगी, आज उससे मिलने जा रहा हूं!

और उसने केक, कोक लिए और लेकर दुकान से निकला, वहां खड़े एक आदमी ने उनकी बातें सुनी और दीपक के पीछे चला, दीपक ने

रुमाल से मुंह ढांप कर मोर की आवाज़ निकाली, गुड़िया ने दरवाज़ा खोला और दीपक आ कर उसे केक, कोक दिए

दीपक- क्या कर रही थी?

गुड़िया- अपने लिए लंच बना रही थी, अब ज़रूरत नहीं रही!

दीपक- बेकरी वाले अंकल तुम्हें याद कर रहे थे!

दोनों किचन में खड़े हो कर केक, कोक एंजॉय करते हुए बातें करने लगे, आधा घंटा गुज़र गया, बाहर कोई ज़ोर ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने लगा, गुड़िया के फ़ादर रमेश की आवाज़ आई

- गुड़िया!

आवाज़ में गुस्सा था, गुड़िया घबरा गई

गुड़िया- पापा आ गए! अब क्या होगा? आती हूं पापा, एक मिनट रुको...

गुड़िया दरवाज़ा खोला रमेश ने पूछा

रमेश- कौन है, तुम्हारे साथ?

गुड़िया- मेरी फ्रैंड का भाई आया है,

रमेश- यहां क्या करने आया है?

गुड़िया- वह मेरा क्लास फ़ैलो है, नोट्स लेने आया है!

रमेश- क्या कर रही हो उसके साथ? हमारी ग़ैर हाज़री में लड़कों को बुला कर गुलछर्रे उड़ाने लगी हो?

गुड़िया- पापा हम साथ बैठ कर पढ़ते हैं!

रमेश ने उसे थप्पड़ मारा

रमेश- पढ़ने के लिए दरवाज़े बंद करके बैठने का क्या मतलब है? मैं उसके टुकड़े कर दूंगा...

कहते हुए वह अपने कमरे में गया और तलवार निकाल लाया, गुड़िया दौड़ कर किचन में दीपक के पास आई और दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया। अंदर से ही बोली

- पापा, हम कोई ग़ल्त काम नहीं करते! आप ने मारना है तो मुझे मार लो, मैंने इसे बुलाया है। इसकी कोई ग़ल्ती नहीं है, इसे जाने दो...

रमेश किचन के सामने आकर बोलने लगा

– कौन है? उसे बाहर निकालो, मैं उसे मार डालूंगा,

गुड़िया– आप अंदर जाओ, मैंने उसे घर बुलाया है, मारना है तो मुझे मार डालो! उसे जाने दो,

रमेश– उसे बाहर निकालो, मैं उसे ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा!

गुड़िया– आपके पास तलवार है, मेरे पास चाकू है, आपने इसे कुछ कहा तो मै अपना गला काट लूंगी!

कहके गुड़िया ने किचन का चाकू उठा के अपने गले पर रखा और दरवाज़े में आकर खड़ी हो गई!

गुड़िया– पापा, मुझे तलवार से काट डालो, उसे कुछ होने से पहले मैं अपनी जान दे दूंगी!

रमेश– क्या कर रही हो, चाकू हटाओ...

गुड़िया– आप यहां से हट जाओ, इसे जाने दो नहीं तो मैं अपने गले पर चाकू मार लूंगी!

रमेश घबरा कर पीछे हट गया,

गुड़िया– आप अपने कमरे में जाओ...

और उसने चाकू चलाने का उपक्रम किया

गुड़िया– (दीपक से) तुम बाहर चलो, अपना मुंह छिपा लो! मेरी ओट में रहना!

दीपक रुमाल से चेहरा ढक के गुड़िया की ओट में घर से बाहर गया, गुड़िया ने उसे बाहर निकाल कर अंदर से दरवाज़ा बंद किया और पीठ लगा के खड़ी हो गई, दीपक दरवाज़े के पास खड़ा होके सुनने लगा...

रमेश– तुमने उसे घर में क्यों बुलाया?

गुड़िया– भइया के दोस्त भी तो आते हैं!

रमेश– वह लड़का है, उसके दोस्त उसके पास आते हैं, वह लड़कियां लेके तो घर में नहीं बैठता!

गुड़िया– उसके दोस्त यहां आके घंटों मुझ से बातें करते हैं, मेरा दोस्त आ गया तो क्या ग़ल्त हो गया?

रमेश– घर में दरवाज़ें बंद करके बैठोगी तो लोग हमारे बारे में गंदी बातें करेंगे।

गुड़िया- हम बाहर सड़क पर बैठेंगे तो लोग ज़्यादा बातें करेंगे, ज़्यादा बदनामी होगी! इसीलिए हम घर में बैठ कर पढ़ते हैं, आप को अपनी बेटी पर विश्वास नहीं तो मैं आपके सामने खड़ी हूं, अपनी तलवार से मेरे टुकड़े कर दीजिए, आप नहीं कर सकते तो मैं अपना गला काट लेती हूं! जिस लड़की पर उसके माता पिता को विश्वास नहीं, उसे मर ही जाना चाहिए!

और वह रो पड़ी!

रमेश- क्या कर रही हो? नहीं बेटा नहीं! चाकू फेंक दो! लग जाएगा!

गुड़िया- पापा! मैं सड़क पर किसी से बात नहीं करती, इसलिए उसे घर बुलाती हूं, मैं मर जाउंगी लेकिन अपनी और अपने परिवार के सम्मान पर आंच नहीं आने दूंगी! हम दोस्त हैं, हमारे सब्जैक्ट कामन हैं, हमें साथ बैठ कर पढ़ना अच्छा लगता है... इसमें क्या ग़ल्त है? आप को मुझ पर विश्वास नहीं है, मुझे ख़राब समझते है, तो मुझे मार डालो,

और उसने चाकू रमेश के सामने फेंक दिया! और बैठ कर रोने लगी! रमेश कमरे के अंदर गया, तलवार रख के आया! और बाहर जाते हुए उसके पास बोला

- दरवाज़े से हटो, अपने कमरे में जाओ, दरवाज़ा बंद कर लो मुझे काम पर जाना है। मैं जा रहा हूं!

दीपक दरवाज़े के पास खड़ा सब कुछ सुनने के बाद वहां से चला और रास्ते में एक कोक लेकर सोचने लगा...

शुकवार 2 बजे दीपक 'ओके स्टूडियो' पर आया, ओके कम्पयूटर पर काम कर रहा था,

दीपक- हैलो!

ओके- हैलो, क्या करते रहे इतने दिन?

दीपक- वही रूटीन है! क्या बात आज ग्रुप मीटिंग नहीं है?

ओके- ग्रुप आज मूवी देखने गया है!

दीपक- अच्छा है, मैं तुमसे अकेले में बात करनी है!

ओके ने उसे अपने काउंटर के पीछे अपने पास पड़ा सीट पर आने का इशारा किया,

ओके- इधर आ जाओ, बताओ क्या पियोगे? या लंच करना है?

दीपक- लंच तो कर आया, कुछ पी लें?

ओके- क्या पियोगे?

कहते हुए उसने मोबाइल उठाया,

दीपक- यार अपनी वाली ब्लैक काफ़ी पिलाओ!

ओके- कमाल है, तुम्हारे आने से पहले मैं भी यही सोच रहा था!

और ओके ने अपनी वाली काफ़ी के दो कप बनाए!

दीपक ने उसे बताया

- मैं गुड़िया से बहुत प्यार करने लगा हूं! आज मैं उससे मिलने गया तो अचानक उसके फ़ादर आ गए

और उसने कल की पूरी घटना बताई!

ओके- दीपक, तुम बहुत लक्की हो जो तुम्हें ऐसी प्यार करने वाली मिली है।

दीपक- मेरा दिमाग़ घूम गया है।

ओके- अब तुम्हें उससे शादी कर लेनी चाहिए! उसके पिता का कोई भरोसा नहीं! कहीं उस बेचारी को किसी ऐरे गैरे के मत्थे मढ़ने का प्रोग्राम न बना बैठें!

दीपक- सच बताओ, क्या यह तुम्हारी सिंसीयर एडवाइस है।

ओके- बाई आल माई हार्ट एंड सोल! एक मिनट भी देर मत करो, करो या मरो, जैसे भी करो अपने पेरैंट्स को मनाओ, यह लड़की छोड़ने वाली चीज़ नहीं है!

दीपक- मैं ने ममी, डैडी, सिस्टर सभी को पूरी सच्चाई बता दी है। सभी इस रिलेशन से खुश हैं! डिसाइड सिर्फ़ यह करना है, शादी कब की जाए?

ओके- यार इसमें सोचने की क्या बात है? कल करे सो आज

कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होत है, फेर करेगा कब?, इस वक्त सर्कमस्टांसिज़ फेवरेबल हैं अगर कोई गड़बड़ हो गई तो क्या करोगे? मौका हाथ से मत जाने दो!

दीपक- यार तुम तो डरा रहे हो! एड्वाइस दो, मैं क्या करूं?

ओके- डरने की ज़रूरत है! अभी, इसी वक्त कल की सारी बात डैडी को बताओ, वह खुद डिसाइड कर लेंगे क्या करना है? अभी फ़ोन करो!

दीपक ने रामसरूप को फ़ोन किया और सारी कहानी बताई। रामसरूप ने समझाया

- अब तुम्हें इस लड़की से शादी कर लेनी चाहिए, लड़की से बात करके अपना फ़ौरन प्रोग्राम मुझे बताओ!

शुक्रवार 3 बजे दीपक की ममी ने दीपक को फ़ोन किया, दीपक उस वक्त ढाबे पर लंच करने आया था

ममी- हम सब का ख़्याल है, तुम्हें गुड़िया से शादी कर लेनी चाहिए, इतना प्यार करने वाली लड़की किस्मत से मिलती है! तुमने वहां चार साल पढ़ना है, बाज़ार का खाना कब तक खाओगे? तुम्हारे पापा कहते हैं, शादी कर लो, घर की रोटी तो मिल जाया करेगी!

दीपक- रोटी की इतनी फ़िकर करने की ज़रूरत नहीं है! ममी...

दीपक की बहन 'दीपी' ने ममी से फ़ोन लिया

दीपी- भइया, कब शादी करोगे?

दीपक- तू तो पागल है! मैं यहां पढ़ने के लिए आया हूं!

दीपी- मेरा भाभी से मिलने का बहुत दिल करता है!

दीपक- कल उससे मिलने जाऊंगा, तुम्हारी बात करवा दूंगा!

दीपी- मैं इतवार को ममी के साथ वहां आ जाती हूं!

दीपक- इतवार को नहीं मिल सकते, उसके पापा घर में होते हैं!

दीपी- चोरी चोरी मिलते हो! कल आ जाऊं?

दीपक- आ जाओ, मिलवा दूंगा!

दीपक खाना खत्म करके घर की तरफ़ चला,------------------

शुक्रवार 7 बजे शाम दीपक के पापा रामसरूप ने ड्रिंक करते हुए दीपक को फ़ोन किया

– दीपे, तुम दोनों ने उस लड़की के साथ बात की? शादी करने के बारे में क्या डिसाइड किया?

दीपक– कल उससे मिलने की कोशिश करूंगा, पापा! वैसे उसने सारी बात मुझ पर छोड़ रखी है... लेकिन वह भी पढ़ना चाहती है!

रामसरूप– फिर तो सिर्फ़ पेरेंट्स से बात करनी रह गई है! क्या तुम उसके फ़ादर से बात कर सकते हो?

दीपक– आज के इंसीडैंट के बाद कैसे बात कर सकूंगा पापा?

रामसरूप– ओफ़्फ़ोह! डैलीकेट सिचुएशन है! हमें फ़ौरन हमें उसके पेरैंट्स से मिल कर बात करनी चाहिए! नहीं तो बात बिगड़ जाएगी! किसी भी वक्त कुछ भी हो सकता है। लड़की से फौरन मिलो, बात पक्की करो!

दीपक– कल उससे मिलने की कोशिश करूंगा..

रामसरूप– लड़कियों की इज़्ज़त शीशे की तरह डेलीकेट होती है, बेटा! ज़रा सी खरोंच एक दफ़ा लग जाए तो ज़िंदगी भर के लिए बुरा निशान बन जाता है! अगर तुम दोनों ने शादी करनी है तो हम मंगनी कर लेते हैं, फिर बात खुलने से उसे परेशानी नहीं होगी! अगर शादी नहीं कर सकते तो उसे मिलना छोड़ दो! तुम उससे प्यार करते हो, अब वह तुम्हारी इज़्ज़त है, इस बात का ख़्याल रखना!

दीपक– मैं आपका बेटा हूं पापा! इस बारे में आप बेफ़िकर रहें!

रामसरूप– एक बात और, उसके फ़ादर उसके साथ एक लड़के को देख चुके हैं, लड़की ने फ़ार दा टाइम बीईंग बोल्ड एक्शन लेकर सिचुएशन संभाल ली है, लेकिन उसके फ़ादर के दिल में डाउट पैदा हो चुका है! वह कुछ भी डिसीजन ले सकते हैं!

दीपक– वह बहुत अच्छी लड़की है, मैं उसे खोना नहीं चाहता!

रामसरूप- बेटा, तुम उस लड़की से प्यार करते हो, अब वह हमारी बहू हो गई है! हमें फ़ौरन एक्शन लेना है!

दीपक- पापा, दीपी कह रही थी कल वह यहां मेरे पास आएगी, गुड़िया से मिलना चाहती है!

रामसरूप- यह तो अच्छी बात है, मिलवा दो, गुड़िया को अपने अगले परिवार को समझने का मौका मिल जाएगा!

शनिवार 11 बजे 2 बजे दीपी और ममी बस से उतरे, दीपक उन्हें अपने कमरे पर ले आया, कमरा देखने के बाद ममी ने कहा

- हम उसे मिल कर बस पकड़ लेंगे, तुम्हारे कमरे में तो सोने की जगह ही नहीं है।

थोड़ी देर लैंडलेडी के साथ बैठने के बाद तीनों गुड़िया के घर गए, दीपक गुड़िया से उन का परिचय करवा के वहां से चला गया, गुड़िया ने खाना बनाया उनके साथ उन्होंने लंच किया, चाय पी, तीनों शाम तक आपस में बातें करती रहीं, 6 बजे दीपक ने दीपी को फ़ोन किया, और उसे बताया कि गुड़िया की उससे बात करना चाहती है

गुड़िया- हैलो, तुम क्यों चले गए?

दीपक- मैं चाहता था, तुम अपने होने वाले परिवार को अच्छी तरह देख समझ लो! कैसी लगी मेरी ममी?

गुड़िया- लगता है तुमने मेरी बहुत तारीफ़ कर रखी है, वह तो एक टक मुझे देखे जा रही हैं! किचन में भी मेरे साथ लगी रहीं!

दीपक- और दीपी?

गुड़िया- वह तो लगातार भाभी भाभी की रट लगाए हुए है!

दीपक- मैं और मेरा परिवार फ़ौरन शादी करने की फ़ेवर में हैं, सोच समझ कर अपना डिसीज़न बताओ! अब हर बात तुम पर आ कर रुकी है, तुम हां करोगी तो पापा आकर तुम्हारे पापा से बात कर लेंगे! अब सब कुछ तुम्हारी हां या ना पर पैन्डिंग है!

गुड़िया- तुम बताओ!

दीपक- अपने दिल की आवाज़ सुनो! मेरी इच्छा है, हमेशा तुम मेरे हाथ से छीन कर खाओ! दीपी से बात करवाओ।

गुड़िया ने दीपी को फ़ोन दिया

दीपक- दीपी, क्या प्रोग्राम है?

दीपी- आ जाओ, हमें ले जाओ, हम वापिस जाएंगे!

दीपक- दस मिनट में पहुंच जाऊंगा!

वह उन्हें लेने गुड़िया के घर गया, गुड़िया के चेहरे ने बता दिया वह कितनी खुश है! रास्ते में ममी ने कहा

- दीपे, तुमने बहुत अच्छी लड़की पसंद की है!

दीपक- आपको अच्छी लगी?

ममी- तुम्हें अच्छी लगी है, मुझे क्यों नहीं अच्छी लगेगी? मेरे बेटे की पसंद मेरी पसंद!

दीपी- स्वीट है! मैंने तो उसे भाभी बना लिया!

और दीपक उन्हें बस पर चढ़ाने गया!

रविवार 10 बजे दीपक अपने कमरे में लेटा कुछ लिख रहा था, ओके ने दीपक को फ़ोन किया-क्या हुआ? कल आए नहीं!

दीपक- ममी और सिस्टर आ गईं थी!

ओके- तुमसे मिलने आईं थीं?

दीपक- नहीं, और काम था!

ओके- चली गईं?

दीपक- कल शाम को ही चली गईं, मेरे कमरे में रुकने की जगह नहीं थी!

ओके- मेरे घर ले आते... मेरे ममी डैडी उनसे मिल कर खुश हो जाते!

दीपक- ध्यान नहीं आया!

ओके- क्या कर रहे हो?

दीपक- लेटा हुआ मैगज़ीन पढ़ रहा था

ओके- मैं सोच रहा था तुम्हारे कमरे पर आ जाऊं..

दीपक- आ जाओ!

ओके उसके कमरे की तरफ़ चला, कुछ दूर एक गली में मुड़ते हुए गुलाटी जी मिल गए, वह भी उसी तरफ़ जा रहे थे!

गुलाटी– कहां घूम रहे हो ओके?

ओके– नमस्कार अंकल! आज दुकान की छुट्टी है, दोस्त के पास जा रहा हूं!

गुलाटी– मैंने तुम्हें कुछ समझाया था, उससे कोई फ़ायदा हुआ?

ओके– मैंने नोट बुक बना ली, फ़ोन भी करने लगा हूं...

गुलाटी– तुम दूसरों में इंट्रैस्ट लोगे, तो दूसरे भी तुम में इंट्रैस्ट लेने लगेंगे! इसे अपनी आदत बना लो, दूसरों के काम में इंट्रैस्ट रखने वाले ही लीडर बनते हैं, अपने कामों में उलझे रहने वाले अपने में ही उलझे रह जाते हैं!

गली के अगले मोड़ से गुलाटी दूसरी तरफ़ चले तो ओके ने उन्हें हाथ जोड़ कर अभिवादन किया और अपने रास्ते चल दिया। दीपक उसे अपने पीजी हाउस के बाहर ही मिल गया, उसने पूछा

– कहां चलने का इरादा है?

ओके– कहीं नहीं, सोशल विज़िट है!

दीपक– कोई नई बात सीखी है?

ओके– हां, मेरे अंकल ने पापुलर होने का फार्मूला बताया है, उसी पर वर्क आउट करने की प्रैक्टिस कर रहा हूं!

दीपक– बताओ क्या फार्मूला बताया है उन्होंने!

ओके ने उसे गुलाटी अंकल की कही बातें उसे बताईं!

दीपक– अंकल ठीक कहते हैं, क्रिकेट का शौकीन के साथ क्रिकेट की बात करो, तो ही दोस्त बनेगा, कैरम बोर्ड का ज़िकर करोगे बात भी करना पसंद नहीं करेगा! मुझे मिलवाओ उनसे!

ओके– चलो, अभी चलते हैं, उनके रैस्टोरैंट में चलते हैं, काफ़ी पीते हैं। तब वह भी रैस्टोरैंट पहुच जाएंगे!

और दोनों चल पड़े! काफ़ी पीते हुए...

ओके– अब तुम बताओ, तुम्हारी लाइफ़ कैसी चल रही है? उसके बाद गुड़िया के साथ मुलाकात हुई? या किस्सा

खत्म हो गया?

दीपक– मैं उससे शादी करने की सोच रहा हूं!

ओके– रियली? पढ़ाई छोड़ रहे हो?

दीपक– नहीं! दोनों मिलके पढ़ेंगे!

ओके– हाऊ रोमैंटिक? प्यार और पढ़ाई साथ साथ!

दीपक– है ना! मैने अपने पेरैंट्स से बात कर ली है, वह भी सहमत हैं।

ओके– कल सिस्टर और मदर इसी सिलसिले में यहां आईं थीं?

दीपक– हां, वह गुड़िया से मिलने आईं थीं!

ओके– कैसी लगी उन्हें गुड़िया?

दीपक– गुड़िया अच्छी लड़की है, उन्हें भी अच्छी लगी है!

ओके– वह लड़की कभी किसी को आंख उठा कर नहीं देखती थी, टफ़ चैलेंज था, इसीलिए हम ने चैलेंज में तुम्हें गुड़िया इसीलिए प्रापोज़ की थी!

दीपक– देख लो बात कहां से कहां तक पहुंच गई! उसने पहली बार किसी को आंख उठा के देखा और उसी के साथ फंस गई!

ओके– फंस गई या फंसा लिया!

दीपक– उससे मिलने के बाद शिखा के साथ हुआ इंसीडैंट एक क्राइम की तरह याद आता है।

ओके– वह न हुआ होता, तो गुड़िया से मिलने का बहाना ही न बनता!

तभी दीपक का फ़ोन बजा, उसने कान से लगाया

– आप आ गए? जी... जी... मैं आ रहा हूं!

फ़ोन बंद किया!

दीपक– मेरे ममी डैडी उसके पापा से मिलने आ रहे हैं। वह पहुंचने ही वाले हैं, बस स्टैंड पर उन्हें लेने जाना है!

ओके– मैं भी साथ चलता हूं! चलो!

दोनों ने बस स्टैंड पर दीपक के ममी डैडी, और सिस्टर का रिसीव करने पहुंचे, ओके ने अपने मोबाइल से उनकी कई स्नैप लिए! दीपक ने

अपने पेरैंट्स से ओके का परिचय करवाया

– मेरे डैडी, ममी, ओर यह मेरी सिस्टर दीपी, और यह है मेरा बैस्ट दोस्त, ओके, फ़ोटोग्राफ़र ओके, इसकी दुकान का नाम भी अपने नाम से रखा है, 'ओके स्टूडियो'!

ओके ने ममी डैडी के पांव छुए

दीपी– भइया की फ़ोटो तुम ने बनाई है।

ओके– हां!

दीपी ने उससे हाथ मिलाया,

दीपी– भइया कह रहे थे, तुम बहुत अच्छे फ़ोटोग्राफ़र हो, मेरी भी एक अच्छी सी फ़ोटो बना दो!

ओके– ज़रूर बनाउंगा,

डैडी दीपक को एक तरफ़ ले गए,

– सीधे गुड़िया के फ़ादर से मिलने चलें या पहले आपस में बात करना चाहते हो?

दीपक– आप जैसे ठीक समझें!

रामसरूप– मेरा ख़्याल है, दस मिनट आपस में कहीं बैठ कर बात करलें तो सब का मांईड सैट हो जाएगा।

दीपक– कहां बैठेंगे? ओके से पूछ लूं?

रामसरूप– पूछ लो!

दीपक ने ओके से पूछा

– पापा उनके घर जाने से पहले आपस में कुछ बात करना चाहते हैं, कहां बैठना चाहिए?

ओके रामसरूप के पास आया

– अंकल इधर उधर बैठने की बजाय आप मेरे घर चलें, चाहें तो मेरे ममी पापा से भी सलाह कर सकते है।

सभी ओके के घर गए, वहां सब ने चाय पी आपस में सलाह की, सर्व सम्मति से डिसाइड हुआ कि सभी इकट्ठे गुड़िया के घर जाकर बात करें और सभी मिल कर गुड़िया के घर गए, रमेश ने दरवाज़ा खोला, रामसरूप ने हाथ जोड़ कर उससे पूछा

– आप रमेश जी? नमस्कार, मैं फगवाड़ा से आप से मिलने

आया हूं!

रमेश– कहिए, मैं क्या सेवा कर सकता हूं?

रामसरूप ने अपने साथ आए सब का परिचय दिया

– मेरी पत्नी सीता, मेरा बेटा दीपक, मेरी बेटी दीपिका, मेरे दोस्त श्री बी.एल.अरोरा, आप के शहर में इनकी फ़ोटोग्राफ़ी की दो दुकाने हैं, एक को खुद और दूसरी को इनका बेटा ओके चलाता है, और यह इनकी धर्मपत्नी हैं

रमेश– आईए, अंदर आईए! बैठिए... यह मेरा बेटा है, सुरेश.. (बेटे से) बेटा पानी ले आओ...

गुड़िया ने सब के साथ दीपक को देख लिया!

रामसरूप– रमेश जी, मैं ने बाकी सब का परिचय तो दे दिया, अपने बारे में भी बता देता हूं, मेरा नाम रामसरूप है, मिनिस्ट्री ऑफ़ एग्रीकल्चर में सैकंड ग्रेड अफसर हूं, फ़ैमिली बिज़नैस फ़ारमिंग है, घर अपनी प्रापर्टी है, कुछ ज़मीन भी बनाई है, पुश्तैनी ज़मींदारी भी है। मुझे नौकरी में इंट्रैस्ट था सो नौकरी कर ली! दो बच्चे हैं, दीपिका और दीपक! दीपिका ने अभी स्कूल क्लीयर नहीं किया, दीपक आपके शहर में पीजी है, पढ़ने के आया हुआ है,

सुरेश पानी की ट्रे लेकर आया!

रमेश– आप को मुझ से क्या काम है?

रामसरूप– हम अपने बेटे दीपक के लिए आपसे आपकी बेटी मांगने आए हैं!

रमेश– लेकिन बेटी तो अभी पढ़ रही है!

रामसरूप– हमारा बेटा भी पढ़ रहा है, दोनों एक ही क्लास में हैं, हमारी इच्छा है दोनों मिलकर पढ़ें, दोनों जितना पढ़ना चाहें जब तक पढ़ना चाहें, हम पढ़ाएंगे, आपकी बेटी को पूरी एजुकेशन देने की जिम्मेवारी हम लेना चाहते हैं।

रमेश– शादी के बाद लड़कियों की पढ़ाई छूट जाती है!

रामसरूप– हम नहीं छूटने देंगे! हमें फ़ुल्ली एजुकेटिड बहू बेटा चाहिए, हम दोनों को हर कीमत पर जितना पढ़ना चाहें,

लास्ट एक्सटैंट तक पढ़ाएंगे!

रमेश- मुझे अपनी बेटी से पूछना पड़ेगा!

रामसरूप- आप उसे बुलाएं, सब के सामने पूछ लीजिए! हमें भी कन्फ़र्म हो जाएगा!

रमेश- आपको हमारे बारे में किस ने बताया?

रामसरूप- दोनों बच्चे एक दूसरे को जानते हैं, और दोनों साथ पढ़ना चाहते हैं!

रमेश- तो आप सब कुछ जानते हैं?

रामसरूप- हम अपने बच्चों को दोस्तों की तरह रखते हैं, वह हम से कुछ नहीं छिपाते! हम भी अपने मन की बात उनसे अपने दोस्तों की तरह शेयर करते हैं!

रमेश खामोश हो कर सोचने लगा! फिर अपने बेटे से बोला

\- बेटा, चाय बनवा लो...

रामसरूप- हम अभी चाय पी कर ही आए हैं, आप बच्चों को तकलीफ़ न दें! हां, अगर आप इजाज़त दें तो मैं गुड़िया से मिलना चाहता हूं!

रमेश ने कुछ सोच कर बेटे से कहा

\- गुड़िया से कहो, उसे कोई देखने आया है!

सुरेश गुड़िया को लेके आया, रामसरूप ने उसे स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा

\- गुड़िया! दीपी ठीक ही कह रही थी, आप सचमुच की गुड़िया हो! मेरा वोट भी आपकी फ़ेवर में है! आप हमारी आल फ़ैमिली फेवरिट पर्सन हो।

रमेश हैरान हो कर दीपी को देखने लगा, दीपी उठ कर गुड़िया के पास गई उसे हग करते हुए कहने लगी

\- मैं ने कहा था ना!

रामसरूप- रमेश जी, दीपी और इसकी ममी दोनों गुड़िया से मिल चुकी हैं,

रमेश- मुझे किसी ने नहीं बताया!

रामसरूप- आपकी बेटी के सस्कार बहुत अच्छे हैं, अपनी मर्यादा

रेखा का ध्यान रखना जानती है, लड़कियां अपनी शादी की बात अपने मुंह से नहीं बोलतीं!

रमेश– मुझे यह तो बता देती, कि आप ने आना है!

रामसरूप– इसे भी किसी ने कुछ नहीं बताया! हमने तो दीपक को भी नहीं बताया! हम इमीजिएटली आना चाहते थे, बिना बताए आ गए!

रमेश– इतनी जल्दी क्या है?

रामसरूप– भाई साहब, हम सब इमीजिएटली गुड़िया को अपने परिवार का मेम्बर बनाना चाहते हैं! दोनों स्टूडेंट एक दूसरे को प्यार करते हैं, दोनों एक हो जाएं और दोनों मिल के हंसते खेलते अपनी पढ़ाई एंजॉय करें! गुड़िया बिटिया, इधर आओ, (गुड़िया उसके पास आई) मैं आपसे प्रामिस करता हूं, आप जहां तक, जब तक पढ़ना चाहें मैं आपको पूरा पढ़ाने की रिस्पांसबिलिटी लेता हूं! क्या आप मेरी दूसरी बेटी बनना चाहेंगी?

गुड़िया ने हां में सिर हिलाया! रामसरूप ने उसके सर पर हाथ फेरा! गुड़िया ने उसके पांव छुए!

रामसरूप– (रमेश से) अब सिर्फ़ आपकी कान्सैंट चाहिए!

रमेश– आप ने तो मुझे हैरान कर दिया है! मेरी एक ही बेटी है, मुझे बहुत लाडली है, सच बताउं तो हां करते हुए भी डर लगता है! मैंने कभी इसे डांटा तक नहीं, उस दिन आपा खो कर मार बैठा तब से अब तक छाती में दर्द हो रहा है!

रामसरूप– आपके पास भी एक लड़का एक लड़की है, और हमारे पास भी! हमें भी बेटी ज़्यादा लाडली है! मुझे लगता है जब मैं इस सिचुएशन में पड़ूंगा तो मुझे भी डर लगेगा! आप ने मेरा परिवार देख लिया, हमारे घर आईए पूरे फगवाड़े में पूछ ताछ करने के बाद फ़ैसला कर लीजिएगा! हम ने तो बेटी को देखना था, देख लिया और अपनी बेटी बना लिया है, आप जैसे अपनी तसल्ली

करना चाहें कर लीजिए!

रमेश कुछ देर सर झुकाए सोचता रहा फिर उठा और गुड़िया को अपने साथ बाहर ले गया,

– तुम्हें मंज़ूर है?

गुड़िया ने खामोशी से हां में सर हिला के झुका लिया

रमेश– यही लड़का था?

गुड़िया ने फिर हां का इशारा किया!

रमेश– मुझे बताया क्यों नहीं?

गुड़िया खामोश सर झुकाए खड़ी रही, रमेश अंदर आया, रामसरूप ने उसे बताया– बिटिया ने अपनी मां को अपनी सहमति पहले ही दे दी थी! आपको भी हां कर दी होगी?

रमेश ने हां में सर हिलाया!

रामसरूप– मेरे बेटे ने शुक्रवार की सारी घटना हमें बता दी थी, हम नहीं चाहते, आप अपनी बेटी के बारे में आप कोई ग़लत ख़्याल दिल में लाएं, हमारी बेटियां अपनी मर्यादा से बाहर नहीं जा सकतीं! उसकी मां का नाम सीता है!

रमेश– आप कैसे जानते हैं?

रामसरूप– मैं अपनी पत्नी की बात कर रहा हूं!

रमेश– गुड़िया की मां का नाम भी सीता था,

रामसरूप– अब तो किसी शक की गुंजाइश नहीं! आप भी मान जाओ!

रमेश– मेरे पास भी कोई विकल्प नहीं है।

रामसरूप– दीपक इधर आओ! (दीपक उसके पास गया, रामसरूप ने अपनी जेब से अंगूठी निकाल कर उसे दी) देवी सीता, दूसरी अंगूठी निकालो! गुड़िया, अंदर आओ...

गुड़िया अंदर आई, सीता ने उसे अंगूठी पकड़ाई, गुड़िया हैरान हो गई,

दीपक– डैडी आप अंगूठियां भी ले आए?

रामसरूप– हिस्ट्री रिपीट्स इटसैल्फ़! मेरे डैडी ने भी यही किया था, क्यों सीता! याद है?

सीता– मैं भी हैरान हो गई थी, अभी तक हैरान हूं!

रामसरूप ने दीपक से कहा

– दीपे, मेरा अरमान था, तुम्हारी ममी को इंग्लिश स्टाइल में प्रोपोज़ करता, माता पिता के सामने करने की हिम्मत नहीं हुई, आज तक तुम्हारी ममी को प्रोपोज़ नहीं कर सका, मेरा अरमान तुम ही पूरा कर दो,

दीपक ने गुड़िया के सामने बैठ कर पूछा

– विल यू मैरी मी?

गुड़िया शर्म से लाल हो गई, दोनों हाथों से मुंह ढ़ांप लिया और हां में सिर हिला दिया!

रामसरूप ने सीता का हाथ पकड़ कर उठाया और उसके साथ नाचने लगा!

अगूंठियां पहनाई गईं, ओके ने अपने मोबाईल से स्नैप लिए! दीपी ने कई पोज़ बनाए, दीपक ने धीमी आवाज़ में गुड़िया से पूछा

– तुम खुश हो?

गुड़िया– तुम्हारे पापा बहुत क्यूट हैं!

दीपक– पापा का बेटा नहीं?

गुड़िया– है, पापा ज़्यादा क्यूट हैं!

दीपक– तुम्हें किस करने को दिल का रहा है!

गुड़िया– अब तो कर सकते हो, अंगूठी पहना के कर लेते!

दीपक– अभी हम इतने अंग्रेज़ नहीं बने, वह लोग भी पति पत्नी बनने के बाद किस करते हैं!

रामसरूप ने रमेश से कहा

– मेरा तो 25 साल पुराना अरमान पूरा हुआ है, हम तो सैलीबिरेट करेंगे! मेरा ख़्याल है सब मिल कर किसी अच्छे रैस्टोरैंट में लंच करें!

रमेश ने हाथ जोड़ कर कहा

– बाहर क्यों? आप हमें सेवा का मौका दें... हम घर में बना लेते हैं!

रामसरूप– वह बाद में करेंगे! आज मैं सैलिबिरेट करना चाहता हूं, पार्टी देना चाहता हूं! आज मैं ट्रीट दे रहा हूं, आप सब

इनवाइटिड हैं, इसके बाद अगली ट्रीट मेरी गर्ल फ्रैंड देगी, क्यों सीता देवी, ठीक है? उसके बाद दीपी की टर्न है! उसके बाद आपकी!

सीता– मैं तो अपने हाथ से हर चीज़ बना के खिलाउंगी, होटल की ट्रीट देना तो काम चोरी है! मैं नहीं दूंगी!

दीपी– मैं तो सब को मैक्डोनल्ड में ट्रीट दूंगी!

रामसरूप– ओके, यहां का सब से बढ़िया रैस्टोरैंट कौन सा है? सब वहां चलने के लिए जल्दी से तैयार हो जाओ!

रैस्टोरैंट में पांच जोड़ियां बनी, दीपक और गुड़िया, रामसरूप और सीता, बीएल और पुष्पा, ओके और दीपी, इकट्ठे बैठे, रमेश अपने बेटे सुरेश के साथ बैठे !

–**बस**–